मासिक

जय हाटकेश वाणी

jaihaatkeshvani.com

मार्च 2015 | वर्ष : 9 अंक : 10

श्रद्धेय दादा को समर्पित

भगवान श्री गणेशजी के अनन्य भक्त,
स्वप्न दृष्टा, इतिहास पुरुष एवं मृदुभाषी
पूज्य पं.भालचन्द्रजी भट्ट (बड़े दादा)
की स्मृति स्वरुप यह विशेषांक सादर समर्पित

मूल्य ₹ 10

यथा नाम तथा गुण-विशाल शर्मा

रुपाखेड़ी (देवास) से संबद्ध परिवार के श्री विशाल शर्मा न केवल नाम से बल्कि अपने गुण से भी 'विशाल' है तथा स्वपरिश्रम से अल्प आयु में उन्होंने जो उपलब्धि प्राप्त की है, वह भी 'विशाल' है।

अभी-अभी 'एलेन कॅरियर इंस्टीट्यूट' में इंदौर हेड का कार्यभार संभालने के पश्चात उनकी इस महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति से उनकी चर्चा प्रासंगिक हो गई है, उनकी उपलब्धियों से अन्य युवा भी प्रेरणा ले सके इसी उम्मीद से उनका जिक्र यहां किया जा रहा है।

देवास के निकट एक छोटे-से गांव रुपाखेड़ी के पटेल श्री मांगीलालजी शर्मा के प्रपौत्र एवं श्री सुरेन्द्र-सौ.शीला शर्मा के सुपुत्र श्री विशाल शर्मा अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद आज से 15 वर्ष पूर्व कोटा (राजस्थान) चले गए थे, वहीं एलेन कॅरियर इंस्टीट्यूट में उन्होंने अपने कॅरियर की शुरुआत की। यह कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि श्री विशाल और इंस्टीट्यूट की प्रगति का सिलसिला साथ ही चला, बल्कि इंस्टीट्यूट के संचालक, श्री विशाल की कड़ी मेहनत एवं पक्के इरादे के शुरु से कायल रहे।

सफलता के लिए परिश्रम के अलावा कोई शार्टकट नहीं होता। यही बात विशाल को लगातार विशाल बनाती गई। खास बात यह है कि उनकी पदोन्नति, समृद्धि व यश बढ़ता रहा, लेकिन उन पर अहम कभी हावी नहीं हुआ, माता-पिता व परिजनों का पूर्ण सम्मान कर उन्होंने आंतरिक विशालता को भी संजोए रखा। वर्तमान में उनके नए पद के पश्चात जिम्मेदारी एवं व्यस्तता में वृद्धि हुई, किन्तु उनकी अतिरिक्त खुशी के दो कारण है, 15 वर्षों के बाद घर वापसी और महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति की खुशी। स्वाभाविक भी है कि पूरा परिवार, सारे रिश्तेदार देवास, खजराना, इन्दौर, उज्जैन में निवास करते है, इनका विवाह खजराना के श्री भरतजी-सौ.निर्मला रावल की सुपुत्री सौ. पूजा के साथ हुआ है, तथा सफल अर्द्धांगिनी के रुप में विशाल की उपलब्धि में वह सदैव सहयोगी रही है।

कुछ लोगों में एक स्वाभाविक गुण होता है, अपने समाज के लिए कुछ करने का, यह गुण श्री विशाल में भी है तथा वे एलेन कॅरियर इंस्टीट्यूट के प्रमुख के नाते नागर समाज के बच्चों को भी लाभान्वित करना चाहते है। विशाल शर्मा की विशाल उपलब्धियों पर संपूर्ण नागर समाज गौरवान्वित है। उन्हें लख-लख बधाईयाँ।

श्री विशाल शर्मा को बधाई हेतु 09351261431 पर सम्पर्क कर सकते है।

-दीपक शर्मा,
मो. 94250 63129

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं श्री रवीन्द्र नागर, नईदिल्ली
पं श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुंबई
पं श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं श्री कान्ताप्रसाद नागर, दास्ताखेड़ी
पं श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं श्री दिनेश शर्मा, इटावा (तराना)
पं श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अभिताभ मंडलोई
सौ. दमिता नवीत झा

-विज्ञापन-
पवन शर्मा
9826095995/92004-20000

-वितरण एवं शिकायत
दीपक शर्मा
94250-63129

सम्पादक वाणी...

नारी : समानता और सम्मान

जिस घर में नारी को समानता और सम्मान दिया जाता है, उस घर में लक्ष्मी का वास होता है। समय एवं युग की परिवर्तनशीलता का परिणाम यह है कि न केवल घर बल्कि बाहर भी नारी की सक्रियता एवं उपस्थिति अनिवार्य होती जा रही है। वह युग खत्म हो गया जब नारी केवल घर परिवार की ही जिम्मेदारी संभालती थी। प्रथम गुरू के नाते उस पर सन्तान को संस्कारवान बनाने की जिम्मेदारी भी रहती थी, लेकिन आज भौतिक युग में संयुक्त परिवार के एकल परिवारों में तब्दील होते दौर में नारी को घर के साथ-साथ बाहर की जिम्मेदारी भी सम्भालना पड़ रही है। वह परिवार संचालन में पूर्ण जिम्मेदारियों के अलावा आर्थिक एवं सामाजिक मोर्चे पर भी सक्रिय है। वह पति की तरह ही पैसा कमाने हेतु स्वरोजगार या नौकरी करने हेतु मजबूर है, तथा पारिवारिक, सामाजिक आयोजनों में उसे स्वउपस्थिति दर्ज कराना पड़ती है। यदि यह कहा जाए कि आज की नारी पर दोहरी जिम्मेदारी है, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इन सब परिस्थितियों के बावजूद नारी के बारे में सोच में कोई अन्तर नहीं आया। उसे विशेष सुविधाएं, समानता एवं सम्मान मिलने के बदले दकियानुसी और प्राचीन सोच हावी है। खासकर घर से बाहर नारी की असुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। सरकारों एवं संगठनों को इस सम्बन्ध में कुछ करना ही चाहिए। केवल कानून बना देने या दिखावे की सख्ती से कुछ नहीं होने वाला। महिलाओं की दोहरी जिम्मेदारी के तहत देश में ऐसा माहौल तैयार किया जाए कि महिलाओं को समानता सुरक्षा एवं सम्मान मिल सके। उनके विरुद्ध किसी भी अपराध का कड़ा दंड दिया जाना चाहिए ताकि भविष्य में कोई ऐसा करने की हिम्मत न कर सके। यह आज की जरूरत है...

– संगीता दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क : अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002
Website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

समाज के प्रति सक्रियता... सजगता बढ़ाएं

आप सभी समाजजनों से आग्रह है कि समाज के प्रति अपनी सक्रियता एवं सजगता में वृद्धि करें। आज विभिन्न समाज अपनी प्रगति एवं उन्नति पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। उसी प्रकार प्रत्येक समाजजन-समाजसेवी के रूप में अपना योगदान देकर नागर समाज को भी प्रगतिशील बनाएं। यह सभी समाजजनों का दायित्व है कि समाज में हो रही श्रेष्ठ गतिविधियों की चर्चा एवं प्रचार अपने रिश्तेदारों, परिचितों एवं अन्य समाजों के सदस्यों से करें। समाज में होने वाले कार्यक्रमों के बारे में यथासंभव प्रचार करें। आयोजनों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। तमाम प्रयासों के बावजूद आयोजनों में त्रुटि रह जाना स्वाभाविक है, अतः उनमें कमी ढूंढने के बजाय अच्छी बातों को प्रचारित करें। आयोजकों को प्रोत्साहित करें ताकि वे लगातार आयोजन करने हेतु प्रेरित हो सकें। सभी पदाधिकारी, कार्यकर्ता अपनी योग्यतानुसार कार्य करते हैं अतः उन्हें हमेशा बढ़ावा दें तथा कभी भी हतोत्साहित न करें। समाज की पत्रिकाओं का प्रकाशन भी आसान नहीं है। उनमें अपना सहयोग दें,

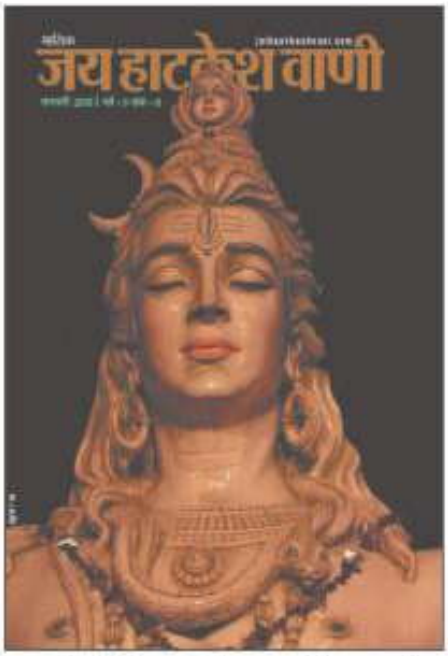

रचनाएं एवं विचार भेजें तथा आर्थिक सहयोग भी प्रदान करें। समाज को उन्नत बनाने के लिए पहले हमें अपने सोच को सकारात्मक बनाना पड़ेगा। हर प्रयास में अच्छाई को ढूंढकर हम स्वयं तो प्रज्ञावान होंगे ही समाज को उन्नत बनाने में भी सहयोगी बनेंगे।

- सम्पादक

सदस्यता/नवीनीकरण आवेदन पत्र

मै _____

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) _____

_____

मासिक जय हाटकेश वाणी का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा गोराकुण्ड, एम.जी. रोड, इन्दौर में खाता क्रमांक-0325201004027 में जमा किया है।

_____

संपर्क-**जय हाटकेश वाणी**, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर-452002

फोन-0731-2450018/मो.99262 85002/99265 63129

www.haatkeshvani.com/ Email : jayhotkeshvani@gmail.com/manibhaisharma@gmail.com

स्वप्न दृष्टा - इतिहास पुरुष

परम पूज्य स्व. भालचन्द्र जी भट्ट (बड़े दादा)

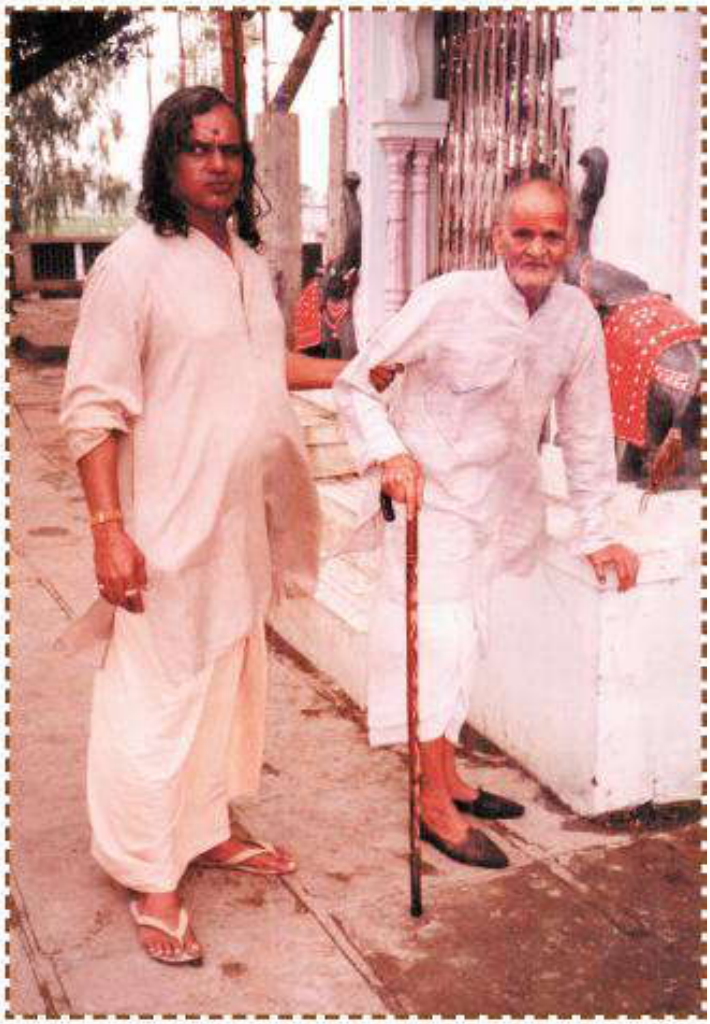

कुछ लोग थे जो वक्त के सांचे में ढल गए।
कुछ लोग थे जो वक्त के सांचे बदल गए।

ऐसे श्रद्धेय गो लोकवासी मेरे दादा जिन्होंने समयानुसार स्वयं को नहीं बदला, कभी नहीं बदला। बल्कि समय को ही उनके अनुकूल होना पड़ा।

4 सितम्बर 1924, तीन सहोदर भाइयों का संयुक्त परिवार, 1 श्री कन्हैयालाल जी भट्ट 2 श्री दामोदर जी भट्ट एवं श्री सदाशिव जी भट्ट। मां ग्यारसी देवी एवं पिता सदाशिव जी भट्ट के यहां पुत्र रूप में जन्म लिया। श्रद्धेय दादाजी बाल्यावस्था से ही मेधावी और विद्यानुरागी थे। साहस और आत्मविश्वास की पराकाष्ठा बचपन में ही परिलक्षित होने लगी थी।

ताऊजी (मेरे पिता श्री दामोदर जी भट्ट के विशेष स्नेह भाजन दादा केवल तीसरी कथा तक ही पढ़े। एकबार गुरुजी ने गणित (पहाड़ा) नहीं आने पर छड़ी से पिटाई लगाई, तो ताऊजी गुस्सा होकर गुरुजी से बोले, क्यों रे फूलचन्द। छोरे को क्यों मारा पहाड़े नहीं आए तो मत पढ़ा, और कुछ पढ़ा। बस दादा को शह मिली और पढ़ाई बंद।

पन्द्रह वर्ष की अवस्था में बड़े ताऊजी श्री कन्हैयालाल जी भट्ट ने इन्हें गोद ले लिया और दादाजी भालचन्द्र सदाशिव से, भालचन्द्र कन्हैयालाल के नाम से पहचाने जाने लगे। तीसरी कथा तक पढ़े दादा। उन दिनों आकाशवाणी इन्दौर, मालवा हाऊस के नाम से जाना जाता था, मालवी के स्थापित कलाकार, भैराजी (सीताराम वर्मा) नन्दाजी (कृष्णकान्त) दुबे, आदरणीय दादा भालचन्द्र जी, मालवी लोक संगीत, और साहित्य के आधार स्तंभ थे।

ऐसी विलक्षण बुद्धि। कैसी मां वीणावादिनी की कृपा। तत्कालीन, प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू और राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के सामने स्वरचित कविता का पाठ किया और उन राष्ट्र निर्माताओं से प्रशस्ति पाई।

इसी काल खण्ड से ही दादाजी, संगीत, साहित्य, लालित्य, ज्योतिष-कर्मकाण्ड के साथ-साथ मल्लविद्या आदि अनेक विधाओं की ओर आकर्षित हुए और उनमें पारंगत होकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी हुए।

1960 के दशक में जब आपकी मौन व्रत साधना 14 चौदह वर्ष तक सतत जारी रही, उस समयावधि में दादाजी रुपए पैसों को छूते भी नहीं थे।

मां सरस्वती के साधक दादाजी को धन की लालसा कभी नहीं रही। प्रसंगवश कभी क्रोधित होते, तो लगता स्वयं दुर्वासा ऋषि से साक्षात्कार हो रहा है।

धन दौलत, रुपया पैसा इकट्ठा कर अपनी जागीर बनाना दादा के दर्शन में नहीं था। उनके विचार में जीवन ही जागीर है, विद्यमान था। कहते थे।

कोई दादा से आशीर्वाद मांगता तो कहते- अपने कर्तव्य का पालन

सांई मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा हेतु कलेक्टर श्री आकाश त्रिपाठी, प्रशासक श्री मनीष सिंह एवं मुख्य पुजारी पं. श्री भालचन्द्र जी भट्ट पूजन करते हुए।

इस संसार में परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य को जीवन रूपी जागीर दे रखी है। जो जीवनकाल में इस जागीर को अच्छी तरह सम्भालना सीख लेता है, उसे फिर किसी वस्तु का अभाव नहीं रह जाता है।

करो, कर्तव्य पालन स्वयमेव आशीर्वाद है। सुखी होंगे या दुखी यह मत सोचो।

'वज्रादपि कठोराणी कुसुमादपि कोमलानि।।'

उनका चित्त धर्म के प्रति, न्याय के प्रति, सुहृदवर्ग के प्रति असहाय, अरक्षित के प्रति, पीड़ित के प्रति कुसुमवत कोमल था। किन्तु इसके विपरीत अधर्म अन्याय के प्रति वज्र से भी कठोर, क्रूर और निर्मम होता था। इसी समयावधि में एक सौ आठ दिन केवल नीम्बू पानी पीकर निकाले, तब तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने स्वयं अपने हाथों मौसम्बी का जूस पिलाकर-निराहार व्रत का पारायण करवाया था।

चालीस वर्ष की आयु होते, दादाश्री ने अन्न का त्याग कर दिया। जो जीवन पर्यन्त चला, सौग्राम मूंगफली के दाने और उबली हरी सब्जी पर आधी शताब्दी निकाल दी।

दृढ़ संकल्प, अनिर्वचनीय इच्छाशक्ति:-
निष्काम कर्मयोगी :-

तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु।

ई.सन. 1765 में प्रात: स्मरणीया मातु श्री अहिल्यादेवी होल्कर के करकमलों द्वारा श्री सिद्धिविनायक गणेश मन्दिर खजराना का जीर्णोद्धार हुआ था। बड़े-बड़े विशाल काले पत्थरों से मन्दिर निर्माण हुआ था। कालान्तर में ईस. 1992 आते-आते मन्दिर जीर्णावस्था को प्राप्त हुआ। गणेशजी की प्रतिमा असुरक्षित हो गई। आय के साधन थे नहीं, श्रद्धालु, दर्शनार्थी भी यदा कदा आते थे। कैसे मन्दिर का जीर्णोद्धार हो?

ऐसे संक्रमण काल में दादा ने संकल्प लिया। आज मैं जागृत अवस्था में जो स्वप्न देख रहा हूं, जो कल्पनाऐं मेरे मन-मस्तिष्क में घुमड़ रही है, येन-केन-प्रकारेण उन्हें यथार्थ में परिणित करने का अथक प्रयास करूंगा, एक दिन ऐसा आएगा कि श्री गणेश मन्दिर खजराना प्रदेश, देश की सीमा लांघकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्यात होगा, और यहां आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु भक्त की मनोकामना पूरी होगी। यहां से आरम्भ हुई शुभ-संकल्प को साकार करने की महायात्रा।

निष्काम कर्मयोगी बनकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु निरन्तर आगे बढ़ते रहे, उनके पदचिन्हों का पीछा मैं करता रहा,

स्व. श्रीमती गुलाब बेन के यहां पुत्र प्रदीप का जन्म हुआ। भगवान श्री सत्यनारायण की कथा का आयोजन, कथाकार श्रीदादा, दोहा चौपाई और भजन गायक मैं, मोहन भट्ट। उस समय मेरी अवस्था 13-14 वर्ष की रही होगी।

कभी अपनी महत्ता का प्रतिपादन मत करो। कभी बड़े मत बनो, सदैव छोटे ही बने रहो। तुम स्वयं अपने आप महत्वपूर्ण बन जाओगे। उन्होंने स्वयं भी इसे अंगीकार किया, कभी सामने नहीं आए, हमेशा पर्दे के पीछे रहकर अपने कर्म को करते रहे।

उस पहली कथा में हमें चढ़ावे के रूप में साढ़े चार सौ रुपए प्राप्त हुए। उस धनराशि से प्रारम्भ हुआ, संकल्प की पूर्णता हेतु प्रथम प्रयास। माघबदी चतुर्थी वार्षिक मेला। पेम्पलेट छपवायें, शीर्षक था। चलो चलें खजराना चलें। इसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। जो आदेश दादा देते उसे प्राणपण से पूर्ण करने में लग जाता दादाजी की सदैव सीख रही। उनका मानना था-

'प्रभुता से लघुता भली, लघुता ते सब होय।
जस दृतिया को चन्द्रमा सीस नवे सब कोय।।
लघुता ते प्रभुता मिलै, प्रभुता ते प्रभु दूरि।
चींटी ले सक्कर चली, हाथी के सिर धूरि।।'

प्रथम अनुष्ठान श्री गणपत्यथर्वशीर्ष के सवा करोड़ अखण्ड पाठ के संकल्प से शुरू हुआ विगत पच्चीस वर्षों से चौबीस घंटे अविरामगति से अथर्वशीर्ष के पाठ की अखण्ड, अजस्व धारा प्रवाहित हो रही है।

कहते थे, कभी गुरू मत बनो, सदैव शिष्य बने रहो। नानक नीचा ही रहो, जैसे नन्हीं दूब। बड़ी धाँस जरि जायगी, हरी रहेगी दूब।। इसी सीख, अपनी संकल्प और इच्छाशक्ति के बल पर दादाजी ने ऐसे महत्तर कार्य कर दिये, जो सर्वथा असम्भव प्रतीत होते थे। यथा- दो बार महारुद्र यज्ञ, एक बार श्री गणेश महायज्ञ मन्दिर परिसर में सम्पन्न हुए। 1976 में माँ रिद्धि-सिद्धि की नवीन प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हुई। प्रतिष्ठा से पूर्व राजबाड़ा से शोभायात्रा आरम्भ हुई। इन्दौर शहर में प्रथम शोभायात्रा दैवीय प्रतिमाओं की शोभायात्रा का अग्रभाग, हायकोर्ट के पास था, तो अन्तिम भाग राजबाड़ा पर। शहर में शोभायात्रा की परम्परा का शुभारम्भ श्री गणेश मन्दिर खजराना से श्री दादाजी के हाथों हुआ। इसी के साथ सवालाख बूंदी के लड्डूओं का महाभोग श्री गणेशजी को अर्पित किया गया।

इसके पश्चात अनुष्ठानों, महोत्सवों का जो दौर आरम्भ हुआ,तो उनके देवलोकगमन तक सतत् जारी है।

दादाश्री के द्वारा संकल्पित ग्यारह लाख मोदकों का भोग श्री गणेशजी को अर्पित किया। इसके पश्चात संकल्प हुआ गणेशजी को सहस्त्रभोग समर्पित करने का। पांच-पांच किलो वजन में 1008 व्यंजन, नमकीन, मिष्ठान, सूखे मेवे, फल पांच टन से अधिक व्यंजन भगवानश्री को परोसे गए। जो खजराना गांव, इन्दौर शहर मप्र के साथ ही अन्य प्रान्तों से भी श्रद्धालुओं द्वारा प्रेषित किए गए। ऐसा अभूतपूर्व, महाआयोजन, दादा श्री भालचन्द्र जी की संकल्प शक्ति से मात्र 1 माह की अवधि में सम्पन्न हुआ।

वर्ष में दो बार अखिल भारतीय स्तर के कवि सम्मेलन आयोजित करना, जिनमें श्री गोपालदास नीरज, काका हाथरसी बेचैन, बनारसी, श्री सत्यनारायण सत्तन जैसे कई महारथी कवि श्री गणेश दरबार में प्रस्तुति देकर स्वयं को धन्य समझते थे।

फिर हुआ मोती महोत्सव का शुभारम्भ (मोती अर्चन) संकल्प था, सवा लाख मोती (श्री गणेश सहस्त्र नाम से

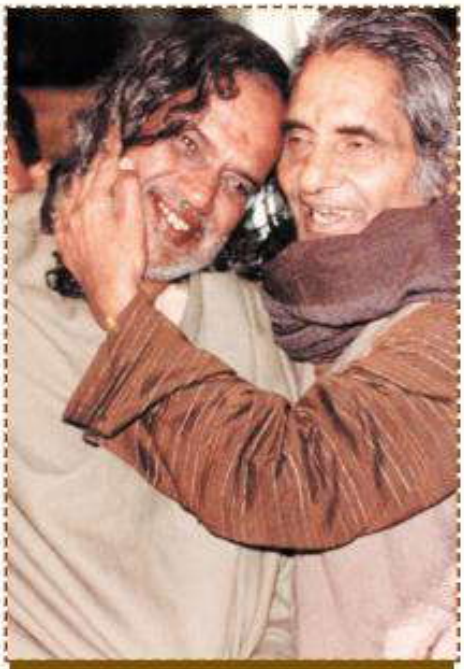

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, श्री हरिवंश राय बच्चन, श्री सुमित्रा नन्दन पंत, महादेवी वर्मा, श्री शिवमंगल सिंह सुमन आदि अनेक गणमान्य सुधिजनों से निकटता बनाए रखी।

अभिमंत्रित) भक्तों में वितरित करने का- साढ़े चार लाख मोती, प्रसाद, स्वरूप वितरित करने के बाद भी उनके देवलोकगमन के दो माह पूर्व तक, मोती प्रसाद स्वरूप, श्रद्धालुओं को प्राप्त होते रहे। भविष्य में भी मोती प्रसाद वितरण सतत् गतिमान रहेगा।

श्री सिद्धिविनायक साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मंच

1970 से 2000 तक होने वाले वार्षिक समारोहों, यथा तिल चतुर्थी का तीन दिवसीय वार्षिक मेला, श्री गणेश जन्म चतुर्थी सितम्बर में ग्यारह दिवसीय विभिन्न आयोजन, श्री सिद्धि विनायक साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मंच के माध्यम से शहर के उदीयमान, शास्त्रीय, सुगम संगीत के गायक, वादक कलाकार श्री गणेश दरबार में अपनी नि:शुल्क प्रस्तुति देकर देश के विख्यात कलाकार बने।

मालती के मान गायक सिद्धेश्वर सेन नीरज जी तो जब भी इन्दौर आते, तभी दादाजी का सानिध्य प्राप्त करने अवश्य आते।

उस समय के देश के मूर्धन्य, साहित्यकार, कवि लेखकों से अनेक बार दादाजी रूबरू हुए। पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी से प्रथम भेंट का वृतान्त बताते थे।

दादाजी एक बार इलाहाबाद गए, निरालाजी से भेंट करना ही उद्देश्य था। ढूंढते-ढूंढते पता चला निरालाजी संगम पर है। संगम पहुंचे, निराला का साक्षात्कार भी निराला ही हुआ। कमर में केवल गमछा लपेटे संगम की रेत पर अवधूत बने बैठे थे। आप भी उनके सम्मुख कुछ दूरी पर बैठ गए और अपनी दृष्टि निरालाजी पर केन्द्रित कर दी। आधा घंटा दोनों एक-दूसरे को विर्निमेष निहारते रहे। आखिर निरालाजी ने इशारे से इन्हें पास बुलाया, पूछा, क्या बात है, क्या चाहते हो? दादा का उत्तर था, कुछ नहीं-

निराला जी बोले- बड़े अजीब व्यक्ति हो। कैसा सामंजस्य कैसा भावों का मूक आदान-प्रदान जो स्वयं निराला है, वह दादाजी को सम्बोधन दे रहा है। कैसा अजीब आदमी है।

हम सोचते रह जाएं, दादा क्या थे? क्या नहीं थे। बाद में कई बार इलाहाबाद जाकर निरालाजी से निराली भेंटे हुई। **अन्नदान-महादान** - लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व- मन्दिर के इर्द-गिर्द भूख से तड़पते नंगे निराश्रित, साधनहीन, स्त्रियों, बच्चों बूढ़ों को भिक्षावृत्ति करते देखा तो, हृदय में करुणा जागी, विचार किया, इस सबके लिए एक ऐसी स्थाई व्यवस्था कर दी जाए कि इन्हें दोनों समय पेट भर भोजन मिल जाए- मन्दिर परिसर में अन्न क्षेत्र स्थापित किया जाए।

बस क्या था। विलम्ब कैसा? मन में संकल्प का सूत्रपात हुआ- और निकल पड़े दादाजी कंधे पर झोली लिए। पांच छ: वर्ष की अवधि में दादाश्री ने, शहरों और ग्रामीण क्षेत्र के साढ़े तीन लाख घरों

शरीर सौष्ठव (व्यायाम) के प्रति भी दादाजी सदैव जागरूक रहे देह छोड़ने के छ: माह पूर्व तक नियमित व्यायाम करते रहे। देश के प्रसिद्ध पहलवानों, मा. चन्दगीराम, मेहरदीन पहलवान, महाराष्ट्र की शान मारुति माने आदि कई प्रख्यात पहलवानों के निकट सम्पर्क में रहे।

में अलख जगाई, केवल एक मुट्ठी अन्न चाहिये। कई स्थानों पर जो लोग पहचान नहीं पाते, अपमानित भी होना पड़ा- चले आए मुस्टण्डे और कुछ नहीं तो भीख ही मांगो। जाओ कुछ कामधाम करो। आगे बढ़ने के बाद पीछे चलने वाले अन्य भक्त जब वस्तुस्थिति से अवगत कराते तो, दौड़कर क्षमा प्रार्थना के साथ, श्रद्धापूर्वक अन्नदान करते। आज वह एक मुट्ठी अन्न से रोपित नन्हा पौधा वटवृक्ष का आधार ले चुका है। अन्तर केवल इतना है कि पहले नि:शुल्क था, अब मन्दिर संचालन समिति द्वारा मात्र 10 रु. शुल्क पर, शुद्ध, सात्विक और सुस्वाद भोजन दोनों समय दिया जाता है।

सदाचार ही मानव को संस्कारित और मर्यादित करता है। पशुता से मानवता और मानवता से देवत्व की ओर ले जाता है।

आम्र महोत्सव (आमार्चन)

अभी कुछ ही वर्षों पूर्व सवा लाख आम से गणेशार्चन का संकल्प लिया।

विभिन्न प्रजातियों के सवा लाख आम शहर के बाजारों मण्डियों से एकत्रित कर श्री गणेश सहस्त्र नामावलि से अभिमंत्रित, भक्तों में प्रसाद स्वरूप वितरित किए गए। ऐसे कई लघु-वृहत अनुष्ठानों का विधिवत संकल्प लेकर दादाजी द्वारा पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धापूर्वक पूर्ण किए गए।

आज के संक्रमण काल में मनुष्य की मनुष्यता खो गई है। दादा की सोच थी- मनुष्य परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। जहां वैदिक धर्म कहता है- नर तन सम नहि कपनिउ देही। वहीं ईसाई धर्म इसे ''क्रॉउन ऑफ क्रिएशन'' सृष्टि का मुकुट मानता है, इस्लाम धर्म भी दीन ईमान और इंसानियत पर टिका है।

उस काल में तो मानवीय मूल्यों के अधिसंख्य लोग पक्षधर होते थे। नीति धर्म और सदाचार के अनुगामी होते थे। जब कोई अधर्मी दुराचारी होता था, तो भगवान उसका संहार कर देते थे। दादाजी का कथन था- वर्तमान परिस्थिति तो एकदम विपरीत है, यही दर्शाती है।

घर-घर में रावण बैठा है, इतने राम कहां से लाएं। इन परिस्थितियों को देख सुनकर कभी दादाजी बहुत व्यथित हो जाते थे, कहते-आज अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार बलात्कार, झूठ कपट, पाखण्डवृति, पापाचार, विश्वव्यापी रोग बन गए हैं। इन सब का मूलाधार क्या है? सदाचार का अभाव। प्राचीन काल में छात्र गुरुकुल में इसकी सम्पूर्ण शिक्षा पाते थे। किन्तु आज ये बातें केवल धर्म ग्रंथों की शोभा बढ़ाती है। फलस्वरूप- पहले आदमी जानवरों से डरता था, किन्तु आज आदमी-आदमी से डरता है।

आदमी की शक्ल से अब डर रहा है, आदमी।
आदमी को लूटकर घर भर रहा है आदमी।।
आदमी ही मारता और मर रहा है आदमी।
समझ में आता नहीं क्या कर रहा है आदमी।।

अन्न क्षेत्र, अतिथि निवास, वृद्धाश्रम, सर्वसुविधायुक्त चिकित्सा केन्द्र, संस्कृत विद्यालय, आदि दादाजी की कल्पना उनके विचार के अनुरूप ही अन्न क्षेत्र के नवीनीकरण के साथ पूर्णता की ओर अग्रसित हैं।

ऐसे मानवतावादी वीरव्रती, दृढ़संकल्पी, सर्वधर्म समन्वयी अगणित गुणनिधान, इतिहास पुरुष हमारे दादा श्री भालचन्द्र जी भले ही हमारे बीच स्थूलरूप में नहीं है। किन्तु सूक्ष्म रूप से मेरे, मेरे भट्ट परिवार के, अनगिनत भक्तजनों के हृदयागार में सदैव विद्यमान रहकर मार्गदर्शन देते रहेंगे। ऐसी विलक्षण, ज्ञानमयी, विज्ञानमयी, बहुमुखी, विराट प्रतिमा को कोटि-कोटि नमन।

सर्व भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः मेरे श्रद्धेय दादा।

- पं. मोहन भट्ट भाई, पं. जयदेव भट्ट पुत्र, भतीजे पं. धर्मेन्द्र भट्ट, अशोक भट्ट, उमेश, पुनीत, विनीत, सुमित ओशो, पार्थ, शिवम, सतपाल महाराज, उदित, एवं समस्त भट्ट परिवार प्राणपण से पूर्ण करने हेतु सदैव प्रयासरत रहेगा।

दादा के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प...

बड़े दादा पं. भालचंद्रजी भट्ट के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प उनके दत्तक पुत्र पं. जयदेव भट्ट ने लिया है, दादा के मोती महोत्सव के अंतर्गत सवा लाख मोती (श्री गणेश सहस्त्र नाम से अभिमंत्रित) कर भक्तों में वितरित करने का संकल्प वे आगे बढ़ाएंगे, इसके अंतर्गत अभी तक सवा चार लाख मोती प्रसाद स्वरूप वितरित किए जा चुके हैं तथा यह क्रम पं. जयदेव भट्ट आगे भी जारी रखेंगे।

ज्ञातव्य है कि पं. जयदेव भट्ट को दादा ने अपने पिताश्री पं. सदाशिवजी भट्ट के तेरहवें के कार्यक्रम के दौरान दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया था। पं. श्री जयदेव भट्ट दादा की बहन सौ. सुशीला-राधेश्याम नागर भीलासा के ज्येष्ठ पुत्र हैं।

उनका छाया में सबको आसरा मिला

पूज्य बड़े दादा स्व. श्री भालचन्द्र जी भट्ट को कोटि-कोटि प्रणाम।

हमारे दादा खजराना गणेश मंदिर के आधार स्तम्भ थे। उनके जाने से जो कमी हम महसूस कर रहे हैं, उसकी पूर्ति कोई नहीं कर सकता। दादा ने जो यहां विकास कार्य करवाये हैं वो एक मिसाल है।

दादा ने यहां कई लोगों को व्यापारी बना दिया। भूमि पर स्थान देकर दुकान लगवाई। कुछ लोग उसमें दादा की मर्जी से आए थे और गए अपनी मर्जी से। वो यहां से पलायन तो कर गए मगर आज भी परेशानियां पीछा नहीं छोड़ रही हैं।

यहां उत्तर प्रदेश, बिहार, सतना, रीवा के रहने वाले सहायक पुजारी अपनी सेवाएं दे रहे हैं, ये सब दादा के कृपा पात्र रहे हैं। जो सहायक पुजारी सुत-सावल में रहे वो आज भी मजे कर रहे हैं, जिसने अपनी नियत डगमगाई वो यहां से ओंझल हो गए। ये सहायक पुजारी जब खजराना गणेश मंदिर में अपनी सेवाऐं देने आए थे तब 'टंकी सदन' पानी की टंकी के नीचे रहा करते थे और भगवान गणेश की कृपा इन पर बरस रही थी। किसी-किसी के पास तीन-तीन मकान तीन-तीन मंजिला है तो कुछ एक पुजारी आज भी किराये के मकान में जीवन गुजार रहे हैं कि कहीं छापा नहीं पड़ जाए। ये सब बड़े दादा का ही आशीर्वाद है।

लड्डू व्यापारियों की दास्तां कुछ ऐसी ही है। सोचकर कोई नहीं आया था कि बैंक में खाता खुलवाना पड़ेगा, मगर दादा के आशीर्वाद से बैंकों के अकाउंट नम्बर इन्हें लिखकर रखना पड़ते हैं, क्योंकि अकाउंट ही इतने सारे हैं। हमारे भाइयों ने ट्रेवल्स का धंधा भी करके छोड़ दिया,

किसी-किसी ने बस चलाकर छोड़ दी, मगर यह लाईन रास नहीं आई। पता नहीं घी के लड्डू बेचने वालों को पेट्रोल-डीजल ने बरकत नहीं दी।

मंदिर पर अशोक जी भट्ट, सतपाल जी महाराज, पुनीत जी भट्ट, विनीत जी भट्ट, सोशल मीडिया के माध्यम से मंदिर की विशेष गतिविधियों के दूर देश-विदेश में बैठे भक्तों को प्रेषित करते रहते हैं। देवास निवासी बंटी भैया 'दादा के दीवाने' पिछले 13 वर्षों से हर वर्ष के अन्त में दिसम्बर के अन्तिम बुधवार को भोजन और भजन का आयोजन दिनभर के लिए करते हैं और मंच पर बस एक बार दादा आ जाए तो कार्यक्रम में चार चांद लग जाते हैं और बंटी भैया का सीना चार इंच चौड़ा हो जाता था कि मंच पर 'बोस' (बड़े दादा) आ गए है कार्यक्रम को सफल होना ही पड़ेगा। प्रशासक महोदय, भट्ट परिवार एवं बाल गणेश जी के आशीर्वाद से बंटी भैया का आयोजन अनवरत चलता रहे।

पहले यहां दो तरह के दुकानदार हुआ करते थे, एक तो पक्की दुकान वाले जो अपने को सीनियर समझते थे और दूसरे गुमटीवाले 'जुनियर'।

वक्त के साथ सब बदला प्रशासक महोदय श्री मनिष सिंह जी (एकेवीएन एमपी) के प्रयासों से विकास कार्यों की गंगा श्री गणेश मंदिर पर बह रही है, नवीन परिसर में 60 दुकानों का निर्माण हुआ लॉटरी द्वारा दुकानों का चयन हुआ, पक्की और गुमटी वालों का भेद खत्म हुआ।

कुछ लोग आज भी सोचते हैं कि दादा ने बाहर से आये लोगों को दुकानें क्यों दे दी और हम रह गये। यह सब बड़े दादा के द्वारा ही सम्भव हो पाया वरना यहां तो लोगों के पास पैसा बाद में आया। इसके पहले ही शहर के नामचीन स्वीट्स वाले नोटों के बण्डल ले-लेकर दादा के पास आये थे और आग्रह किया कि एक दुकान की जगह हम को भी चाहिये। मगर वो दादा ही थे जिन्होंने अभी धन की लालसा नहीं की।

श्रीमती वर्षा दीदी-जयदेव जी भट्ट की अनुशंसा एवं बड़े दादा की अनुमति से ही मुझे दुकान मिली। सामाजिक क्षेत्र में कुछ लोग पहचानते है। ये सब दादा का आशीर्वाद ही है कि आज मैं इस मुकाम पर हूं। श्री जयदेव जी भट्ट ने पूरे परिवार के साथ दादा की बहुत ही निष्ठा से सेवा की और मंदिर में बैठना तक बंद कर दिया। बड़े दादा ने अपने पूज्य पिताजी के निधन के पश्चात हुए पगड़ी के कार्यक्रम में श्री जयदेव जी भट्ट को अपना उत्तराधिकारी पूरे समाज, और खजराना वासियों के समक्ष माना।

जयदेव जी ने ही बड़े दादा को मुखाग्नि दी और समाज के समक्ष प्रण लिया कि दादा के जो अधूरे कार्य रह गए हैं। उन्हें पूरा करेंगे, मोतियों का अर्चन जारी रहेगा और मंदिर के विकास में वे सहभागी बनेंगे।

- योगेश शर्मा

चित्रमय झलकियां

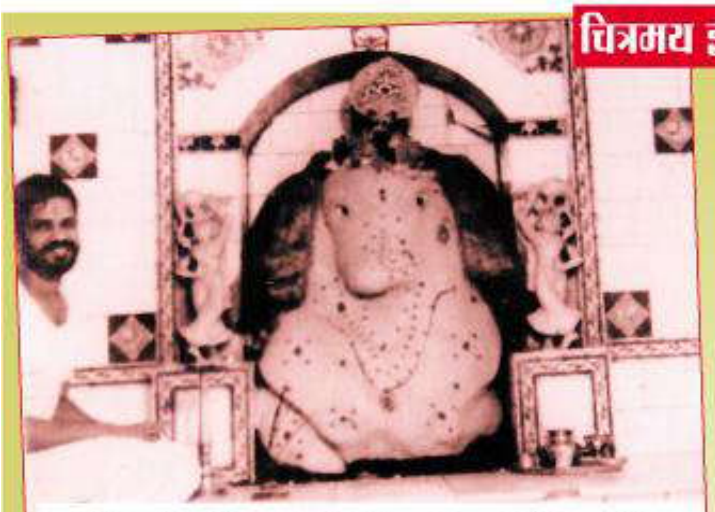

बड़े दादा अपनी युवावस्था के दौरान भगवान की शरण में।

सन् 1975 में श्री गणेश मंदिर के पार्श्वभाग का फोटो, उस समय दुर्गा मंदिर का निर्माण नहीं हुआ था।

सन् 1978 का खजराना गणेश मंदिर, एक दृश्य

मन्दिर इतिहास में बुधवार की शुरुआत इस 11 कुण्डीय यज्ञ के पश्चात ही हुई।

दादा... अपने अनुज स्व. टीकमचंद भट्ट के साथ।

मंदिर परिसर में दादा की मूर्ति हेतु प्रशासन निर्णय लें

खजराना गणेश मंदिर के मुख्य पुजारी पं. श्री भालचंद्र जी भट्ट की मूर्ति मंदिर परिसर में स्थापित करने को लेकर जिला प्रशासन को निर्णय लेना है।

ज्ञातव्य है कि दादा की श्रद्धांजलि सभा के दौरान यह बात वरिष्ठ पत्रकार श्री कीर्ति राणा ने प्रमुखता से उठाई तथा पूर्व मंत्री श्री महेन्द्र हार्डिया, प्रमोद टंडन, श्री सज्जनसिंह वर्मा, श्री रमेश मैदोला ने प्रस्ताव का समर्थन किया। शोक बैठक के अंतर्गत इस मुद्दे पर बहुसंख्य गणमान्य नागरिकों ने अपने हस्ताक्षर किए। जिला प्रशासन इस बारे में शीघ्र निर्णय लेकर दादा की मूर्ति स्थापना का मार्ग प्रशस्त करें।

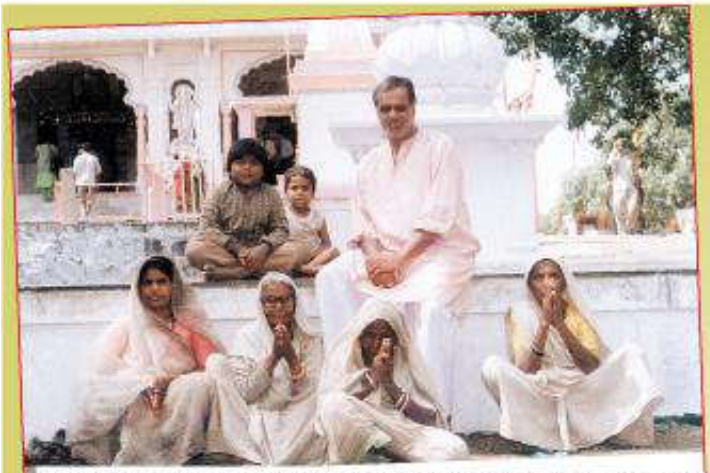

निराश्रित लोगों के साथ। दादा का मानना था कि निराश्रित लोगों का आसरा मंदिर ही रहता है।

म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री मोतीलाल वोरा के साथ।

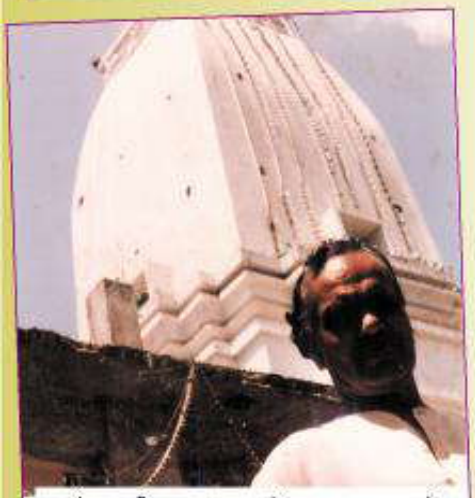

अपने प्राचीन स्वरूप में खजराना गणेश मंदिर।

अन्न क्षेत्र के लिए गांव-गांव शहर-शहर जाकर भिक्षा मांगते दादा।

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के साथ।

मंदिर परिसर में प्रतिवर्ष आयोजित दंगल का शुभारंभ करते हुए दादा, साथ में हैं श्री ओमप्रकाश पहलवान।

म.प्र. के वरिष्ठ मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय एवं ब्राह्मण समाज के गौरव विधायक श्री रमेश मैंदोला दादा के साथ।

प्रसाद पाईन्ट

दु.न. 43 श्री गणेश मंदिर
परिसर
खजराना, इंदौर

प्रो.
योगेश शर्मा
मो.- 9425072237

चिट्ठी, ना कोई संदेश, जाने वो कौन सा देश, जहां तुम चले गये...

मैं जब इन्दौर आया, तब प्रायवेट नौकरी करता था। मुझे दादा ने परिसर में दुकान लगाने की अनुमति दी। मैं और मेरा पूरा परिवार दादा के हमेशा ऋणी रहेंगे। आज हम सब उनकी कृपा से खुश हैं एवं सम्पन्न है। दादा को हमारी ओर से श्रद्धांजलि।

वक्रतुण्ड

प्रसाद भण्डार

प्रो. अजित सिंह मौर्य
गुड्डू ठाकुर
8349994274

दु. नं. 52 श्री गणेश मंदिर
परिसर खजराना, इन्दौर

पूज्यनीय बड़े दादा की कृपा से आज श्री गणेश मंदिर परिसर में स्थित दुकान मेरी पहचान है। मैं बेरोजगार था दादा ने रोजगार दिया। मैं जब बी.कॉम प्रथम वर्ष में था तब परिवार में अचानक एक मोड़ आया, जहां से पढ़ाई में रुकावट पैदा हो गई। उसी समय मैं मामाजी की लड्डू की दुकान पर बैठने लगा और फिर मामाजी ने बड़े दादाजी से बात करके मुझे लड्डू की दुकान दिलवाई और मैंने व्यापार शुरु किया। मैं जो भी हूं सब बड़े दादा और मामाजी की वजह से हूं। मुझे जो पहचान मिली वो बड़े दादा का ही आशीर्वाद है।

दादा को श्रद्धांजलि

श्री गणेश महिमा

प्रसाद भण्डार

दु.नं. 44 श्री गणेश
मंदिर परिसर
खजराना, इंदौर

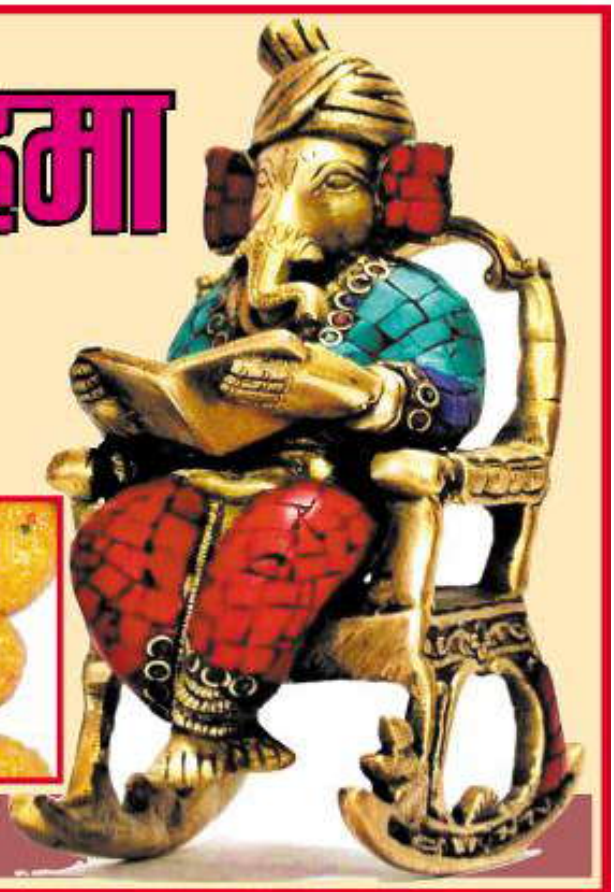

प्रो. दयाशंकर रावल (गड्डू)- मो- 9981929595

मैंने जब से होश सम्भाला, तभी से दादा का सानिध्य प्राप्त हुआ, मैं पिताजी के साथ रोज मंदिर आ जाया करता था और मंदिर की साफ-सफाई करके सेवा का लाभ लेता था। दादा हमारी पूरी बाल मण्डली को मंगलवार और शनिवार को कुश्ती करवाते थे। सभी को एक-एक दो-दो रुपया दे देते थे जिससे जेब खर्च चलता रहता था। मेरे पिताजी भगवान गणेशजी की पोषाक सिलने का काम करते थे अब मेरा अनुज सुभाष ये जवाबदारी सम्भाल रहा है। दादा ने मुझे मंदिर परिसर में दुकान लगाने की अनुमति दी। सब उन्हीं की कृपा है। मैं और मेरा परिवार दादा को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अभिषेक

प्रसाद भण्डार

दु. नं. 16 मो.
9826290001

श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना इन्दौर

प्रो. महेश सोनगरा,
सुभाष सोनगरा

मेरे पिताजी खिलौने की दुकान लगाते थे उसके बाद दादा के आशीर्वाद से लड्डू की दुकान डाल ली। आज हम जो भी स्थिति में है सब दादा की कृपा से ही है। मैं और मेरा पूरा परिवार दादा को नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धा प्रसाद भण्डार

प्रो. मनीष टिक्कल पिता स्व.
शंकरराव टिक्कल 'अन्ना भैया'
9009999978

दु. नं. 5 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना इन्दौर

मैं 10-12 वर्ष की उम्र से ही जमीन पर नीचे बैठकर 10-20 पैसों की चिरौंजी की पुड़िया और 25-50 पैसे की माला बेचता था। बाद में मुझे दादा ने पलंग पर दुकान लगाने की अनुमति दी, फिर मैंने एक गुमटी लगा ली, तब केवल पांच दुकानें थी और लड्डू भी हमने ही बनाना शुरू किए थे। गणेश जी की मूर्ति अकेली थी। कुछ सालों बाद मां रिद्धि-सिद्धि की स्थापना हुई। मैं दादा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्रीगणेश शक्ति

प्रसाद भण्डार

दु. नं. 9 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर
प्रो. यशवंत जरिया- 9977994432

श्री बड़े दादा का हमारे पूरे परिवार पर हमेशा आशीर्वाद रहा। भगवान गणेशजी के बाद दादा ने ही हमारी नैया पार लगाई। हमें दुकान लगाने की अनुमति दी और कहा- माणक बच्चों का भविष्य बन जायेगा थोड़ी मेहनत करना पड़ेगी। आज सब दादा की कृपा से सब ठीक चल रहा है। दादा को मेरे पूरे परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

शिवम् प्रसाद भण्डार

दु.न. 47 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना इन्दौर

प्रो. माणक चौहान - 9753244222

मैं बचपन से ही श्री गणेश मंदिर से जुड़ा हूं। मैं मंदिर में साफ-सफाई किया करता था। उसी का परिणाम है कि दादा ने मुझे उचित स्थान मंदिर परिसर में दिया। आज जो भी हूं सब दादा का ही आशीर्वाद है। पूज्य दादा को

हार्दिक श्रद्धांजलि

शुभ-लाभ प्रसाद भण्डार

दु.न. 19
श्रीगणेश मंदिर परिसर
खजराना इन्दौर

प्रो. शंकर पाटीदार- 9826097231

मंदिर परिसर में मूर्ति स्थापित हो ऐसी मेरी आशा है। मैं दादा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं आज जो भी हूं सब दादा का आशीर्वाद है।

मयूर

प्रसाद भण्डार

दु. नं. 3 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर

प्रो. मोहन सोनी
+91 98272-05902

मैं और मेरा पूरा परिवार दादा श्री भालचन्द्र जी भट्ट को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। आज दादा का ही आशीर्वाद है कि हम फल-फूल रहे हैं।

रिद्धि-सिद्धि

प्रसाद भण्डार

दु.नं. 1 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर

प्रो. नरेन्द्र शर्मा राकेश शर्मा

मो. 9893500447, 9981111502

मेरे पूज्य पिताजी द्वारा भगवान गणेश के दरबार में मां रिद्धि-सिद्धि की स्थापना की गई। दादा की हमारे पूरे परिवार पर बड़ी कृपा रही। दादा ने मुझे लड्डू की दुकान लगाने की अनुमति दी।
मैं-और मेरा पुत्र कटारिया परिवार दादा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ऋषि

प्रसाद भण्डार

दु. नं. 56

श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना इन्दौर

प्रो. ऋषि कटारिया
9301553143

श्री बड़े दादा भालचन्द्र जी भट्ट हमारे प्रातः स्मरणीय थे। मुझे उनका सानिध्य प्राप्त हुआ। जब भी मैं उनसे मिलता था। पूरे परिवार का हाल-चाल पूछते थे। सन् 2006 में जब बांसवाड़ा से यहां खजराना आया तब मेरी पहली भेंट श्री बड़े दादा से हुई। उनके कार्यों से मुझे प्रेरणा मिली। मैं और मेरे परिवार की ओर से

हार्दिक श्रद्धांजलि

नागर स्वीट्स

प्रो. यदु नागर-9893653353
मथुरा नागर-9893843338

दु.नं. 60 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर

इंदौर, धार एवं झाबुआ से एक साथ प्रकाशित

दैनिक
चैतन्यलोक

(भारत का प्रथम संस्कृत, हिन्दी समाचार पत्र)

अब प्रदेश की राजधानी भोपाल से भी।

सभी नागरजनों से निवेदन है कि वे यदि समाचार पत्र से जुड़ना चाहें तो सम्पर्क करें :-

दीपक शर्मा- +91 94250-63129
पवन शर्मा- +91 98260-95995
मनीष शर्मा - +91 99262-85002

मुझे शुरु में दादा ने खिलौने, मूर्ति, चाबी के छल्ले की दुकान की अनुमति दी। उसके बाद मैंने अपने पुत्र को लड्डू की दुकान लगवाई। मेरी ओर से दादा को

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि।

आपका
प्रसाद भण्डार

प्रो. रघुनाथ राठौर
7415859274

द्र.नं. 57 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर

मुझे दादा ने सबसे पहले ठेले पर रखकर लड्डू की दुकान लगाने की अनुमति दी। बाद में मैंने गुमटी लगाई। बाद में मुझे पक्की बनी 16 दुकानों में से एक मिली। आज हम सब दादा के ऋणी हैं। सब दादा की ही कृपा है।
दादा को

हार्दिक श्रद्धांजलि

वन्दना प्रसाद भण्डार

द्र. नं. 34 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर

प्रो. बलराम पाटीदार - 9009003433

स्व. भ्राता राधेश्याम यादव को बड़े दादा ने मंदिर परिसर में पीपल के पेड़ के नीचे एसटीडी, पीसीओ चलाने की अनुमति दी। उसके बाद पक्की दुकान मिली। आज मैं जो भी हूं मेरे बड़े भाई एवं दादा के आशीर्वाद से ही हूं। मैं दादा को श्रद्धांजलि

श्री सिद्धि विनायक
धार्मिक पुस्तक भण्डार

द्र.नं. 55 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर

प्रो. मुकेश यादव
+91 98932-34201

मेरा शुरुआती जीवन संघर्ष पूर्ण रहा। सन् 1990 में घर से निकला, जब मेरे पास सिर्फ तन पर कपड़े, जन्मदायनी मां और जीवन संगिनी साथ में थी जेब में एक रुपया भी नहीं था। पिताजी के निधन के पश्चात मैंने हम्माली की, गड्डे खोदे, एसिड फिनाइल, साइकिल से गली-गली सुबह 6 बजे से बेचता, पॉपकार्न बेचे, चायपत्ती की सेल्समैनी की, उसके बाद 75 रु. प्रतिमाह में नौकरी की। इसके बाद दो माह इन्दौर के सबसे बड़े सरकारी एम.वाय. हॉस्पिटल में रात्रिकालीन कैंटिन चलाया। उसके बाद जीवन में कुछ परिवर्तन आया। सन् 1987 में बड़े दादा की अनुमति से मंदिर परिसर में पलंग पर दुकान लगाई जो हर बुधवार को खोलता था। बाकी दिनों में सुपारी घर-घर जाकर बेचता था। जब पक्की दुकानें बनी, उसमें मुझे दादा ने स्थान दिया। जब मैं घर से निकला तब मेरे पास कुछ नहीं था, ऐसे में श्री रामगोपाल जी पाटीदार ने अपने घर में पनाह दी, खाना दिया, बिजली किराया सब मुफ्त।

प्रिय दादा को हार्दिक श्रद्धांजलि

खण्डेलवाल

मोदक प्रसाद

दु.नं. 30 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर

प्रो. राजेश खण्डेलवाल- 9827211539

गुरुकृपा स्वीट्स

मुझे दादा ने सर्वप्रथम ठेला लगाने की अनुमति दी। बाद में पक्की 16 दुकानों में से मुझे एक मिली। बड़े दादा मेरे गुरु थे, जब भी मुझे जीवन में कठिनाई आई मैं दादा के पास जाता था। आज हमें दादा की कृपा से ही समाज और परिवार में जाना जाता है। हमारी तरफ से दादा को श्रद्धांजलि।

चरणों में- नागेन्द्र सिंह मौर्य (हरदा वाले)

दु.नं. 33 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना इन्दौर

प्रो. नागेन्द्र सिंह मौर्य
7771925500, 9575758585

चिट्ठी, ना कोई संदेश, जाने वो कौन सा देश, जहां तुम चले गये...

पूज्यनीय श्री बड़े दादा को श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

पाटीदार प्रसाद भण्डार

क्या लिखूं एक ऐसे महापुरुष के बारे में जिसके लिये दुनिया के तमाम शब्द कम पड़ जाए, जिन्होंने कितने ही दीन दुखियों को सहारा दिया, कितने ही भटके हुए लोगों को सही राह दिखाई, कितने ही बेरोजगारों को रोजगार दिया।
आज उन्हीं की कृपा से हम सब खुशी से जीवनयापन कर रहे हैं। आज बड़े दादा हमारे बीच नहीं है तो हम अपने आपको अकेला महसूस करते हैं, लेकिन उनका आशीर्वाद सदा-सदा के लिए हमारे साथ रहेगा।
भगवान अपने श्री चरण कमलों में उन्हें जगह दे।

जय श्री गणेश

प्रो. वासुदेव पाटीदार,
9981323897

दु. नं. 38 श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर

श्रद्धेय गुरुवर श्री मालचन्द्र जी मट्ट के 'चरणों में श्रद्धा सुमन'
समर्पित करता।
आपके चरणों में गुरुवर।।
वरद् हस्त था सदा आपका।
हम सब सेवक के सिर पर।।
मालचन्द्र तो 'माल चन्द्र' थे।
जिसने जग का गरल पिया।।
अमृत बांट दिया हम सबको।
विष से नीला कण्ठ किया।।
सुनकर मेरी अरज-आपने।
अर्जुन मुझे बना डाला।।
मुझसे दीन हीन बालक को।
निज बालक जैसा पाला।।
गुरु ऋण को हम चुका न पाये।
अपना सब न्यौछावर कर।।
आप हमेशा रहे जगत में।
'मालचन्द्र' शंकर बन कर।।
चरण सेवक - अर्जुन सिंह ठाकुर

प्रतिभा स्वीट्स

दुकान नं. 50

राजपूत प्रसाद भंडार- दुकान नं. 48

श्री गणेश मंदिर परिसर
खजराना इन्दौर

प्रो. अर्जुन सिंह ठाकुर
मो. 9926855246

मैं जब राजस्थान से आया था तब प्रायवेट नौकरी करके मेरा जीवनयापन करता था। मुझे बाद में दादा का सानिध्य मिला, मुझे उन्होंने परिसर में उचित स्थान पर दुकान लगाने की अनुमति दी। मैं, मेरा परिवार दादा का कोटि-कोटि प्रणाम करता है। दादा को हमारी ओर से

हार्दिक श्रद्धांजलि

मोहित शर्मा प्रसाद भंडार

दु. नं. 29 श्री गणेश मंदिर
परिसर, खजराना, इन्दौर

प्रो.
रमेश शर्मा,
9669251251

प्रथम पुण्य स्मरण

पूज्य पिताजी स्व. श्री कृष्णकांतजी नागर

'भक्ति आपने की, पुण्य हमें दिया, संघर्ष आपने किया, सुख हमें दिया, कर्म आपने किये, फल हमें दिया।'

आज आपके प्रथम पुण्य स्मरण पर समस्त नागर परिवार आपको सादर नमन करता है।

श्रद्धानवत्- धर्मपत्नी-श्रीमती चन्द्रकांता नागर, पुत्र-पुत्रवधु- मनोज-सीमा, पंकज-टीना, आशीष-रिंकिता नागर, पोत्र-पोत्री- जूही, गुनगुन, दिया, कुंज, सुजल, रिया।

फर्म- नागर किराना स्टोर्स-थान्दला, पंकज ट्रेडर्स थान्दला, जिला-झाबुआ (म.प्र.)

विवाह वर्षगांठ पर बधाई

सपना - प्रतीक जी
15-02-2014

लोकेश-आरती
17-02-2014

नागर एवं रावल परिवार
मो. 8085505513

खजराना गणेश फोटोग्राफर ग्रुप

की ओर से बड़े दादा पं. श्री भालचंद्र जी भट्ट को

हार्दिक श्रद्धांजलि
एवं नमन्

जगदीश राव, 9098274245,
राजू करोडिया- 9617206708, सोहन लोधी- 9754032170,
दिलीप माली 9617017009, दिग्विजय चौहान - 8817270263

श्री खजराना गणेश मंदिर परिसर खजराना, इंदौर

गुरुवर श्री भालचंद्र भट्ट
के चरणों में श्रद्धा सुमन
समर्पित करता हूं मैं गुरुवर
आपको
और कौन हर सकता था,
इस पापी के संतान को
दीन-हीन, धनहिन अकिंचन चरण
तुम्हारी आया,
मुझ अनाथ के नाथ बने
जब मुझको अपनाया तुमने
आज मिला सब मुझे
किन्तु तुम दूर हो गए हमसे
हृदय दरक सा गया गुरुजी
आज आपके गम से

- चरण सेवक रमाशंकर यादव

भालचंद्र प्रसाद भंडार

दुकान नं. 2

श्री गणेश मंदिर परिसर खजराना इन्दौर, मो. 9303334949

जयहाटकेशवाणी के स्वामित्व एवं विवरण के सम्बंध में

घोषणा पत्र

फार्म 4 (नियम 3 देखिए)

1.	प्रकाशन का स्थान	- 20,जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर
2.	प्रकाशन अवधि	- मासिक
3.	मुद्रक का नाम	- मनीष शर्मा
	(क्या भारतीय नागरिक है)	- हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	20,जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर
4.	प्रकाशक का नाम	- मनीष शर्मा
	(क्या भारतीय नागरिक है)	- हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	20,जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर
5.	सम्पादक का नाम	- संगीता दीपक शर्मा
	(क्या भारतीय नागरिक है)	- हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	20,जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हो	- मनीष शर्मा - 20,जूनी कसेरा बाखल, - इन्दौर

मैं मनीष शर्मा जय हाटकेश वाणी के लिए एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

मार्च 2015

मनीष शर्मा
प्रकाशक

वामा™ क्रीम

सेल्समेन चाहिये

हमारे विभिन्न उत्पादकों की बिक्री हेतु पूरे भारत में टूरिंग विक्रय प्रतिनिधियों की आवश्यकता है।

वेतन- योग्यता अनुसार
अनुभव- आयुर्वेदिक दवा या कॉस्मेटिक्स विक्रय का 2 वर्ष का अनुभव अनिवार्य

अपना बॉयोडाटा शीघ्र भेजें

अंजू फार्मास्यूटिकल्स

111/112, अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इन्दौर फोन 0731-2527415
मो. +91-98935-62415, (नवीन झा), 94250-62415
Email : navin@anjupharma.com Website : www.anjupharma.com

"भीग गया मन" का विमोचन

निराशा और कुंठाओं से उबारे, वही सच्चा साहित्य

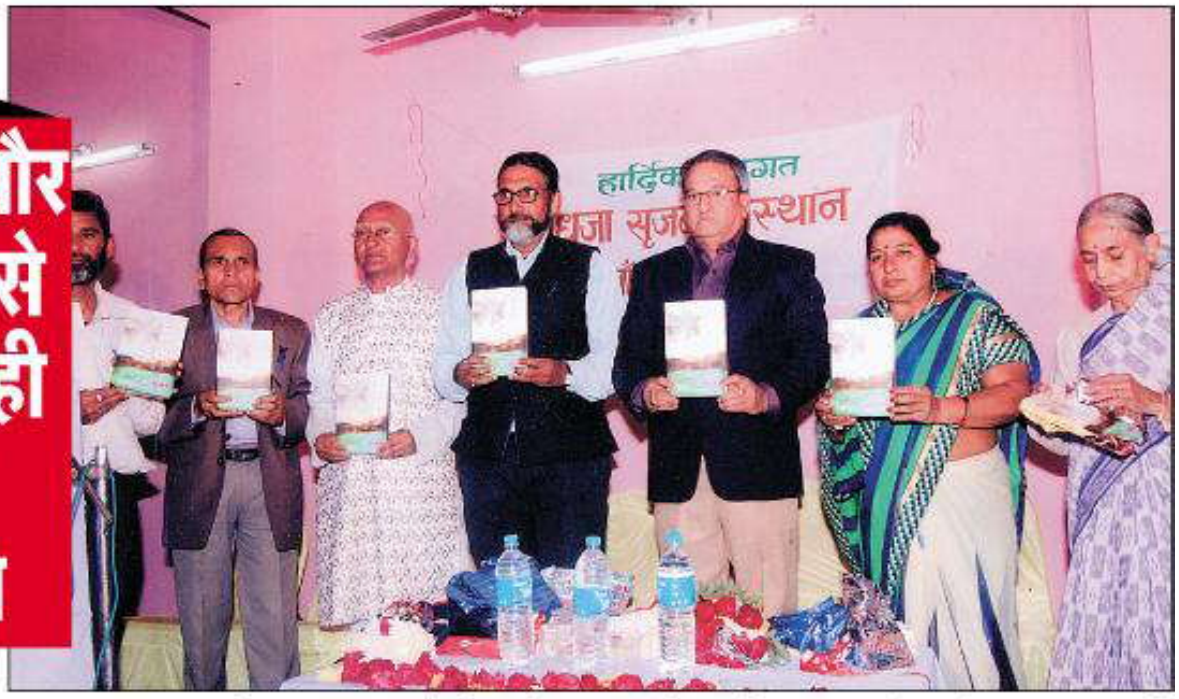

हम कितने ही बड़े क्यों न हो जाएं, मां, मातृ-भाषा, मातृभूमि और समाज से जुड़ने का आत्मीय आनंद होता है, इसका वर्णन अकथनीय होता है। ऐसी ही अनुभूति श्री हरिहर झा की कृति 'भीग गया मन' पुस्तक के विमोचन के अवसर पर हुई। 1965 में बांसवाड़ा कॉलेज से विज्ञान में स्नातक और 1967 में उदयपुर से विज्ञान में ही स्नातकोत्तर की शिक्षा पूर्ण करके पूना के मौसम विभाग में नियुक्ति प्राप्त की। 1972 से 1990 तक बी.आर.सी. (भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र में सूचना प्रौद्योगिकी के कार्यक्षेत्र चर्चित रहे। उन्नति और बदलाव की मंशा से ऑस्ट्रेलिया जाकर पुनः मौसम विभाग से जुड़ गए। विज्ञान की जटिलताएं भी उनके साहित्य प्रेम को दबा नहीं सकी।

1 फरवरी 2015 वह गौरवमय दिवस था कि नई दिल्ली की हिन्दी युग्म द्वारा प्रकाशित 'भीग गया मन' का विमोचन कार्यक्रम मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के वाईस चांसलर प्रो. आई.वी. त्रिवेदी द्वारा मातृभूमि बांसवाड़ा में समस्त साहित्यकारों, कवियों और समाज के गणमान्य नागरिकों के बीच सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय साहित्य अकादमी से सम्मानित उदयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश पंडया ज्योतिपूंज का उद्‌बोधन और उपस्थिति रोमांचकारी थी।

बांसवाड़ा नागर परिषद की सभापति श्रीमती मंजूबाला पुरोहित के विशिष्ट आतिथ्य में डॉ. आशा मेहता ने 'भीग गया मन' पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा कि ये मानव संवेदनाओं से परिपूर्ण है। पुस्तक के रचनाकार और कवि हरिहर झा ने कहा कि जीवन यात्रा सरल नहीं है। इसमें जटिलताएं हैं, लेकिन गीत और कविताएं इसे सरल बना देते हैं। इससे पूर्व लेखक परिचय डॉ. सरला पंड्या ने दिया। नागर समाज के ही श्री शंकर प्रसाद पंड्या और गजेन्द्र पंड्या ने कविताओं की संगीतमय प्रस्तुति दी। विदेशी धरती पर सिडनी के गैलेक्सी पब्लिकेशन की बाउंड्री ऑफ दी हार्ट, मेलबर्न पाइंट्री एसोसिएशन की डिउन ट्रेजरर्स, हिन्दी अकादमी नई दिल्ली की देशान्तर भारतीय विद्या भवन की गुलदस्ता किताब घर की बमरैंग आदि में उनकी रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री संदीप पंड्या और गजेन्द्र पंड्या उनकी कविताओं को संगीतबद्ध करके एलबम भी निकाल चुके हैं। उन्होंने आस्ट्रेलिया की संस्कृति और इतिहास पर लेखन किया है। इन्हें इंटरनेशनल सोसायटी ऑफ पाईट्स इंटरनेशनल लाइब्रेरी इन पॉइट्री से भी पुरस्कार मिले हैं। 2013 में मेलबोर्न में भारतीय प्रोढ़ संघ की ओर से कम्युनिटी सर्विस अवार्ड से नवाजा गया, उनकी रचनाएं वेब पत्रिका अनुभूति/अभिव्यक्ति पर निरन्तर प्रसारित होती रहती है। ऐसे साहित्यकार कवि को समाज के लोगों ने अपनत्व देकर गौरवान्वित किया और स्वयं की साहित्य संध्या का आनंद लिया। श्री आईवी त्रिवेदी जी ने श्री हरिहर झा को अपनी आगामी भारत यात्रा पर उदयपुर निमंत्रण दिया और उन्हें सम्मानित करने की मंशा जताई और कहा कि विश्वविद्यालय को उनके भूतपूर्व छात्र की उपलब्धियों पर गर्व है।

- प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा,
08003063616

वेबसाईट में सहयोगियों का स्नेह मिलन

www.asi.americadigest.com के संचालक श्री आर.के. नागर ने अपने स्वदेश आगमन के मौके को यादगार बनाने के लिए अहमदाबाद की राजवाड़ू फार्म की राजस्थानी वादियों में बांसवाड़ा एवं अहमदाबाद के अपने कार्यकर्ताओं का एक पारिवारिक स्नेह सम्मेलन आयोजित कर सभी के सहयोग की प्रशंसा की। सुदूर अमेरिका में भारतीय संस्कृति सभ्यता की महक फैलाने के उद्देश्य से उपरोक्त वेबसाईट का निर्माण श्री अर्पण झा की कुशल देखरेख में किया गया है।

इसमें भारत के सभी मन्दिरों की गतिविधियों को वेबसाईट की लिंक को जोड़ा गया है। उसके साथ ही अमेरिका में भी हमारी आध्यात्मिक गतिविधियों को प्रकाश में लाया गया है। इसमें एशिया और अमेरिका को एक सेतु के रूप में जोड़ने का एक भागीरथी कार्य उन्होंने हाथ में लिया है। बांसवाड़ा नागर समाज भी इसमें आत्मीयता से जुड़ा हुआ है, इसलिए यहां के सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रमों की झलक उसमें हमेशा दिखाई देती है। श्री नागर की यही कल्पना है कि अधिक से अधिक सांस्कृतिक झांकियां, रथयात्रा और आयोजन इसका अंग बने।

यह बांसवाड़ा वालों की पहली साईट है, जिसमें नागर समाज के ही लोग नहीं वरन् भारतीय सभ्यता, संस्कृति के रसिक भक्तजन इसका आनंद ले सकते हैं। साथ ही अमेरिका में भारत वंशी उसका अनुसरण करते हैं।

- मंजू प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा
मो. 09413947938

लखनऊ में महाशिवरात्रि का आयोजन

लखनऊ में विगत वर्षों की भांति श्री हाटकेश्वर मंदिर शिवपुरी में महाशिवरात्रि का आयोजन किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम में नागरजनों के साथ-साथ स्थानीय नागरिक भी उपस्थित थे। पूजा अर्चना, भजन, कीर्तन आरती एवं प्रसाद वितरण किया गया।

- लखनऊ प्रतिनिधि

सखियों ने मनाया वैलेंटाईन-डे

कोलकाता (पं. बंगाल) में सखियों ने 14 फरवरी 2015 को वैलेंटाईन-डे मनाया। सभी सखियों ने लाल रंग की वेशभूषा धारण की तथा कार्यक्रम स्थल को भी लाल गुब्बारों से सजाया गया। सब सखियों ने मिलकर खूब मौज-मस्ती की। नाच-गानों के अलावा क्विज भी खेली गई। साथ ही नियमित गतिविधियों के बारे में भी चर्चा हुई। सुस्वादू नाश्ते का सबने आनंद लिया। कार्यक्रम के अन्तर्गत आगामी बैठक 7 मार्च के आसपास होली मिलन के रूप में आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

ईश्वर भक्ति का आनंद

फागुन महीने में 24 फरवरी 2015 को अणिमा दीप याज्ञिक के निवास पर सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया। साथ ही भजन, कीर्तन, आरती की गई, सारा वातावरण भक्तिमय हो गया। इसके बाद सभी ने नाश्ते प्रसाद को ग्रहण किया। कार्यक्रम के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि जिस प्रकार हम जीवन से जुड़े सभी कार्यों को सुचारू रूप से करने का यत्न करते हैं, वैसे ही ईश्वर भक्ति भी उतनी ही जरूरी है, समय-समय पर उसका भी आनंद लेना चाहिए।

- अणिमा दीप याज्ञिक, कोलकाता

नागर समाज का गौरव- श्री हाटकेश्वर धाम

उज्जैन में हरसिद्धि की पाल पर निर्माणाधीन श्री हाटकेश्वर धाम देश विदेश में बसे सभी नागरजनों के लिए गौरव का विषय होगा। सिंहस्थ 2016 के मद्देनजर देशभर के नागरजनों की सुविधा हेतु अत्याधुनिक एवं सर्वसुविधायुक्त धर्मशाला भवन का निर्माण कार्य तेजी से जारी है। इस अत्याधुनिक भवन के निर्माण में समाजबंधुओं ने उत्साहजनक ढंग से तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया है, तथा यह सिलसिला अनवरत जारी है।

श्री हाटकेश्वर धाम में प्राप्त दानराशि

श्री महेन्द्रकुमारजी नागर देवास 11000/- नकद जमा
श्री गेंदालाल जी नागर सुतारखेड़ा (देवास) 10000/- नकद जमा
डॉ. बालकृष्ण जी त्रिवेदी सुदामानगर इंदौर 51000/-
(कमरा निर्माण 1,25,000/- की घोषणा पेटे)
(श्रीमती शन्नूदेवी वैद्य, सिद्धनाथ जी त्रिवेदी एवं श्रीमती शकुन्तला-वी.डी. नागर की स्मृति में भेंट)

श्री दिलीप त्रिवेदी एवं श्रीमती शान्ता त्रिवेदी, उज्जैन

श्री बसंतकुमार शर्मा (राऊ) 4000/-
(पूर्व घोषणा राशि 5000/- में से)
1000/- पूर्व में प्राप्त हुए
श्री दीनदयाल जी दवे शंकरबाग इंदौर 5000/-
श्री अशोक नागर, श्री अनिल नागर, श्री सुनील नागर, श्री आशीष नागर शाजापुर- 11000/-
(पूज्य पिता जी पुजारी स्व. श्री हरिशंकर जी नागर एवं माताजी स्व. कमलादेवी नागर की स्मृति में)
सौ. दुर्गा-बी.एल. मेहता शाजापुर 5000/- (घोषणा)

दानराशि सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं...

श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण में जिन दानदाताओं ने दान की घोषणा की है वह राशि शीघ्र जमा कर सहयोग प्रदान करें। तथा देश के किसी भी कोने से आर्थिक सहयोग सीधे बैंक में नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास उज्जैन के नाम से भारतीय स्टेट बैंक कंठाल ब्रांच अकाउंट नं. 32715150447 में जमा करवा कर इसकी सूचना सचिव श्री संतोष जोशी के मोबाइल नं- 9425917541 पर कर देवें, ताकि दानराशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक निवेदन-सबसे

नागर ब्राह्मण समाज के कहीं भी मंदिर, धर्मशाला या छात्रावास निर्माण हो, मासिक जय हाटकेशवाणी उनके बारे में पूर्ण जानकारी, धनसंग्रह हेतु जनजागरूकता, यथासंभव सहयोग हेतु सदैव तत्पर है। समाज हित के प्रत्येक कार्य में हम तन-मन-धन से आपके साथ है। कृपया सहयोग का आदान-प्रदान बनाए रखिए एवं समाजोत्थान के कार्य में तेजी लाएं।

- सम्पादक

कमाइये और उपयोग कीजिये।
'कमाना' एक बुद्धिमत्ता हो सकती है
लेकिन... उससे बड़ी बुद्धिमत्ता इसमें है कि
अपनी कमाई का सदुपयोग करना सीख जायें।

स्व.पं.श्री रामगोपाल जी शास्त्री
पुण्य स्मरण 22 फरवरी
एवं
स्व. श्रीमती बरजू बाई (बृजकुमारीजी) शास्त्री
पुण्य स्मरण 20-08-2010
की पुण्य स्मृति में श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण हेतु 11000 रू. भेंट किए।
श्रद्धावनत्- रमेशचंद्र नागर, (सुपुत्र) दुर्गेश नागर (पौत्र) जय, प्रसन्न (प्रपौत्र) नागदा, सतीश नागर, संतोष नागर, (नाती) झालरा पाटन (राज.)

चल समारोह के साथ हुआ श्रीमद् भागवत का समापन

पं. मोक्ष नागर, **उज्जैन** के सान्निध्य में ग्राम तुलाहेड़ा, उज्जैन में चल रही भागवत कथा का विधिवत समापन हुआ एवं चल समारोह निकाला गया। सप्त दिवसीय ज्ञान गंगा में श्री नागर ने बताया कि

भगवान को प्रसन्न करने का साधन धन नहीं है, परन्तु भगवान को जो प्रसन्न करले उसे फिर धन की आवश्यकता नहीं रहती, इसीलिये बाई मीरा कहती है, पायो जी मैनें राम रतन धन पायो। अधिक से अधिक भक्तों ने इस ज्ञान यज्ञ में आकर श्रीमद् का रसपान किया। जब चरित्र सुनाए जा रहे थे तो श्रोता भाव विभोर हो गए। श्री नागर ने बताया कि जीवन में आराम को प्राप्त करना है तो राम की शरण में आना पड़ेगा तभी सच्चा आराम मिल सकता है। भगवत भजन के बिना मानव तन की गति नहीं है। कलियुग केवल नाम अधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा के साथ इस कथा का समापन हुआ। कथा समाप्ति के बाद कथा व्यास पं. मोक्ष जी का सम्मान किया गया तत्पश्चात चल समारोह निकाला गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। कथा के सुचारू रूप से संचालन में श्री अजयप्रकाश मेहता, श्री बनेसिंह सिसोदिया, श्री मनीष मेहता, श्री सुनील नागर आदि का सराहनीय योगदान रहा।

गणतंत्र दिवस पर किया गया सत्याग्रह का मंचन

उज्जैन। दिनांक 26 जनवरी को मोक्ष सुरभि सांस्कृतिक संस्था, उज्जैन द्वारा गणतंत्र दिवस के अंतर्गत नागर हाटकेश्वर देवालय, उर्दुपुरा उज्जैन में भक्त प्रल्हाद पर आधारित नाटक 'सत्याग्रह' का मंचन किया गया। जिसमें बताया गया कि सत्याग्रह शब्द भक्त प्रल्हाद के सत्य आग्रह के कारण ही प्रचलन में आया है। गजेन्द्र कुमार नागर के संगीत एवं निर्देशन से परिपूर्ण इस नाटक में मुख्य भूमिका हिरण्यकश्यपु के रूप में जितेन्द्र पटेल ग्राम रातडिया, प्रल्हाद के रूप में जसप्रीत, महारानी के रूप में किरण राजपूत, भगवान विष्णु व नृसिंह के रूप में संदीप गरवाल, भगवान ब्रम्हा के रूप में सुभाष नागर, लोभीलाल के रूप में लखन गुर्जर एवं अन्य भूमिका में मारिया डिसूजा, रिया ठाकुर, गिरीश धनवानी, सोनम भारती, शीतल शर्मा, प्रकाश गुर्जर, रितिका वर्मा आदि ने सराहनीय भूमिका निभाई। प्रस्तुति में सुधीर नागर, संजय जोशी, मनीष मेहता, सौरभ नागर,सुभाषसिंह भाटी, रवि शर्मा, ओम नागर, घनश्याम पंड्या आदि का प्रमुख योगदान रहा। जानकारी देते हुए संस्थाध्यक्ष श्रीमती सुरभि नागर ने बताया कि इस नाटक का मंचन अधिक से अधिक स्थानों पर किया जाएगा, जिससे जन सामान्य तक यह सत्य गाथा पहुँचाई जा सके। अंत में आभार संस्था के उपाध्यक्ष धनश्याम पंड्या ने माना।

अनुकरणीय

इंदौर-उज्जैन के लिए समाजजनों को निःशुल्क बस सेवा

शाजापुर से राजराजेश्वरी ट्रेवल्स की इंदौर एवं उज्जैन के लिए चलने वाली सभी बसों में नागरजनों को नि:शुल्क बस सेवा प्रदान की जाती है। ट्रेवल्स के श्री अशोक नागर ने बताया कि इस अनूठी सेवा का लाभ वे सभी जरूरतमंद समाजजनों को देना चाहते हैं, जो बीमार या वृद्ध हों। जिन्हें बार-बार इलाज के लिए इंदौर जाना पड़ता है। ऐसे सभी यात्रियों के साथ एक सहयोगी को भी नि:शुल्क यात्रा की पात्रता रहती है। ज्ञातव्य है कि शाजापुर में नागर समाज के 125 से अधिक परिवार निवास करते हैं, तथा ज्यादातर नौकरी में है। समाजजनों की सुविधा हेतु उन्होंने अनूठी सेवा प्रारम्भ की है, इस सम्बन्ध में उनसे मोबाइल पर सम्पर्क किया जा सकता है।

श्री आशुतोष रावल द्वारा विद्याअध्ययन हेतु रू 21000/- भेंट

रतलाम। रतलाम के श्री आशुतोष रावल सुपुत्र श्रीमती इन्दु रामचन्द्रजी रावल द्वारा अनुकरणीय पहल करते हुए रतलाम के जरूरतमंद विद्यार्थियों की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु म प्र नागर ब्राह्मण परिषद रतलाम शाखा के अध्यक्ष श्री विभाष मेहता को रू.21000/- की निधि प्रदान की है। श्री आशुतोष रावल की शिक्षा रतलाम में रहकर ही हुई थी व आज वे एक कंपनी में एम डी के रूप में सेवा दे रहे है। इस निधि के द्वारा उन्होंने न केवल रतलाम नागर समाज से अपने जुड़ाव को अभिव्यक्त किया है, अपितु समाज की जरूरतमंद प्रतिभाओं के उज्जवल भविष्य में भी सहयोग करने की अपनी भावना व्यक्त की है। रतलाम शाखा द्वारा रावल परिवार का इस सहायता के लिये आभार व्यक्त किया गया।

मठ स्थित श्री हाटकेश्वर मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु सहयोग के लिए बढ़े हाथ

रतलाम। म प्र नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा रतलाम द्वारा म प्र नागर युवक मंडल के संगठन सचिव श्री धर्मेन्द्र नागर के निर्देशन में प्रारम्भ किये गये मठ स्थित श्री हाटकेश्वर महादेव मन्दिर के जीर्णोद्धार कार्य के लिये शहर एवं अन्य स्थानों से समाज बन्धुओं की ओर से उत्साह के साथ सहयोग राशि प्रदान किये जाने का क्रम निरन्तर जारी है. लगातार प्राप्त हो रहे सहयोग से उत्साहित कार्यकारिणी सदस्यों ने जीर्णोद्धार के कार्य को निरन्तर जारी रख कर महाशिवरात्रि पर्व के पूर्व नवीन सज्जा व भव्य सजावट के साथ पुनः समाजजनों को समर्पित किया गया। इस अवसर पर आचार्य पं रमेशचन्द्र जी भट्ट सा के निर्देशन में श्रीमती ज्योति मेहता व श्री नवनीत भाई मेहता द्वारा अभिषेक व पूजन किया गया । इस अवसर पर महा आरती का आयोजन किया गया जिसमें गणमान्य नागरिकों के साथ सी एस पी श्री वर्मा व औद्योगिक क्षेत्र थाना टी आई श्री राणावत भी शामिल हुए। सायंकाल समाज के होनहार इंजीनियरिंग छात्र चि प्रशांत सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र नागर द्वारा भगवान श्री हाटकेश्वर का आकर्षक श्रंगार किया गया व भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसका समाजजनो ने भरपूर आनन्द अनुभव किया। इस अवसर पर समाज के अध्यक्ष श्री विभाष मेहता उपाध्यक्ष श्री सुशील नागर सचिव श्री शरद मेहता सह सचिव श्री हरीश नरसी मेहता व श्री हेमन्त भट्ट कोषाध्यक्ष श्री ओंकारलाल नागर व मीडिया प्रभारी श्री विष्णुदत्त नागर ने सभी सहयोग दाताओं का आभार व्यक्त किया।

इसके अलावा मन्दिर में त्रिशुल डमरू श्री शरद मेहता व 2 घंटियां श्री सुशील नागर एवं श्री रविशंकर दवे एवं पिलसोद श्री दुर्गादासजी मेहता की ओर से भेंट किये गये ।

आर्थिक सहयोगदाताओं की सूची :-

श्री नारायण प्रसादजी मेहता	रू 11000
श्रीमती किरण शशिकांतजी मेहता	रू 11000
श्री शांतिलालजी शर्मा	रू 1500
श्री कृष्णकांतजी व्यास	रू 1100
श्री विभाषजी मेहता	रू 1100
श्री रविशंकरजी दवे	रू 1000
श्री योगेन्द्र जी नागर	रू 1000
श्री सुशील जी नागर	रू 1000
श्री कस्तुरबा नगर पिकनिक सदस्य	रू 1100
श्री दुर्गादासजी मेहता	रू 1001
श्री राधश्यामजी व्यास	रू 500
श्री कालुरामजी व्यास	रू 1001
श्री सतीश सूर्यकांतजी मेहता	रू 500
श्रीमती निर्मला रमणभाई मेहता मुंबई	रू 501
श्री रामेश्वरजी मेहता	रू 501
श्रीमती कुमुदबेन भट्ट	रू 500
श्री मोहनलालजी नागर	रू 501
पं रमेशचन्द्रजी भट्ट	रू 500
श्रीमती शकुन्तला मिश्रा	रू 500
श्रीमती सावित्रीदेवी शशिकांतजी मेहता	रू 500
योग	रू 36305/-

स्व श्रीमती बबलीबेन नारायणीबाई मेहता की स्मृति में रू 11000/- भेंट

रतलाम। मठ स्थित श्री हाटकेश्वर महादेव मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु अनुकरणीय पहल करते हुए श्रीमती किरण शशिकांतजी मेहता द्वारा अपनी सासुमां की पावन स्मृति में समाज को 11000/- की भेंट कर सहयोग प्रदान किया । स्व श्रीमती बबलीबेन मेहता ने अनेक वर्षो तक प्रतिदिन मठ स्थित श्री हाटकेश्वर महादेव की पूजन अर्चन एवं अभिषेक कर सेवा की थी । अध्यक्ष श्री विभाष मेहता एवं समस्त समाजजनों ने इस अवसर पर श्रीमती बबलीबेन मेहता की सेवाओं का स्मरण कर मेहता दंपति द्वारा उनकी स्मृति में प्रदान किये गये आर्थिक सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया गया ।

मंदिर जीर्णोद्धार में सहयोग

श्री उमाशंकर व्यास निवासी आणंद गुजरात द्वारा नागरवास स्थित हाटकेश्वर मंदिर में श्री रामेश्वरजी मेहता के निर्देशन में रू 5000/- की लागत से टाईल्स लगवाकर मंदिर के जीर्णोद्धार में सहयोग किया गया। श्री उमाशंकरजी व्यास मूल रूप से ग्राम मडावदा जिला उज्जैन के निवासी है। म प्र नागर ब्राहम्मण परिषद शाखा रतलाम द्वारा श्री व्यास का आभार व्यक्त किया गया।

मां कनकेश्वरी के आंगन में बही भक्ति की बयार

मालव माटी के गुरूजी पं. राजेश्वर जी नागर की भागवत कथा का हुआ समापन

शाजापुर। नगर से नौ किलोमीटर दूर ग्राम करेड़ी स्थित मां कनकेश्वरी देवी मंदिर परिसर में विगत सात दिनों से मालव माटी के संत पं. राजेश्वरजी नागर के मुखारविंद से जारी श्रीमदभागवत कथा का समापन शनिवार को कलश यात्रा निकालकर किया गया। इस अवसर पर आयोजित महायज्ञ की पूर्णाहुति भी सम्पन्न हुई। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर धर्म का लाभ लिया। कथा समापन अवसर पर मालव माटी के संत पं. राजेश्वरजी नागर ने भगवान की विभिन्न लीलाओं का वर्णन किया और घर-घर गीता का संदेश पहुंचाने का आह्वान श्रद्धालुओं से किया गया। पं. नागर ने सुदामा और भगवान श्रीकृष्ण की मित्रता की कथा सुनाई गई। रोचक ढंग से दोनों मित्रों के संवाद सुनाए। उन्होंने इस कथा के माध्यम से लोगों के बीच निस्वार्थ मित्रता का संदेश दिया। इसके पूर्व श्रोताओं ने सात दिवसीय कथा में भागवत का महत्व, भगवान का जन्म, ध्रुव की कथा, बृज की कथा, इंद्र का मर्दन सहित कई महत्वपूर्ण संवाद सुनाए थे। इस अवसर पर पंडित जी द्वारा प्रस्तुत किए गए भजनों पर श्रद्धालु भावविभोर हो गए। इस अवसर पर मंदिर परिसर में विगत सात दिनों से जारी महायज्ञ की पूर्णाहुति भी पंडितों द्वारा संपन्न कराई गई। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने शामिल होकर यज्ञ में आहुतियां दी। भागवत कथा के समापन अवसर पर ग्राम में कलश यात्रा निकाली गई। जिसमें मालव माटी के संत पं.राजेश्वरजी नागर सहित बड़ी संख्या में भक्तजन शामिल थे। कलश यात्रा का ग्राम में विभिन्न स्थानों पर ग्रामीणजनों द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

पीपलरावां में महाशिवरात्रि पर विशेष आयोजन

शिवरात्रि के पावन पर्व पर पीपलरावां में भगवान हाटकेश्वर का परिषद के प्रतिनिधि के रूप में अध्यक्ष राजेन्द्र शुक्ल ने सपत्नीक दुग्धाभिषेक किया। इस अवसर पर नागर समाज के सभी स्त्री, पुरुष, बच्चे सम्मिलित हुए। अभिषेक के पश्चात आरती व प्रसाद वितरण किया गया।

इसके उपरान्त भगवान हाटकेश्वर के सानिध्य में समाज की एक बैठक आयोजित की गई। श्री त्रिभुवनलाल जी मेहता ने एक प्रस्ताव रखा कि स्थानीय परिषद के सदस्यों ने ब्याज मुक्त ऋण दिया है उसे स्वेच्छा से शिवरात्रि के पावन पर्व पर भगवान हाटकेश्वर के चरणों में अर्पित कर दे तो उचित होगा। इस प्रस्ताव पर वहां उपस्थित सदस्यों में से श्री त्रिभुवनलाल जी मेहता द्वारा 11000/- रू., श्रीमती मनोरमा नागर द्वारा 10,000/- रू. भगवान हाटकेश्वर के चरणों में अर्पित किए गए तथा अन्य दानदाताओं से भी यह अपेक्षा की। अध्यक्ष राजेन्द्र शुक्ल ने बताया कि ब्याज मुक्त ऋण 2,96000 रू. के लगभग था, अब उसमें से 1,71000 रू. का भुगतान कर दिया गया है। शेष की भुगतान प्रक्रिया चल रही है। इस अवसर पर श्री चन्द्रकांत व्यास, श्री चन्द्रकांत त्रिवेदी, श्री रमेश चन्द्र नागर, श्री धर्मेन्द्र मेहता, श्री अशोक व्यास, श्री सुरेश त्रिवेदी भी उपस्थित थे।

कुम्हारिया खास में सामूहिक विवाह सम्मेलन 23 अप्रैल को

सर्व ब्राह्मण समाज पंददशम् सामूहिक विवाह सम्मेलन 23 अप्रैल 2015 को मनकामनेश्वर मंदिर कुम्हारिया खास (शाजापुर) में आयोजित किया जा रहा है। पंजीयन हेतु वर-वधू से अलग-अलग राशि 10500 रु. निर्धारित की गई है। अतः समस्त स्वजातीय बंधुओं से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर सम्मेलन को सफल बनाएं। पंजीयन की अंतिम तिथि 10 अप्रैल 2015 है। आयोजन के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी एवं आरक्षण के लिए संयोजक पं. मोहनलाल नागर 'शिक्षक', मो. 9926805150, 8349498090, अध्यक्ष पं. सत्यनारायण शर्मा मो. 9993437911, सचिव पं. रमेशचंद्र नागर मो. 9406644184, 9827973380, कोषाध्यक्ष पं. लक्ष्मीनारायण व्यास मो. 9893094833 से सम्पर्क किया जा सकता है।

डॉ. मेहता को बधाई

देवास। नागर समाज के वरिष्ठ शिक्षाविद् मानस स्नेही डॉ. श्री नरेन्द्र कुमार मेहता उज्जैन द्वारा गत दिनों रामकथा से सम्बद्ध विभिन्न रोचक प्रसंगों पर किए गए गहन एवं उच्च स्तरीय शोध कार्य के प्रति हिन्दी विद्यापीठ द्वारा उसके 19वें वार्षिक अधिवेशन में विद्यापीठ के कुलसचिव डॉ. श्री देवेन्द्र नाथ साहा ने डॉ. श्री मेहता को मानस शिरोमणी की उपाधि से अलंकृत किए जाने पर नागर परिषद शाखा पीपलरावां के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री हरिनारायण नागर, निवृतमान शाखा डाकपाल सौ. शकुन्तला नागर, सौ. बिन्दुबाला मेहता सहित पूरे परिवार ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई दी तथा भविष्य में उनकी लेखनी के और भी मुखरित होने की शुभाकांक्षा की।

शाजापुर में सम्पर्क

मासिक जय हाटकेश वाणी पत्रिका में समाचार, विज्ञापन एवं अजीवन सदस्य बनने के लिये श्री आशीष नागर (पप्पू) से सम्पर्क करे इनका मो-9407422833 है!!!!

खंडवा में महाशिवरात्रि का आयोजन

खंडवा में महाशिवरात्रि 17 फरवरी 2015 को धूमधाम से मनाई गई। नागर ब्राह्मण समाज ने परम्परागत तरीके से श्रंगार, पूजन, आरती का आयोजन किया। साथ ही शिवजी की बारात नगर के मुख्य मार्गे पर निकाली गई।

- सरोज कुमार जोशी

सुभाष नागर अध्यक्ष मनोनीत

नागर ब्राह्मण समाज के पदाधिकारियों का निर्वाचन शनिवार को सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वानुमति से समाज पदाधिकारियों का चयन किया गया। आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए राजेश नागर ने समाज की कार्यकारिणी का दो वर्षीय कार्यकाल समाप्त हो जाने से नयी कार्यकारिणी बनाए जाने का प्रस्ताव रखा। तदनुसार पं. द्विजेन्द्र व्यास को मुख्य परामर्शदाता बनाया गया। समाज के अध्यक्ष के रूप में सुभाषचन्द नागर, सचिव संजय नागर, सह सचिव धर्मेन्द नागर, कोषाध्यक्ष हेमेन्द्र नागर, उपाध्यक्ष चेतन शाह, मीडिया प्रभारी शशांक नागर मनोनीत किए गए। कार्यकारिणी में देवेन्द्र कोठारी, मितेष नागर, अनमोल नागर, तन्मय नागर, मेघनगर से डॉ. जितेन्द्र नागर, पुष्पेन्द्र नागर को भी लिया गया।

दास्ताखेड़ी में श्रीमद् भागवत ज्ञान यज्ञ, प्राण प्रतिष्ठा एवं सामूहिक विवाह

सुप्रसिद्ध प्रवचनकार पं. विनोद नागर 'गोविंद जाने' के गृहगांव दास्ताखेड़ी में श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा यज्ञ का आयोजन 11 से 17 फरवरी 2015 तक हुआ। 17 फरवरी को यहां निर्मित भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम हुआ तथा 11 जोड़ों का सामूहिक विवाह भी महाशिवरात्रि के दिन सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि पं. नागरजी ने भव्य मंदिर निर्माण करवाया है, जिसमें भगवान शंकर के द्वादश ज्योतिर्लिंग संत नरसी मेहता, नानीबाई के मायरे का दृश्य, राधाकृष्ण एवं सबसे ऊपरी मंजिल पर राजा हरीशचंद्र, भगवान विष्णु, माता तारामति एवं पुत्र रोहित की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित थे। पं. विनोद नागर (गोविन्द जाने) ने इस अवसर पर कहा कि माता-पिता की सेवा, गौसेवा, सूर्यदर्शन, तुलसी पूजन पूर्ण श्रद्धा से करने वाले व्यक्ति का तेरहवां करने की जरूरत नहीं होती, शास्त्र एवं सत्संग से प्राप्त शिक्षा के अनुसार जीवन को ढाल लिया तो मोक्ष अवश्यम्भावी है। धार्मिक, वैवाहिक एवं श्रद्धापूर्वक किए गए प्राण प्रतिष्ठा आयोजन की बयार से पूरा क्षेत्र बल्कि दूर-दूर तक शांति एवं सद्भावना की स्थापना हुई।

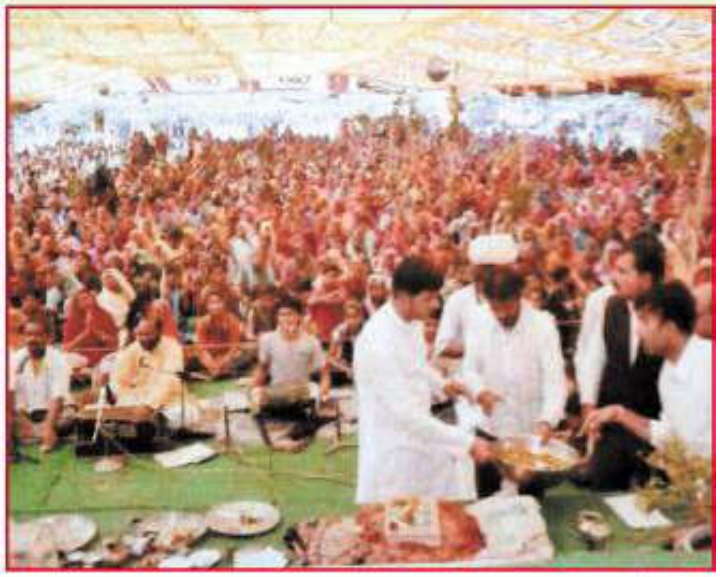

राऊ में नागर समाज की सखी सहेलियों की सेवा गतिविधि

राऊ में नागर समाज की महिला सदस्यों ने 'सखी-सहेली' संस्था की शुरुआत की है, तथा आपसी मेलजोल के साथ सेवा गतिविधियों का संकल्प लिया है।

ज्ञातव्य है कि राऊ में लगभग 50 नागर परिवार है तथा यहां समाज की गतिविधियां ठप सी थी। नागर महिला सदस्यों ने स्थानीय संगठन को मजबूत बनाने के उद्देश्य से 'सखी सहेली' संस्था की शुरुआत की तथा 8 फरवरी 2015 को एक बैठक बुलाई गई। महिला सदस्यों ने प्रतिमाह एकत्र होकर नियमित कार्यक्रम करने तथा कोई न कोई सेवा गतिविधि करने का संकल्प लिया। जिसके अंतर्गत शासकीय अस्पताल में महिला सदस्यों ने बिस्किट वितरण किए।

आगामी बैठक 8 मार्च को

'सखी-सहेली' की आगामी बैठक 8 मार्च को होगी, जिसमें कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई जावेगी तथा गौशाला में जाकर गायों को घास खिलाई जाएगी।

महिला सदस्यों ने भजनों का आनन्द लिया

नागर महिला मंडल की सदस्यों ने फरवरी माह में शिवरात्रि के अवसर पर भजन के आयोजन का आनंद लिया। आगामी मार्च माह में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के बारे में चर्चा की। - ***मृदुला त्रिवेदी***

हाटकेश्वर जयंती महोत्सव एवं प्रतिभा सम्मान 3 अप्रैल को

इंदौर में हाटकेश्वर जयंती महोत्सव 3 अप्रैल को धूमधाम से मनाया जाएगा, इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत नागर समाज की प्रतिभाओं का सम्मान भी किया जाएगा। म.प्र. नागर परिषद शाखा इंदौर के अध्यक्ष श्री जयेश झा एवं सचिव श्री राजेन्द्र व्यास ने बताया कि सूरज नगर स्थित समाज के मंदिर पर प्रातः 9 बजे भगवान हाटकेश्वर का श्रंगार, पूजन, अभिषेक, आरती तथा 12.30 बजे खजराना में घाटी पर स्थित हाटकेश्वर मंदिर में श्रंगार, पूजन, अभिषेक, आरती का आयोजन किया जाएगा। शाम 7 बजे स्पुतनिक सभाग्रह प्रेस कॉम्पलेक्स में साधारण सभा एवं प्रतिभा सम्मान समारोह एवं समापन पश्चात प्रसाद का आयोजन किया जावेगा। सभी समाजजन इन कार्यक्रमों में सादर आमंत्रित हैं।

इंदौर ने उज्जैन को हराया

शाजापुर में मप्र नागर युवा परिषद द्वारा आयोजित हुए नरसी मेहता कप क्रिकेट प्रतियोगिता में इंदौर की टीम को नागर परिषद के प्रदेश अध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी टमटा द्वारा विजयी केप व बेट दिखाकर रवाना किया गया। प्रतियोगिता में रोमांचक मैच में इंदौर की टीम ने उज्जैन को 9 विकेट से हराया। मैच का मुख्य आकर्षण प्रमुख संजय नागर 3 ओवर में पांच विकेट, अधिराज दवे के 40 रन एवं तेजस्वी नागर के 22 रन रहे। टीम में अभिनव दवे, मनोज मेहता, केदार रावल, यश नागर कप्तान, अधिराज दवे, अरुण मेहता, विशाल पुराणिक, तेजस्वी नागर, प्रमुख नागर, आकाश पुराणिक, शुभम नागर रहे।

नागर महिला मंडल की बैठक 24 मार्च को

नागर महिला मंडल की मासिक बैठक 24 मार्च 2015 मंगलवार को 3.30 बजे से आयोजित है। श्रीमती लक्ष्मी उपाध्याय नवरात्रि और गायत्री साधना तथा उसका प्रभाव पर चर्चा करेंगी। सभी महिला सदस्यों से अनुरोध है कि उपस्थित रहें तथा एक-दूसरे को सूचित कर देवें। उपरोक्त बैठक श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास विजयनगर में होगी। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें। - ***श्रीमती शारदा मंडलोई, मो. 9425085052***

आर्शीवाद से मिलता है सब कुछ

कहा जाता है कि माता-पिता के सत्कर्मों का लाभ उनकी सन्तानों को मिलता है, तथा उनके आशीर्वाद से ही सन्तान सुखी सम्पन्न और यशस्वी होती है। हमारे बाबूजी श्री शिवप्रसाद जी शर्मा जहां मौन साधक थे, हमारी बेन श्रीमती प्रभादेवी शर्मा घर बाहर सबसे खूब बातें करना तथा उतना ही प्रेम भी रखना, किसी को भी अपना बनाने की कला उनमें थी, उन्होंने सेवा को अपना धर्म माना तथा सबके सुख दु:ख में शामिल होना कर्तव्य। आज सब कहते हैं कि बेन के किसी भी कार्यक्रम में होने से जो शान बढ़ जाती थी, वह कमी पूरी नहीं हो पाएगी। प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व होता है। उनके धर्म एवं कर्तव्य को हम लोगों ने भी आत्मसात किया। सेवा के मौके पर आगे रहना तथा परिवार, रिश्तेदारी, समाज में प्रत्येक सुख-दु:ख में उपस्थित रहने का कर्तव्य हमने भी आगे बढ़ाया है। वह बात तो नहीं है, परन्तु प्रयास अवश्य कर रहे हैं। आज के जमाने में जब लोग अपने परिवार के आगे की ही नहीं सोच सकते तो समाज बहुत आगे की बात हो जाती है। परन्तु हमने यह जरूर पाया है कि जब आप अपने दिवंगत परिजनों के आदर्शों-सिद्धान्तों को अपना कर उनके सद्कार्यों-विचारों को जारी रखते हैं तो उनके आशीर्वाद मिलते ही हैं। वे ही आपको शक्ति सम्पन्न बनाते हैं। तमाम अवरोधों और संघर्षों के विरुद्ध आपको शक्ति मिलती है, बल्कि ऐसा लगता है कि उनकी आत्मा-परमात्मा में समाहित होने के बाद अधिक शक्तिशाली एवं कारगर हो जाती है। यह सब बातें अनुभव में तभी उतरती हैं, जब उन्हें महसूस किया जाए। सन्तान को अच्छी तरह पता होता है कि उनके माता-पिता क्या चाहते हैं, उनकी क्या भावना है, क्या पसंद है। उनकी इच्छाओं का यदि ध्यान रखा जाए तो सन्तान का जीवन धन्य ही समझो, क्योंकि भगवान को किसी ने नहीं देखा,लेकिन माता-पिता में विष्णु-लक्ष्मी के दर्शन अवश्य किए जा सकते हैं। हमने भी अपने माता-पिता में जो सद्गुण देखे... उन्हें अपने जीवन में उतारा और पाया कि न तीर्थ जाने की आवश्यकता है, न सत्संग की... अपने माता-पिता के अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाते जाओ और पार उतर जाओ। ऐसा नहीं है कि उन्होंने केवल सेवा और कर्तव्य का पथ ही बताया... अध्यात्म मार्ग तक भी उंगली पकड़कर ले गए। बेन का नियम था सुबह उठकर गोवर्द्धननाथ मंदिर जाने का... वे कभी, कभार हमें भी ले जाते। लेकिन उनके जाने के बाद हम तीनों भाईयों ने प्रात: काल मंदिर जाने का नियम बना लिया, प्रात: काल मंगला आरती में। अब ऐसा लगता है कि माता-पिता के बताए रास्ते पर चलने की शक्ति भगवान श्रीकृष्ण प्रदान कर रहे हैं तथा माता-पिता के आशीर्वाद बोनस के समान हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे हमारे साथ ही हैं पहले सशरीर थे, अब आशीर्वाद रूप में, लेकिन साथ जरूर हैं...

- दीपक-संगीता, पवन-दुर्गा, मनीष-सीमा, ज्योति-श्री राजेन्द्र जी नागर, पुनीत-मीनल, श्रद्धा-श्री मनीषजी, प्रबल, यशस्वी, दिव्यांश, श्रुति, श्रेया, मिष्ठी एवं समस्त शर्मा-नागर परिवार

'सांध्य जत्रा' में जूट उत्पादों का प्रदर्शन

14-15 फरवरी 2015 'सांध्य जत्रा' अन्नपूर्णा रोड, मराठी सोश्यल ग्रुप एवं सहकार समिति राजेन्द्र नगर आयोजक जत्रा लघु सहकारी उद्योग एवं विभिन्न प्रकार के व्यंजन झोन का उद्देश्य लिए हुए थी। पर्यावरण रक्षक जूट प्रॉडक्ट (जूट से निर्मित विभिन्न वस्तु) का एक स्टाल नागर जोशी, भार्गव परिजनों के सक्रिय सहयोग से श्रीमती श्रुति-अपूर्व नागर द्वारा संचालित किया। इस कार्य में लघु उद्योग योजनान्तर्गत भोपाल स्थित एक एन.जी.ओ. का सहयोग भी मिला। स्टाल पर जूट से निर्मित पर्स, हैंड पर्स, बेगज स्लाइटर बेग, बैगज (छोटे-बड़े) बहुउद्देश्यीय बेग, प्रस्तुतिकरण फाईल, एक्जीक्युटिव बेग, वाटर बॉटल बेग, समाचार, पत्रिका हेंगिग्ज आदि विभिन्न आकार, रंग सजावट, आकर्षक मिश्रित रंग प्रकार के जूट प्रॉडक्ट विक्रयार्थ प्रदर्शित किए गए। यह स्टॉल जनता के आकर्षण का केन्द्र रहने के साथ समुचित रिस्पांस भी मिला। इसी के माध्यम से प्रदूषण रक्षा एवं प्लास्टिक के मुक्ति का संदेश भी प्रसारित हुआ।

- पी.आर. जोशी
उषानगर एक्स., इंदौर

डॉ. आर.सी. नागर का सम्मान

झालावाड (राज.) में 26 जनवरी 2015 को आयोजित गणतंत्र दिवस सम्मान समारोह में श्री राजेन्द्र सार्वजनिक चिकित्सालय झालावाड़ में पदस्थ सीनियर प्रोफेसर डॉ. आर.सी. नागर को जिला कलेक्टर श्री विष्णु चरण मल्लिक ने सम्मानित किया। अस्पताल के लिए अपने निर्धारित समय से अतिरिक्त समय देकर निस्वार्थ भाव से सेवा कर मरीज सोनू सिंह गंभीर बीमार का आपरेशन कर कर्तव्य पालन निष्ठापूर्वक करने का सराहनीय कार्य करने पर डॉ. नागर को प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। बधाई!

लक्ष्य की पूर्णता पर डॉ. व्यास सम्मानित

अंधत्व निवारण कार्यक्रम के तहत वर्ष 2014 में मोतियाबिंद आपरेशन के 16 हजार के लक्ष्य को 16 हजार 700 तक तथा चश्मा वितरण के लक्ष्य में 4000 की बजाय 8112हितग्राहियों को इसका लाभ देने पर। गणतन्त्र दिवस पर उज्जैन के प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप व्यास जी को इस उत्कृष्ट उपलब्धि पर सम्मानित किया गया। इस दौरान शिक्षा मंत्री पारस जी जैन, कलेक्टर कविन्द्र कियावत जी, पुलिस अधीक्षक एम.एस. वर्मा के साथ ही अन्य गणमान्य जन उपस्थित थे।

श्री अम्बुज नागर को पदोन्नति

श्री अम्बुज नागर (सुपुत्र-वरिष्ठ अभिभाषक श्री कैलाश नागर-सौ. सलिला नागर, उज्जैन) बहुराष्ट्रीय कंपनी वोडाफोन में डिप्टी जनरल मैनेजर के रूप में पदोन्नत हुए। वे म.प्र. एवं छत्तीसगढ़ का कार्य देखेंगे। श्री नागर आयडिया, रिलायंस, अलकटेल, हुवेई कंपनियों में विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं। श्री नागर फ्रांस, इंग्लैंड, स्वीट्जरलैंड, बांग्लादेश, श्रीलंका, इटली, जर्मनी आदि देशों की यात्रा कर चुके हैं। उक्त जानकारी समाजसेवी श्री कैलाश दुबे इंदौर ने दी। बधाई।

श्री अंकित नागर को उत्कृष्टता पुरस्कार

दिनांक 25 सितम्बर लोक सेवा दिवस के अवसर पर राज्य लोक सेवा अभिकरण लोकसेवा प्रबंधन विभाग मध्यप्रदेश शासन द्वारा अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान के सुशासन भवन में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह जी चौहान द्वारा लोकसेवा केन्द्र शुजालपुर के संचालक श्री अंकित नागर (शाजापुर)को लोक सेवा प्रदाय की गारंटी अधिनियम के क्रियान्वयन में प्रदेश में उत्कृष्ट योगदान हेतु उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री नागर के पुरस्कृत होने पर शाजापुर जिला लोक सेवा प्रबंधक श्री रमेशचन्द्र पण्ड्या, लोक सेवा विभाग एवं जिले के समस्त लोक सेवा केन्द्रों द्वारा हर्ष व्यक्त किया गया।

संजय नागर की जिलाध्यक्ष पद पर नियुक्ति

म.प्र. शासकीय लिपिक वर्ग कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष पद पर श्री संजय मणिशंकर जी नागर को नियुक्त किया गया। पिछले दिनों स्थानीय राधा गार्डन शाजापुर में प्रांताध्यक्ष श्री मनोज वाजपेयी ने उन्हें जिलाध्यक्ष पद पर विधिवत नियुक्ति दी। इस अवसर पर उन्हें नागर समाज के पदाधिकारियों सर्व श्री वीरेन्द्र व्यास, हेमंत व्यास, आशीष नागर (पप्पू), प्रसून मेहता, संजय नागर पार्षद, दिलीप नागर, विवेक मेहता आदि ने बधाई दी।

जोशी एवं नागर परिवार को विजयश्री

22 फरवरी 2015 को स्वच्छ, हरा-भरा, स्वच्छ इंदौर के प्रति जागरूकता लाने के लिए, अकादमी ऑफ इंदौर मेरेथॉन द्वारा 5 कि.मी. वॉक, 10 व 21 कि.मी. मेरेथॉन दौड़ का आयोजन किया। इसमें हजारों नागरिकों ने हिस्सा लिया। जोशी एवं नागर परिवार उषा नगर एक्सटेंशन-प्रकाशनगर की 6 महिला सदस्या एवं 2 पुरुषों ने प्रथम विकल्प 5 कि.मी. वॉक (पैदल चलना गति से) में प्रतियोगी स्वरूप भाग लिया। राजबाड़ा से नेहरू स्टेडियम की दूरी, निर्धारित एक घंटे की समयावधि के पहले ही 45 मिनिट्स में अंतिम छोर पर पहुंच कर विजयश्री का अहसास प्राप्त किया। संस्था ने प्रमाण पत्र प्रदान किए।

कु. प्रिया मेहता को सिंगापुर यात्रा का उपहार

कु. प्रिया मेहता (सुपुत्री-सौ. रजनी, श्याम मेहता, उज्जैन) को मेक्स लाइफ इंश्योरेंस कं. में बतौर फायनेंशियल एक्सपर्ट सिंगापुर यात्रा का उपहार मिला है। ज्ञातव्य है कि कु. प्रिया को उज्जैन में कंपनी में एडवाइजर पद पर टॉप 3 में आने का गौरव प्राप्त है तथा एक माह में पांच लाख पचास हजार के रिकॉर्ड बिजनेस पर सिंगापुर यात्रा का उपहार प्राप्त हुआ है। वे उपरोक्त कंपनी में एक वर्ष से कार्यरत है।

श्री अजय कुमार भट्ट मेट्रो रेल में नियुक्त

श्री अजयकुमार भट्ट (सुपुत्र श्री अमरनाथजी भट्ट एवम दामाद श्री विष्णुशंकरजी मेहता) ने 06 फरवरी 2015 को डायरेक्टर (सिस्टम्स), मुंबई मेट्रो रेल कारपोरेशन लिमिटेड का पदभार ग्रहण किया है। 33.5 कि.मी. लम्बाई की भूमिगत (मुंबई मेट्रो रेललाइन 3) का निर्माण 6 वर्ष की अवधि में (कोलाबा -बांद्रा -अँधेरी सीप्ज़) खंड पर होना है, जिस पर 27 स्टेशन होंगे। एमएमआरसी जो की भारत एवं महाराष्ट्र सरकार का संयुक्त उपक्रम है उसका मुख्यालय मुंबई में बीकेसी में स्थित है। श्री अजयकुमार भट्ट को पदोन्नति एवं डायरेक्टर (सिस्टम्स) का पदभार ग्रहण करने पर नागर समाज की और से बधाई एवं अनेकोनेक शुभकामनायें।

कु. पूजा नागर का सुयश

कु. पूजा नागर (सुपुत्री- पं. श्री दिनेश नागर-सौ. रेखा नागर) उर्दूपुरा उज्जैन की नियुक्ति सेन्टम लर्निंग लिमि. कंपनी में ट्रेनर पद पर हुई है। उपरोक्त कंपनी द्वारा एनजीओ के सदस्यों को वोकेशनल ट्रेनिंग हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। बधाई!

श्रेयांश शुक्ला की रेलवे में नियुक्ति

श्रेयांश शुक्ला (सुपुत्र अल्पना-स्व. श्री कमलेश जी शुक्ला उज्जैन) ने बी.ई. मैकेनिकल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की एवं आपको रेलवे के कमर्शियल डिपार्टमेंट में नियुक्ति दी गई।

कु. नमामि को राष्ट्रीय खिलाड़ी का अवार्ड

द एमराल्ड अंतरराष्ट्रीय स्कूल की छात्रा कु. नमामि आशुतोष जोशी को जूडो खेल का राष्ट्रीय खिलाड़ी वर्ष 2014-15 का अवार्ड प्रदत्त कर सम्मानित किया।

अर्पित मेहता का सुयश

श्री अर्पित मेहता (सुपुत्र-श्रीमती नीलोत्पला डॉ. सुरेश मेहता शाजापुर) अपनी कम्पनी आयएफएफ ओवरसीज प्रा.लि. इंदौर की बिजनेस ट्रीप पर संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयॉर्क, लॉस एंजिलिस, लॉस वेगास सिटी के भ्रमण से 22 फरवरी को इंदौर लौटे। इस पर सभी परिवारजनों, इष्टमित्रों ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

बसन्ती बयार व रंगों की अठखेलियां-

श्री अरविन्द कुमार जोशी- **21 मार्च**
कु. नमामि आ. जोशी- **25 मार्च**
श्रीमती जया-सूर्यप्रकाश नागर- **27 मार्च**
श्रीमती उषा-अरविन्द कुमार जोशी- **28 मार्च**
श्री व्रजेन्द्र कुमार नागर - **31 मार्च**
- जोशी, नागर, जाधव, तिवारी परिवार
- पी.आर. जोशी
528, उषानगर एक्सटेंशन, इंदौर

ज्योतिषाचार्य
पं. विनोद नागर
28वाँ जन्मदिन, 6 मार्च
313, सुखदेव नगर मेन इंदौर
मो. 9977777531,
9089642490

मंगला मेहता (इंदौर) - 8 मार्च
नुपूर झा (कोलकाता) - 11 मार्च

कुलदीप बालकृष्ण नागर
मक्सी जिला शाजापुर
13-03-2003

कुर्यात सदा मंगलम्

सौ. गौरी (सुपुत्री सौ. नीलोत्पला डॉ. सुरेश मेहता शाजापुर) संग
चि. सिंचन देसाई (सुपुत्र-सौ. कृपा-सोम्येश भाई देसाई अहमदाबाद)
29 जनवरी 2015

सौ. कां ऋतु (सुपुत्री-भेरूलाल-सौ. दुर्गा मेहता शाजापुर) संग
चि. अक्षय (सुपुत्र-श्री दिलीप-सौ. संगीता नागर उज्जैन)
18 जनवरी 2015

सौ. कां. पायल (सुपुत्री-दिलीप-शकुन्तला रावल नेवरी) संग
चि. अभिषेक (सुपुत्री- श्री विष्णुकांत जी प्रमिला दवे उज्जैन)
16 फरवरी 2015

चि. सुनील (सुपुत्र-रमेशचंद्र-पार्वतीबाई रावल, राऊ)
संग **सौ. कां. नैना**
(सुपुत्री- श्री नरेन्द्र-सौ. वनमाला, इंदौर)
21 फरवरी 2015

27 फरीवरी 15
चि. विवेक (बबलू)
(सुपुत्र-संजय कुमार-सौ छाया नागर ढाबलाहई) संग
सौ. कां. सरोज
सुपुत्री- श्री पुरुषोत्तमजी- सौ. कलादेवी नागर, उज्जैन
सौ. कां. दिव्या
(सुपुत्री-संजय कुमार सौ. छाया नागर) संग
चि. अंकित
(सुपुत्र-श्री कैलाशचंद्र-सौ. नीता नागर, रंथभंवर

मिनी-समीर जोशी- 24 फरवरी

(पिताजी राकेश पाठक इटारसी)
शुभाकांक्षी- पाठक परिवार इटारसी एवं जोशी परिवार मुलुंड, त्रिवेदी परिवार, खंडवा।

सौ. कृष्णा अतुल (इंदौर)
11 मार्च
- गायत्री मेहता

वैवाहिक प्रस्ताव (युवक)

लोकेन्द्र डॉ. गौरीशंकर शर्मा

जन्मतिथि - 07-02-1985
समय - 9.35 स्थान- शाजापुर
शिक्षा - मास्टर इन मास कम्युनिकेशन एंड जर्नलिज्म (युनिवर्सिटी टॉपर) बीएससी (मैथ्स)
कार्यरत -स्वव्यवसाय सीमेंट स्टाकिस्ट
सम्पर्क - माकड़ोन
मो.
073692611424
09826568528

जयप्रकाश राजेन्द्र प्रसाद नागर

जन्मतिथि - 21-06-1989
समय - 6.55 (गौत्र-सवितान)
शिक्षा - एम.ए., बी.एड. (हिन्दी साहित्य) प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी,
कार्यरत - प्रायवेट शिक्षक
सम्पर्क- ग्रा.पो. बनेठा तह. उनियारा जिला टोंक
मो.
09694318780,
09887990437

अतुल राजेन्द्रजी व्यास

जन्म- 06.08.1988
समय- रात्रि 3.43, मडावदा तह. खाचरोद
गौत्र- शार्कराक्ष
शिक्षा- एम.ए.
कार्यरत- फोटोग्राफी, फोटो स्टुडियो, मोबाइल पाइंट, एलबम डिजाइनर
सम्पर्क-

वैवाहिक प्रस्ताव (युवती)

कुसुम दिनेश नागर

जन्मतिथि - 01.07.1996,
शिक्षा- एम.ए.,
सम्पर्क- रंथभवर, जि. शाजापुर
मो. 9926879505

शिवानी सुभाष नागर

माताजी- श्रीमती कमलेश नागर
समय - 12.57पीएम
स्थान - रावतभाटा (राज.)
जन्मतिथि - 20-07-1992 (मांगलिक)
शिक्षा - बीए, बेसिक कम्प्यूटर
सम्पर्क - 09414092463

ज्योति राजेन्द्र प्रसाद नागर

जन्मतिथि - 25.08.1992
समय- 03.01, गौत्र-सवितान
कद- 5'2', वजन- 45
शिक्षा- एमए फायनल (समाजशास्त्र)
कार्यरत- प्रायवेट शिक्षिका
सम्पर्क- बनेठा, टोंक (राज.)
मो. 09694318780,
09887990437

अर्पणा अरुण शंकर नागर

जन्मतिथि- 19.02.1993
समय- 1.50पीएम, सवाई माधोपुर
कद- 5'6''
शिक्षा- बी.ए., एम.ए. (अध्य.) आर.टी.ई.टी, ईटीटी (जम्मू)
सम्पर्क- भगवतगढ़, सवाई माधोपुर
मो. 08764076354,
09667290857

निधिका स्व. सुभाषचंद्रजी शर्मा

जन्मदिन- 22.03.1994
समय- 10.50एएम
कद- 5' गौत्र-कश्यप
शिक्षा- बी.कॉम, पीजीडीसीए
सम्पर्क- मक्सी,
मो. 9098372009

कहां से कहां आ गए हम...!

हम नागर ब्राह्मण हैं, हमारी गौरवमयी परम्पराएं हैं, माना कि युग बदल गया है, आज हम सोला पहनकर पूर्ण शुद्धता के साथ स्वयं भोजन बनाकर नैवेद्य नहीं लगा सकते। न ही अनुशासन और प्राचीन रीति रिवाजों के साथ सोला पहनकर पंक्तिबद्ध होकर अन्न का पूर्ण सम्मान करते हुए भोजन कर सकते हैं। लेकिन यह क्या? हमने अपने रीति रिवाज छोड़े, उन्हें दूसरों ने अपना लिया... हम पीछे छूट गए बहुत पीछे। अन्य समाजों में होने वाले कार्यक्रमों को देखो... और हमारे यहां क्या हो रहा है? आयोजनों में अनुशासन बहुत जरूरी है। एक अन्य समाज के तेरहवें के आयोजन में देखा कि वहां पहले महिलाओं और बच्चों को भोजन पर बैठाया जाता है, उसके बाद पुरुष भोजन करते हैं। सबका भोजन खत्म होने के बाद सभी एक साथ आसन छोड़ते हैं। जितना भोजन चाहिए उतना ही लेते हैं तथा झूठा नहीं छोड़ते हैं। कार्यक्रम में आए प्रत्येक व्यक्ति द्वारा यथासंभव व्यवस्था में सहयोग दिया जाता है और हमारे समाज में क्या हो रहा है? किसी भी कार्यक्रम में अनुशासन नहीं। महिला सदस्यों का हल्ला, पुरुषों का पहले भोजन पर बैठना... वहां भी अपने जूते चप्पलों की चिंता ज्यादा... कुछ लोग तो जूते चप्पल के ऊपर ही बैठकर भोजन करते हैं। अपना भोजन खत्म हुआ और उठ जाते हैं, बाकि की कोई चिंता नहीं... झूठा छोड़ना... कार्यक्रम में भी क्या आए क्या गए। कोई सिस्टम नहीं कोई अनुशासन नहीं। इस तरह के आयोजन में एकत्र होने का धार्मिक एवं सामाजिक महत्व है, उस एकत्रीकरण का लाभ समाजोत्थान की चर्चा, आपसी मेल-जोल हेतु किया जा सकता है। लेकिन रुपया-पैसा खर्च कर दूर-दूर तक पहुंचने का लाभ ही नहीं मिल पा रहा है। अन्य समाजों ने हमारी परम्पराओं और रीति रिवाजों को स्वीकार कर लिया और हम उन्हें बहुत पीछे छोड़ आए। तेरहवें का कार्यक्रम किसी आत्मा की विदाई का पल है, परन्तु उसमें संजीदगी और गंभीरता नाम मात्र की नहीं... ये कहां से कहां आ गए हम..।

इस सम्बन्ध में समाजजन अपने विचार 25 मार्च 2015 तक अवश्य भेज देवें हैं। निश्चित समयावधि में प्राप्त विचारों का प्रकाशन अप्रैल माह की पत्रिका में किया जाएगा।

- सम्पादक

विषय - महिला संगीत में परिचय प्रसंग

आँखों-आँखों में परिचय होने दो...

जय हाटकेशवाणी के फरवरी के अंक में उपरोक्त विषय पर पाठकों की ओर से विचार आमंत्रित किये हैं। उक्त संबंध में कुछ व्यंगात्मक विचार प्रस्तुत है जिसे पाठक गण कृपया अन्यथा ना लें एवं मनोरंजन के भाव से लें। उपरोक्त विषय में अर्थात् विवाह समारोह में आयोजित महिला संगीत के दौरान विवाह योग्य युवक-युवती परिचय प्रसंग का आयोजन ज़रा भिन्न प्रतीत होता है एवं संभव होना भी मुश्किल लगता है। कारण निम्न वर्णित है-

यह तो सर्व विदित है कि विवाह विशुद्ध निजि कार्यक्रम होता है एवं इसके एक दिवस पूर्व महिला संगीत का आयोजन होता है जिसमें निमंत्रण भी पारिवारिक सदस्यों, परिचितों, मित्रों आदि को दिया जाता है। ऐसे में विवाह योग्य युवक-युवतियाँ (अगर इन्हीं परिवार में हो तो) परिचय प्रसंग संभव है लेकिन समाज के अन्य परिवारों में उपलब्ध युवक-युवतियो का परिचय प्रसंग नहीं हो पाता क्योंकि उन्हें आमंत्रित नहीं किया होता। यह आवश्यक भी नहीं होता कि समाज के हर महानुभाव को सपरिवार महिला संगीत में आमंत्रित किया गया हो जबकि उन परिवारों में वैवाहिक बालक-बालिकाएँ उपलब्ध हो। अरे, आजकल तो रिश्तेदारों तक को विवाह कार्यक्रम में भूल जातें हैं तो फिर महिला संगीत की क्या बात हो। तो ऐसे में उपरोक्त केन्डीडेट्स परिचय से वंचित रह जाते हैं और यह प्रसंग अधूरा सा महसूस होता है। उसी प्रकार कई आमंत्रित परिवार जो दूरस्थ निवास करते हैं वे समय अभाव के कारण महिला संगीत में शिरकत नहीं कर सकते जबकि उनके यहाँ भी योग्य युवक-युवतियाँ होती हैं। कई बच्चे (वैवाहिक) जॉब में अन्य शहरों में व्यस्त रहतें है एवं आमंत्रित होते हुए भी तशरीफ नहीं ला पाते। तो उक्त परिस्थितियों में विषय सार्थक नहीं हो पाता। दूसरा, महिला संगीत के दौरान और उसके अलावा कई अन्य कार्यक्रम भी आयोजित होते है, मसलन, एकल नृत्य, सामूहिक नृत्य, गरबा, अंताक्षरी, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता वगैरह। तो इन कार्यक्रमों में व्यस्त रहने वाले परिजन एवं युवक-युवतियाँ परिचय प्रसंग (यदि आयोजित है) का पूर्ण लाभ नहीं ले पाते क्योंकि यह एक गंभीर मसला होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि महिला संगीत के दौरान युवक-युवतियों का परिचय प्रसंग एक क्षणिक प्रसंग एवं मनोरंजक हो सकता है क्योंकि जीवन के संग रहने वाले विषय में अत्यंत अल्प समय में पूर्ण रूप से पारिवारिक जानकारी हासिल नहीं की जा सकती, कारण, ऐसे कार्यक्रमों में परिजन मनोरंजन एवं विभिन्न व्यंजनों का आनंद लेने में ज्यादा मशगुल रहते देखे गए हैं। और यदि उपरोक्त कार्यक्रमों में वैवाहिक युवक-युवतियाँ उपस्थित हैं तो अनौपचारिक रूप से वे एक दूसरे को देखने भालने का कार्य तो कर ही लेते होंगे। प्रत्यक्ष तौर पर नहीं तो कनखियों से ही सही। तो हो गया परिचय प्रसंग। वैसे चाहा गया सुझाव अच्छा है, प्रयास करने में क्या हर्ज है ? जय हाटकेश।

कुदरत को भी नहीं पसंद सख्ती बयान में, इसीलिए शायद नहीं दी हड्डी जुबान में।

-यशवंत नागर (बांसवाड़ावासी)
उज्जैन 08989219599

परफार्मेंस के साथ हो जाए परिचय...

शादी पांच तत्वों-अग्नि, अंबर, धरा, नीर और पवन को साक्षी मानकर उम्रभर के लिए दाम्पत्य जीवन में बंध जाने की पावन बेला को कहते हैं। हमारे जीवन के सोलह संस्कारों में यह सबसे अहम है।

शादी के बारे में एक प्रचलित कथन है- 'मैरिजेज आर सेटल्ड इन द हेवन एंड सोलेमेनाइज्ड ऑन द अर्थ' शादी में खुशियां झूमती है, बहारें गुनगुनाती है, शहनाईयां गूंजती हैं और इस अवसर पर सभी संबंधी एकत्र होते है। क्यों न एकत्र हों- कम से कम एक माह पूर्व से ही मनुहार जो उनके पास पहुंच जाता है, और शादी के निकट आते-आते आग्रह भरा आमंत्रण-

'भेज रहे है नेह निमंत्रण, प्रियवर तुम्हे बुलाने को,
हे मानस के राजहंस, तुम भूल न जाना आने को।'

शादी में सब लोग इकट्ठा हो और वाद्य, सुर, संगीत, नृत्य न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। अतः शादियों में आजकल महिला संगीत के नाम से संगीत संध्या व संगीत निशा का भव्य आयोजन किया जाता है। इसकी पूर्व तैयारियां भी जोर-शोर से की जाती हैं, और इसमें छोटे-बड़े सभी शिरकत करते हैं।

कहते हैं शादी दो अनजान आत्माओं का पावन मिलन है, यह मिलन ईश्वर की अनुकम्पा से ही संभव हो पाता है। ऐसी ही अनजान आत्मायें विवाह योग्य युवक-युवतियों के रूप में इस मौके पर उपस्थित रहती है। अतः इस अवसर पर यदि आयोजनकर्ता पूर्व में ही ऐसे युवक-युवतियों का संक्षिप्त परिचय एकत्र कर ले तथा कार्यक्रम के बीच-बीच में इन युवक-युवतियों को मंच पर बुलाकर उनका परिचय आगंतुकों को दे तो इस अवसर का दोहरा लाभ लिया जा सकता है, याद रहे कि कार्यक्रम का तारतम्य मूलतः बना रहे, कहीं ऐसा न लगे

FILE PHOTO

कि यह तो परिचय सम्मेलन ही हो गया।

इस स्थिति से बचने का एक उपाय यह हो सकता है, इन युवक-युवतियों को पूर्व में ही कोई न कोई परफार्मेन्स देने हेतु मॉटिवेट किया जाए, ताकि वे भी तैयारी से आवें और अपने-अपने परफार्मेन्स द्वारा कार्यक्रम में शिरकत कर सकें। इस प्रकार इनको मंच पर बुलाने से पूर्व, उसके दौरान, और बाद में इनका परिचय दिया जा सके।

अवसर के बारे में गायत्री परिवार के आचार्य पं. श्रीराम शर्मा ने ठीक ही कहा है कि अवसर तो सभी को जिन्दगी में मिलते है- पर उनका सही वक्त पर सही इस्तेमाल कुछ ही लोग कर पाते हैं। किसी शायर ने भी ऐसा ही कुछ कहा है-

कैसे-कैसे ये इश्क के बीमार है,
वो पास बैठे हैं और उन्हीं का इन्तजार है।

बेशक इस छोटे से परिचय से सिर्फ सूरत शक्ल, शैक्षिक उपलब्धि, जॉब स्टेटस आदि ही जान पाते हैं इससे अधिक नहीं, अतः ये परिचय महज हवाई अवधारणा बनाते हैं, किंतु इस परिचय के आधार पर जीवन भर का संबंध आगे बनाने के लिए स्वभाव-व्यवहार, सोच-विचार, पसंदगी-ना पसंदगी, गुणा-भाग, लाभ-हानि आदि जानने के लिये एक लिंक अवश्य मिल जाती है। आखिर शादी महज दो अक्षरों की बात नहीं है वरन् जीवन भर साथ निभाने की एक महती रस्म है।

प्रसिद्ध विचारक प्लेटो के अनुसार-तुम किसी व्यक्ति के साथ एक घंटे खेल कर उसके बारे में इतना ज्यादा जान सकते हो जितना एक साल तक उससे वार्तालाप करके नहीं जान सकते। कहा भी गया है कि पूर्व में ही अच्छी तरह जांच परख लें, फिर किसी अनजान पर भरोसा करें।

'ऐनालाईज वेल बिफोर यू फाईनलाईज'

सच्चाई को ठंडे दिमाग से ही परखें, क्योंकि खौलते हुए पानी में किसी की स्पष्ट परछाई देखी नहीं जा सकती। इसमें जल्दबाजी भी ना करें, क्योंकि इन तीन बातों में जल्दबाजी करने पर नुकसान होने की संभावना बनी रहती है- व्यापार में, यात्रा में और शादी बनाने में।

आपकी सफलता के लिए तो कई लोग जिम्मेदार हो सकते हैं, किन्तु असफलता के लिए केवल आप ही जिम्मेदार होंगे। बेन्जामिन फ्रेकलिंन ने कहा था कि शादी बनाने से पहले अपनी आंखें पूरी खुली रखें व बाद में आधी। ध्यान दीजिये यदि नरभक्षी भी कांटे-छुरी का इस्तेमाल भोजन करने के लिए करें तो वे सभ्य नहीं बन जाते हैं।

प्रसिद्ध चित्रकार लियोनार्डो दा विंची ने तो शादी के बारे में यह मत दिया कि विवाह मछली पाने की चाहत में साँप के थैले में हाथ डालने जैसा होता है। इस बारे में यह कथन भी याद रखे- कल मैं चतुर था अतः पूरी दुनिया को बदल देना चाहता था, किंतु आज मैं बुद्धिमान हूं, अतः मैं स्वयं को ही बदल रहा हूं।

जीवन की वास्तविक सुंदरता यह है कि उसके पास प्रश्न अनेकों व उत्तर कम होते हैं। रूसी लेखक ए. मोरूआ के अनुसार- एक सफल विवाह, एक ऐसा निर्माण है जिसका हर दिन पुनर्निर्माण जरूरी है। अंत में चलते-चलते-

चांद की शोभा कभी इतनी ना होती,
गर उसके साथ एक सितारा ना होता।

- मोरेश्वर मंडलोई
खंडवा

गुड़ी पड़वा-नवसंवत्सर-नववर्ष-वर्ष प्रतिपदा

गुड़ी पड़वा या नववर्ष क्या है?

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा या नववर्ष का आरम्भ माना गया है। 'गुड़ी' का अर्थ होता है विजय पताका । ऐसा माना गया है कि शालिवाहन नामक कुम्हार के पुत्र ने मिट्टी के सैनिकों का निर्माण किया और उनकी एक सेना बनाकर उस पर पानी छिड़ककर उनमें प्राण फूँक दिये। उसने सेना की सहायता से शक्तिशाली शत्रुओं को पराजित किया। इसी विजय के उपलक्ष्य में प्रतीक रूप में 'शालिवाहन शक' का प्रारम्भ हुआ। पूरे महाराष्ट्र में बड़े ही उत्साह से गुड़ी पड़वा के रूप में यह पर्व मनाया जाता है। कश्मीरी हिन्दुओं द्वारा नववर्ष के रूप में एक महत्वपूर्ण उत्सव की तरह इसे मनाया जाता है। इसे हिन्दू नव संवत्सर या नव संवत् भी कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि भगवान ब्रह्मा ने इसी दिन सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी। इसी दिन से विक्रम संवत् के नये साल का आरम्भ भी होता है। सिंधी नववर्ष चेटीचंड उत्सव से शुरू होता है जो चैत्र शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। सिंधी मान्यताओं के अनुसार इस शुभ दिन भगवान् झूलेलाल का जन्म हुआ था जो वरूण देव के अवतार हैं। आज भी हमारे देश में प्रकृति, शिक्षा तथा राजकीय कोष आदि के चालन-संचालन में मार्च अप्रेल के रूप में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही देखते हैं। यह समय दो ऋतुओं का संधिकाल माना जाता है। इसमें रात्रि छोटी और दिन बड़े

हम कैसे मनायें नव वर्ष-नव संवत्सर

नव वर्ष की पूर्व संध्या पर दीपदान करना चाहिये। घरों में शाम को ७ बजे लगभग घण्टा-घडियाल व शंख बजाकर मंगल ध्वनि से नव वर्ष का स्वागत करें। इष्ट मित्रों को एसएमएस, इमेल एवं दूरभाष से नये वर्ष की शुभकामना भेजना प्रारम्भ कर देना चाहिये। नव वर्ष के दिन प्रात:काल से पूर्व उठकर मंगलाचरण कर सूर्य को प्रणाम करें। हवन कर वातावरण शुद्ध करें। नये संकल्प करें। नवरात्रि के नो दिन साधना के शुरू हो जाते हैं तथा नवरात्र घट स्थापना की जाती है। नव वर्ष का स्वागत करने के लिए अपने घर-द्वार को आम के पत्तों से अशोक पत्र से द्वार पर बन्दनवार लगाना चाहिये। नवीन वस्त्राभूषण धारण करना चाहिये। इसी दिन प्रात:काल स्नान कर हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प और जल ले कर 'ओम भूर्भुत: स्व: संवत्सर-अधिपति आवाहयामि पूजयामि च' मंत्र से नव संवत्सर की पूजा करनी चाहिये एवं नव वर्ष के अशुभ फलों के निवारण हेतु ब्रह्माजी से प्रार्थना करनी चाहिये। हे भगवन्! आपकी कृपा से मेरा यह वर्ष मंगलमय एवं कल्याणकारी हो। इस संवत्सर के मध्य में आने वाले सभी अनिष्ट और विघ्न शांत हो जाये। नव संवत्सर के दिन नीम के कोमल पत्तों और ऋतु काल के पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें काली मिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिश्री, इमली और अजवाइन मिलाकर खाने से रक्त विकार आदि शारीरिक रोग होने की संभावना नही रहती है तथा वर्षभर हम स्वस्थ रह सकते हैं। इतना न कर सके तो कम-से-कम चार-पाँच नीम की कोमल पत्तियाँ ही सेवन कर ले तो पर्याप्त रहता है। इससे चर्मरोग नही होते हैं। महाराष्ट्र में तथा मालवा में पूरनपोली या मीठी रोटी बनाने की प्रथा है। महाराष्ट्रियन समाज में गुड़ी सजाकर भी बाहर लगाते हैं। यह गुड़ी नव वर्ष की पताका का ही स्वरूप है। सच तो यह है कि विक्रम संवत् ही हमें अपनी संस्कृति की याद दिलाता है और कम से कम इस बात की अनुभूति तो होती है कि भारतीय संस्कृति से जुड़े सारे समुदाय इसे एक साथ बिना प्रचार प्रसार और नाटकीयता से परे हो कर मनाते हैं। हम सब भारतवासियों का कर्त्तव्य है कि पूर्ण रूप से वैज्ञानिक और भारतीय कैलेण्डर विक्रम संवत् के अनुसार इस दिन का स्वागत करें। पराधीनता एवं गुलामी के बाद अंग्रेजों ने हमें एक ऐसा रंग चढ़ाया कि हम अपने नव वर्ष को भूल कर-विस्मृत कर उनके रंग में रंग गये। उन्ही की तरह एक जनवरी को नव वर्ष अधिकांश लोग मनाते आ रहे हैं। लेकिन अब देशवासी को अपनी भारतीयता के गौरव को याद कर नव वर्ष विक्रमी संवत् मनाना चाहिये जो आगामी २१ मार्च को है। आप सभी को नव वर्ष की अनेक-अनेक शुभकामनाएँ यह वर्ष भारतीयों के लिये ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिये भी सुख, शांति एवं मंगलमय हो।

होने लगते हैं। प्रकृति एक नया रूप धारण कर लेती है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति नव पल्लव धारण कर नव संरचना के लिए ऊर्जावान हो रही हो। मानव, पशु-पक्षी यहाँ तक की जड़-चेतन प्रकृति भी प्रमाद एवं आलस्य का परित्याग कर सचेतन हो जाती है। इसी समय बर्फ पिघलने लग जाती है। आमों पर बौर लगना प्रारम्भ हो जाता है। प्रकृति की हरितिमा नवजीवन के संचार का प्रतीक बनकर हमारे जीवन से जुड़ सी जाती है। इसी दिन प्रतिपदा के दिन आज से २०७२ वर्ष पूर्व उज्जयिनी नरेश महाराज विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांत शकों से भारत भूमि की रक्षा की और इसी दिन से कालगणना प्रारम्भ की गई। उपकृत राष्ट्र ने भी उन्हीं महाराज के नाम से विक्रमी संवत् का नामकरण किया। महाराज विक्रमादित्य ने आज से २०७२ वर्ष पूर्व राष्ट्र को सुसंगठित कर शकों की शक्ति का जड़ से उन्मूलन कर देश से पराजित कर भगा दिया और उनके मूल स्थान अरब में विजय की पताका फहरा दी। साथ ही साथ यवन, हूण, तुषार, पारसिक तथा कम्बोज देशों पर अपनी विजय ध्वजा फहरा दी। इन्ही विजय की स्मृति स्वरूप वर्ष प्रतिपदा संवत्सर के रूप में मनाई जाती रही और आज भी बड़े उत्साह एवं ऐतिहासिक धरोहर की स्मृति के रूप में मनाई जा रही है। इनके राज्य में कोई चोर या भिखारी नही था। विक्रमादित्य ने विजय के बाद जब राज्यारोहण हुआ तब उन्होंने प्रजा के तमाम ऋणों को माफ कर दिया तथा नये भारतीय कैलेण्डर को जारी किया, जिसे विक्रम संवत् नाम दिया। सबसे प्राचीन काल गणना के आधार पर ही प्रतिपदा के दिन विक्रमी संवत् के रूप में इस शुभ एवं शौर्य दिवस को अभिषिक्त किया गया है। इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के राज्याभिषेक अथवा रोहण के रूप में मनाया गया। यह दिन वास्तव में असत्य पर सत्य की विजय को याद करने का दिवस है। इसी दिन महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था। इसी शुभ दिन महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। यह दिवस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक श्री केशव बलिराम हेडगेवार के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। पूरे भारत में इसी दिन से चैत्र नवरात्र की शुरूआत मानी जाती है।

- डॉ. नरेन्द्र कुमार मेहता
'मानस शिरोमणि'
१०३ए व्यास नगर,
ऋषिनगर विस्तार उज्जैन
0734.2510708/9424560115

बिन मांगे मैया ऐसा उपहार क्यूं दिया

आने से पहले कोख में मां मार क्यूं दिया,
बिन मांगे मैया ऐसा उपहार क्यूं दिया।
कांपी न रूह ऐसा संहार क्यूं किया,
बिन मांगे मैया ऐसा उपहार क्यूं दिया।
आंगन में तेरे खुशियों की मैं गंगा बहाती,
तुतली-सी बोली बोल के मां तुझको बुलाती।
कभी जो रूठ जाती तो तुझको मनाती,
रोती कभी मैं छुपके कभी तुझको रुलाती।
एक पल में तूने मुझको धिक्कार क्यूं दिया।
बिन मांगे मैया ऐसा उपहार क्यूं दिया।
हाथों में कभी अपने मैं जो मेहंदी रचाती,
संगीनियों के संग में मैं धूम मचाती।
फिक्र होती तुझको तू बापू को बुलाती,
रुंधे गले से डोली की तू बात बताती।
उजड़ा हुआ फिर ऐसा श्रृंगार क्यूं दिया,
बिन मांगे मैया ऐसा उपहार क्यूं दिया।
पलने के बिछौनों को मेरा इंतजार था,
रुनझुन से धुंधरुओं को मेरा इंतजार था,
भीगे हुए सावन को मेरा इंतजार था।
बिन रोशनी का ऐसा संसार क्यूं दिया,
बिन मांगे मैया ऐसा उपहार क्यूं दिया।
मां तेरी लोरी की एक तड़फ सी रह गई,
पलकों में बंद सारी उम्मीद रह गई।
सपनों में संजोई थी एक दुनिया जो मैंने,
रेती की इमारत थी पलभर में ढह गई।
दुश्मन न करे ऐसा व्यवहार क्यूं किया,
बिन मांगे मैया ऐसा उपहार क्यूं दिया।
शिवराज मुझे लाड़ली-सी लक्ष्मी बनाते,
साईकिल देते ड्रेस और किताब दिलाते।
चिंता तुझे फिर कुछ नहीं करनी थी ऐ मैया,
सयानी होती हाथ पीले मामा कराते।
शिवराज की बेटी पर ऐसा वार क्यूं किया,
बिन मांगे मैया ऐसा उपहार क्यूं दिया।

- अशोक शर्मा
शिक्षक मा.वि. ज्योतिनगर शाजापुर
मो. 9926836591

बुरा न मानो होली है... लो जीत गया मैं सबसे लेकिन सर्दी-खांसी से हारा

बासन्ती टेसू मुस्कराते खिले हुए।
जैसे मचलते चलते नेता जीते हुए।
पाप पुण्य का गठबन्धन ज्यों गले मिले हुए।
तनखा से ज्यादा प्यारे रिश्वत में नोट मिले हुए।।
गर्मी में प्यारा जैसे कुल्लू और मनाली है।
बुरा न मानो होली है।।
अफसर भी जिसको सर कहें वो नेता है।
बार-बार बन्दर सा कूदे वो अभिनेता है।।
झूठ बोलकर सिद्ध करें वो सत्य प्रणेता है।
चोरी कर डांटे कोतवाल को वो पहलवान विजेता है।।
लाखों देख लाख सा पिघले वो सूरत भोली है।
बुरा न मानो होली है।।
सावन-सी की थी, कसमें वादों की बौछारें।
अब जेठ दोपहरी से मुख से बरस रहे अंगारे।।
टोपी गांधी सी पहन ओढ़ तिरंगा रे।
हिम्मत किसकी भैया जो ले इनसे पंगा रे।
ये मेरी जनता मैं इनका नेता।।
साथ हमारा जैसे दामन चोली है।
बुरा न मानो होली है।।
चुनाव चौंसर में बचाया हुआ सब बिखेरा।
घूमता रहा पैर नंगे कहां सांझ कहां सवेरा।।
भूखा प्यासा सोया जहां रात हुई वहां डाला डेरा।
लो जीत गया मैं सबसे लेकिन सर्दी खांसी से हारा।।
सौ डिग्री ज्वर में सत्ता संभाली अब जेब भी मेरी खाली है।
आ गए दिन मेरे भी अच्छे बीत गई रतियां काली हैं।।
मुझको भी दो उसको भी दो नागर हम दोनों हम जोली हैं।
बुरा न मानो होली है।।

- ईश्वर लाल नागर
छापरी जिला उज्जैन
मोबा-8964882281

'आप' ने क्या सबक लिया!

मैं स्वयं उन आलोचकों में शामिल था, जो पिछले कार्यकाल के दौरान अरविन्द केजरीवाल के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद उसे जीभर कर कोस रहे थे। बहुत जल्दबाजी की, मूर्खताएं की, मुख्यमंत्री होते हुए धरने पर बैठे तथा घोषणाओं को पूरी करने में भी जल्दबाजी की। कई मुद्दे थे, जिनको लेकर केजरीवाल को कोसा जा रहा था। अल्प समय की उनकी पार्टी 'आप', उनकी अपरिपक्वता और कांग्रेस के समर्थन वाली सरकार के जाने के बाद मानो लगा था कि अरविन्द केजरीवाल का भविष्य समाप्त प्रायः हो गया है। लेकिन असफलता में से ही सफलता का जन्म होता है यह केजरीवाल ने साबित किया है, उस व्यक्ति ने आलोचना और असफलता की परवाह नहीं की। मुख्यमंत्री पद छोड़ने के बाद भी मोदी से मुकाबला करने बनारस पहुंचे, दिल्ली की जनता से माफी मांगते रहे तथा अपने अभियान में जुटे रहे। उनकी जगह यदि कोई और होता तो इतनी नाकामियों के बाद घर में दुबक कर बैठ जाता, क्योंकि खराब दौर में उनकी पार्टी के कुछ नेताओं ने भी उनका साथ छोड़ दिया था। लेकिन वे अपने अभियान में जुटे रहे। मोदी लहर के बावजूद उन्होंने पूरी ताकत से चुनाव अभियान में हिस्सा लिया। जिस प्रकार कालांतर में पराजित राजा जंगल में छिपकर अपनी सशक्त सेना तैयार कर विरोधियों से पुनः युद्ध किया करते थे। केजरीवाल भी अपना युद्ध जीते और भारी सफलता प्राप्त की। उन्होंने इतिहास रच दिया है, यदि पक्का इरादा हो और लगातार प्रयास किया जाए तो दुनिया में कुछ भी मुश्किल नहीं है। सब कुछ हासिल किया जा सकता है। कम से कम युवा तो केजरीवाल को अपना रोल मॉडल बना ही सकते हैं। वे जीत गए... मुख्यमंत्री बन गए... उनकी सफलता तय हो चुकी है... वे अपनी गलतियों से क्या सीखे तथा दिल्ली की जनता की आशाएं पूरी करते हैं या नहीं यह भविष्य के गर्भ में है। लेकिन युवाओं को यह संदेश मिल गया कि यदि शीतल जल की धार भी चट्टान पर लगातार गिरती रहे तो उसे काट सकती है। ''आप'' यह सीख ले लीजिए।

- दीपक शर्मा

आज का युवा

जब लेख लिखने बैठी तो टॉपिक सोचकर सबसे पहले दिमाग में युवाओं की जो छवि आयी वो थी स्टायलिश ड्रेस पहने हुए हाथ में स्मार्ट फोन लिए हुए युवा की। ये तो सभी जानते है कि आज का युवा असल से ज्यादा अपनी वर्चुअल दुनिया को पसंद करता है। और असल दोस्तो से ज्यादा वो अपने एक बी फ्रैंड के साथ चैट करता रहता है। तो इस तरह की छवि बनना लाजमी है। वैसे आज का युवा काफी समझदार है। वो पुरानी रूढीवादी सोच, जाति और अंधविश्वास जैसी चीजो से काफी आगे निकल चुका है। अब उसे कोई पुरानी सोच में बांधकर नही रख सकता ना ही कोई उसे धर्म के नाम पर इतनी आसानी से लड़ा सकता है। साथ ही वह इतना एडवांस है कि एक बडी कंपनी को भी बखुबी हैंडल कर सकता है। वह क्वालिटी वर्क करता है। स्मार्ट फोन के बिना रह ही नहीं सकता। दुनिया की ताजा तरीन जानकारी से हर वक्त जुडा रहता है। हर नये म्युजिक एलबम के बारे में उसे जानकारी होती है। अपना हर बर्थ डे सेलिब्रेट करता है वहीं दूसरी और वो एक बडा परिवार सम्भालने के लिए खुद को लायक नहीं समझता, क्वालिटी टाईम से उसे कोई लेना देना नही।

वह खाने के बिना चाहे पूरा दिन गुजार ले किन्तु अपने फोन के बिना मुश्किल से एक घण्टा भी गुजार पाये। वह गाने दिन भर गुनगुना सकता है, पर भजन की एक लाईन भी नहीं गा पाता, और मदर्स फादर्स डे की डेट को शायद ही बता पाये। इस तरह अगर देखा जाए तो हम अपने संस्कारो के मामले में काफी पिछड रहे है। ऐसा नही हैं, कि मैं युवाओं की बुराई कर रही हूँ पर सच तो यही है, कि हमने अपनी संस्कृति को काफी पीछे छोड दिया है। जितनी तेजी से हम एडवांस होते जा रहे उतनी ही तेजी से अपनी संस्कृति और सभ्यता से दूर होते जा रहे है। अगर हम सच में एडवांस होना चाहते है, तो हमें हाथ में फोन और मन में संस्कार तथा व्यवहार में सभ्यता को साथ लेकर चलना होगा। तभी आज की युवा पीढ़ी भारत का भविष्य बनाने में सफल होगी।

- कु. अंकिता शर्मा
सुपुत्री-माया-अशोक शर्मा
शाजापुर (म.प्र.) मो. न. - 9926836591

युवाओं के गले नहीं उतरती रूढ़ीवादी प्रथाएं

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने विश्व को उठाकर नक्षत्रों तक पहुंचा दिया है एवं इंटरनेट टैक्नोलॉजी से प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़ रहा है। वहीं कई ऐसी प्रथाएं जो हमारे समाज में चली आ रही हैं, जो हमारी सोच के दायरे को आगे नहीं बढ़ने देती है।

हिन्दू समाज में खासकर नागर ब्राह्मण समाज में ये रूढ़िवादी प्रथाएं बनाई गई हैं। जिनके पीछे कोई तर्क ही नहीं है। आज की पीढ़ी बिना हाथ-पैर की बात नहीं करती है। हर बात के पीछे उद्देश्य को महत्वपूर्ण माना जाता है। मैं बात कर रही हूं, किसी भी व्यक्ति के स्वर्गवास (अवसान) के बाद होने वाली प्रथाओं की। किसी भी परिवार में व्यक्ति के असान के बाद उसकी आत्मशांति हेतु कुछ क्रियाकर्म निश्चित किए गए हैं जो सामाजिक सहयोग एवं सम्बन्धित परिवार द्वारा पूर्ण किए जाते हैं, यह क्रियाकर्म कितनी सादगी एवं गरिमापूर्ण तरीके से सम्पन्न होता है वहीं ये प्रथाएं सम्बन्धियों को टॉर्चर करती हैं।

ये प्रथाएं जैसे - 1- पल्ला लेना, 2- लाइन बांटना, 3-मृत्युभोज, 4- ओकल प्रथा।

1- पल्ला लेना- इस प्रथा का उद्देश्य यह बताया जाता है कि पूरे तेरह दिन तक जब भी कोई बैठने आए या, यूं कहे कि शोक कम करने आए तब ये माना जाता है कि महिलाओं का रोना जरूरी है। वरना समाज के व्यक्ति कहेंगे कि सम्बन्धियों को कोई दु:ख नहीं है। ये कैसी प्रथा बनाई गई है, यदि आपको दु:ख है तो अंतरमन से अपने आप रोना आएगा ऐसा बाहरी दिखावा करने का क्या तात्पर्य है।

2- लाइन बांटना - इस प्रथा में तेरहवें वाले दिन आमंत्रित सभी समाज के व्यक्तियों को अपनी स्वेच्छानुसार कुछ पात्र दान या स्मृति चिह्न दिया जाता है, जो प्रथा स्वेच्छानुसार है उसे समाज के डर से अपनी झूठी-शानों शौकत दिखाने के लिए किया जाता है। मैं पूछना चाहती हूं जो व्यक्ति सक्षम है उन्हें एक पात्र देने से क्या पुण्य मिल जाएगा। यह तो वही बात हो गई जैसे- बहुत सारे नदी नाले किसी समुद्र में मिल जाए तो समुद्र को कोई फर्क नहीं पड़ेगा, जितना पैसा लाइन बांटने में खर्च किया जाता है यदि वह किसी गरीब बच्चे की शिक्षा में दिया जाए तो एक बच्चे का भविष्य सुधर सकता है।

3- मृत्यु भोज- माना जाता है कि अन्नदान महादान है जो शास्त्रों के अनुसार महादान माना गया है, परन्तु यदि कोई मंगलमय कार्यक्रम हो तब तक तो सही है पर क्या किसी व्यक्ति की परिस्थिति ना हो फिर भी समाज के डर से मृत्युभोज में अथाह पैसा लगाते हैं, कोई वरिष्ठजन तो इसे भंडारे का रूप दे देते हैं, मृत्युभोज को दिखावा बना दिया गया है। इससे आत्मशांति का तो तात्पर्य ही नहीं रहा, शोक समारोह को मिलन समारोह का रूप दे दिया गया है। मैं मानती हूं ब्राह्मण भोज शास्त्रोक्तानुसार 13 व्यक्तियों को कराना उचित है।

परन्तु एक तरफ तो लोग कहते हैं 'अरे! मरे का कौन खाता है' और अगर कम व्यक्तियों को बुलाया जाए तो समाज के व्यक्तियों द्वारा कहा जाता है कि 'हमको तो बुलाया ही नहीं'। मेरा यह मानना है कि यदि अन्नदान करना है उन गरीब बस्तियों में उन झोपड़ियों में जा कर करो जहां रात को बच्चा भूखा सोता है और अपनी मां से पूछता है कि 'मां कल खाना मिलेगा या नहीं'। एक कहावत है- 'भगवान भूखा उठाता है, पर भूखा सुलाता नहीं'।

आज के इस कलयुग में जहां हर व्यक्ति प्रतियोगिता के पीछे भाग रहा है। वहां हर व्यक्ति की सोच सीमित हो गई है, फिर भी इन प्रथाओं को जोर-शोर से करना जरूरी समझा जाता है, क्या आप सभी इस प्रथा के पीछे क्या तर्क है बता सकते हैं।

4- ओकल प्रथा (माथाचोटी) - ओकल प्रथा अर्थात् माथाचोटी यह शब्द सुनने में जितना अजीबोगरीब है। यह प्रथा उतनी ही रूढ़िवादी और निराशाजनक है। इस प्रथा को समाज के व्यक्ति, बुजुर्ग, बड़े भाई-बहिन अच्छी तरह जानते होंगे, पर शायद नई पीढ़ी को पता न हो। जैसा कि मुझे पता नहीं था।

इस प्रथा के अंतर्गत यह माना जाता है कि उस सम्बन्धित परिवार की सभी महिलाएं पूरे 13 दिन तक अपने बालों में तेल एवं कंघा नहीं करती एवं तेरहवें वाले दिन उस परिवार की सभी महिलाओं के पिहरवाले उन सभी को तेल कंघा करते हैं और रूमाल या छोटा कपड़ा दिया जाता है। जिसका तात्पर्य है कि उस रूमाल से आंसू पोछे जाते हैं।

इस प्रथा को तोड़ मरोड़कर दूसरे रूप में बना दिया गया है। आज कंघा व तेल करना तो बंद हो गया उसकी जगह स्टील की प्लेट या साड़ियां बांटी जाती हैं। यह तो प्रथा का हिस्सा है ही नहीं, सभी ने अपनी सुविधानुसार उस प्रथा को परिवर्तित कर

दिया है, क्या यह गलत नहीं है। जो शोक समारोह है जहां महिलाओं को विशेषकर इन स्थानों पर अपनी मर्यादाओं का ध्यान रखकर शांतिपूर्ण बनाना चाहिए वहीं शांति भंग कर दी जाती है क्या यह गलत नहीं है।

ईश्वर से बढ़कर कुछ नहीं है इस संसार में, और हिन्दू समाज में 'गीता' को सबसे बड़ा ग्रंथ माना गया है। क्या गीता में कहीं लिखा है इस प्रथा के बारे में, या 'गरुड़ पुराण' में देख ले कि कोई भी ग्रंथ इस प्रथा का वर्णन नहीं करता। जो क्रियाकर्म की पूजन विधि शास्त्र के अनुसार है उसे सही ढंग से पूर्ण करे तभी आप आत्मशांति का कार्यक्रम नियमानुसार कर रहे हैं।

यदि मैं अपनी जगह गलत हूं तो मुझे जरूर बताएं परन्तु मेरे इस आग्रह की ओर एक बार जरूर विचार करें।हो सकता है किसी बड़े बुजुर्ग को यह बात गलत लगे या उन्हें अवहेलना लगे। परन्तु एक बार इस रूप ओर विचार कर अपने-अपने घर से शुरूआत करे आप देखेंगे समाज को एक नई दिशा मिलेगी। आप यकीन मानिए आपके प्रियजन की आत्मा को सही मायनों में मुक्ति, तृप्ति और प्यार प्राप्त होगा एवं आपके मन को सुकुन मिलेगा।

- आयुषी नागर
9826210960

पाठ्यक्रम का एक विषय 'मृत्यु' भी

आज यूरोप-अमेरिका में वैभव की चकाचौंध में एकनयी धारा निकल पड़ी है, वह है- मृत्यु की तैयारी। मृत्यु की प्रतीक्षा में अपने जीवनकाल में ही अपने सब मृत-संस्कार कर लेने की प्राचीन भारतीय परिपाटी रही है। अभी भी प्रतिवर्ष सैकड़ों हिन्दू अपने सामने अपना पूरा संस्कार कर डालते हैं। पर ऐसा कार्य के भी कभी विदेशों में भी पहले सुनने को मिलता था। सैकड़ों वर्ष पूर्व स्पेन के सम्राट ने अपने दफनाने का कार्यक्रम निर्धारित किया उनकी शवयात्रा हुई। लोग रोते-पीटते चले, राजा ने स्वयं अपनी अर्थी को कंधा दिया, फिर वे शव के डब्बे-काफिन में लेटे रहे और दफनाए जाने तक की क्रिया सम्पन्न हुई। वास्तव में यह अनुभव करना चाहते थे कि मृत्यु कैसी होती है और उसके बाद शव में मृतक को कैसा लगता है।

एक धनी अमेरिकन व्यापारी को उनके डॉक्टर ने बतलाया कि वे सात दिन से अधिक जीवित नहीं रहेंगे। उन्हें इन सात दिनों को व्यय किया। अपने को दफनाने के लिए एक से एक बढ़िया डब्बा-माफिन चुनने में, ताकि जितने अधिक आराम से उसमें सो सकें, वही उपयोग में आए।

ये सब तैयारियां एक ओर जहां मृत्यु की प्रतीक्षा की बोधक वही उसके प्रति मानव के भय की सूचक भी है। यह सब जानते हैं कि मरना है, मृत्यु रुक नहीं सकती। पर यह जानते हुए भी उससे छिपने की हमारी आदत है। जितना उस भयंकर दिन को, जिस दिन हम नहीं रहेंगे, भुलाया जा सके, उतना ही अच्छा लगता है। हमारे शास्त्र बार-बार चेतावनी देते हैं कि मनुष्य यह समझकर कि मृत्यु ने केश पकड़ रखे हैं, धर्म का आचरण करे-गृहीत इव मृत्युना धर्ममाचरेत। अब तो पाश्चात्य देशों में भी मृत्यु की तैयारी चर्चा जोरों पर है। अमेरिकन पाठशालाओं में बच्चों के पाठ्यक्रम में 'मृत्यु' भी एक विषय है। मृत्यु क्या चीज है, उसकी तैयारी कैसे की जाए-यह विषय बच्चों को भी सिखाया जाता है। कितना लाभ होता है, यह तो कहा नहीं जा सकता। पर मृत्यु भी अध्ययन का एक विषय हो गया है। एक प्रसिद्ध लेखक का कथन था कि मृत्यु संसार का सर्वोपरि विषय है।

डॉ. रेनू नागर, मथुरा
फोन- 09987768293

होरी गीत

है ये प्यार मोहब्बत का त्योहार बड़ा अनमोल
नफरत की होली को जलाकर हिलमिल खेलो डोल
होरी बोल, होरी बोल, होरी है होरी बोल

1- बल्ले-बल्ले पंजाब दी तु जमके करले भगड़ा,
दुश्मन को भी गले लगाकर भूला दे सारा झगड़ा,
आज खुशी का दिन है और सबसे हसके बोल,
होरी बोल.....

2- राजस्थानी भवई करो, गुजराती डांडिया खेलो,
यूपी, बिहारी मराठी सबको अपने साथ में ले लो,
जात-पात मजहब से उठकर सबको बराबर तोल,
होरी बोल.....

3- रंगों का त्योहार है होली, सबके अपने रंग है,
अलग-अलग कई रंग है फिर भी इन्द्रधनुष के संग है,
लाल, गुलाबी, नीला-पीला, कैसरिया, रंग पानी में घोल,
होरी बोल.....

4- अबीर गुलाल लगाओ चाहे पिचकारी रंग मारो
मिल जुल कर सब साथ रहे ये नाजुक वक्त है यारो
बात पते की 'प्रसाद' ने केहदी पीट-पीट कर ढोल
होरी बोल.....

- रचना एवं संगीत
गजेन्द्र प्रसाद पंड्या बांसवाड़ा राज.

माटी की खुशबू-2

कर्ज उतारने की बारी है...

पिछले अंक से जारी...

'स्मृति' अंक के सम्पादक, लेखक डॉ. जी.डी. नागर ने अपने जिंदगी के मोड़ के बारे में विस्तार से बता कर नई पीढ़ी को कठिन परिश्रम करने का संदेश दिया है। होनहार बिरवान के होत चिकने पात वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए अपनी प्राथमिक शिक्षा से डॉ. बनने तक की दास्तान बड़े ही मार्मिक शब्दों में वर्णन किया है कि किस तरह बाबूजी (पिताजी) उनके डॉ. बनने का सपना संजोए कैंसर रोग से हमें अकेले छोड़ गए। पूरा परिवार आर्थिक झंझावतों में फंसने से मेरा भविष्य अंधकार में दिखने लगा, लेकिन बड़े भाई सा. स्व. राधारमण जी नागर एवं भाभी सा. श्रीमती शकुन्तला नागर ने सम्बल प्रदान किया। उनकी हिम्मत, दिलासा, सहयोग ने मुझे मेरे मार्ग पर आगे बढ़ने एवं बाबूजी के सपने को साकार करने के लिए प्रेरित किया। कहा जाता है कि संसार में कठोर मेहनत से कोई बड़ी पूंजी नही होती। डॉ. जी.डी. नागर ने 12 से 14 घंटे पढ़ाई करके अपने लक्ष्य को हासिल किया। आर्थिक झंझावतों के मोड़ो (टर्निंग पॉइंट) से जूझते हुए दी गई परीक्षाओं में मेरिट सूची में स्थान प्राप्त किया। जिस तरह अर्जुन ने अपने लक्ष्य भेद के लिए अपनी एकाग्रता को भंग नहीं होने दिया, उसी तरह श्री नागर जी के टर्निंग पॉइंट का सामना करते हुए कभी उसके सामने झुके नहीं, लेकिन डॉ. सा. के जीवन में एक ऐसा टर्निंग पाइंट आया, जिसमें सामने वाले के सामने अपना सिर हार पहनने के लिए झुकाना ही पड़ा, यह सुखद टर्निंग पॉइंट था। स्व. राधेलाल जी व्यास सांसद एवं भूत पूर्व राजस्व मंत्री मध्यभारत की सुपुत्री डॉ. मधु व्यास से वर्ष 1972 में विवाह संपन्न हुआ। अपनी जीवन संगिनी डॉ. मधु व्यास की प्रेरणा से एमएस ऑर्थोपेडिक और एफआरएसएच की फेलोशिप प्राप्त की।

जिस व्यक्ति के साथ परिवार का भरपूर सहयोग पत्नी की प्रेरणा व बुजुर्गों के आशीर्वाद हो उसे जीवनपथ में आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है। डॉ. जी.डी. नागर जीवन के विभिन्न टर्निंग पाइंट की बाधाओं को पार करते हुए आज जिस मुकाम पर पहुंचे है, वह नई पीढ़ी में निश्चित रूप से अपने जीवन में आगे बढ़ने में प्रेरणा व स्फूर्ति प्रदान करेगी।

'संतति' एवं 'स्मृति' दोनों पत्रिकाओं के प्रकाशन एवं पूरे परिवार को अपने गृह नगर चाचोड़ा में एकत्रित करने के प्रयास के लिए दोनों श्री डॉ. महेन्द्र नागर एवं श्री डॉ. जी.डी. नागर सा. का अभिनंदन है।

भविष्य में किसी न किसी प्रयोजन के बहाने चाचोड़ा में अपने पूरे परिवार को एकत्रित करने का सिलसिला बरकरार रखना चाहिए।

'संतति' के प्रकाशन के बाद मैंने अपने समीक्षात्मक लेख के अंत में यह सुझाव दिया था कि पूरे नागर परिवार के वंशवृक्ष व सदस्यों की उपलब्धियों की जानकारी को एक काल पात्र में रखकर प्रभु गोपाल जी एवं प्रभु सांवलियाजी के मंदिर में सुरक्षित रखा जाना चाहिए ताकि पूरे नागर परिवार की गाथा सुरक्षित रह सके। पुनः अपनी बात को 'स्मृति' के प्रकाशन के बाद दोहरा कर नागर परिवार से निवेदन करना चाहता हूं कि वह उक्त महती कार्य अवश्य सम्पन्न कराएं तथा इस हेतु पुनः पूरे परिवार को एकत्रित कर वृहद आयोजन करें और हम जैसे अकिंचन प्राणियों को भी गौरवमयी कार्यक्रम के साक्षी बनने हेतु आमंत्रित करें।

मैं नागर परिवार चाचोड़ा से बड़े ही आदर व सम्मान के साथ एक विनम्र प्रश्न करना चाहता हूं। मेरा प्रश्न यह है कि मेहता पं. काशीराम जी नागर के चाचोड़ा में बसने से आज तक यदि पीढ़ियों की गणना की जावे तो कम से कम चाचोड़ा ने नागर परिवार की 5-5 पीढ़ियों को सहेजा है, संवारा है, संस्कारित किया है, तथा उनके उज्जवल भविष्य की नीव रखने के लिए प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा से परिपूर्ण किया है। तात्पर्य यह है कि चांचोड़ा ने नागर परिवार को आज तक दिया ही दिया है, लिया कुछ नहीं है। तो नागर परिवार का क्या यह कर्तव्य नहीं बनता है कि वे चांचोड़ा को अपनी विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों से रिटर्न्स दें। वैसे 'स्मृति' के प्रकाशन में डॉ. जी.डी. नागर ने अपने कई टर्निंग पॉइंट्स का जिक्र किया है, मैं उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि अपने जीवन का एक वृहद टर्निंग पॉइंट और हैं और आगे होकर ऐसी पहल को रचनात्मक स्वरूप पूरे नागर परिवार का सहयोग लेकर पूर्ण करें और अपनी जन्मभूमि का मान बढ़ा कर कुछ अंश में उसका कर्ज चुकाएं क्योंकि कहा भी गया है :- 'जननि जन्मभूमि श्र स्वर्गात् अपि गरीयसि'। अपनी जनमभूमि से बढ़कर इस संसार में कोई महत्वपूर्ण नहीं है। मेरी अंतरआत्मा की आवाज शायद 'स्मृति' प्रकाशन समारोह में डॉ. महेन्द्र जी नागर तक पहुंच गई, ओर उन्होंने कार्यक्रम के पश्चात चांचोड़ा में एक वृहद लायब्रेरी हेतु भवन की नींव रखी। यह कदम चांचोड़ा की मातृभूमि का कर्ज चुकाने हेतु सराहनीय है। निश्चित रूप से लायब्रेरी की स्थापना से चांचोड़ा में आध्यात्मिक वातावरण तैयार होगा। अब गेंद पूरी तरह से नागर परिवार के पाले में है। लायब्रेरी चांचोड़ा का कर्ज चुकाने में पहली किश्त होगी। वर्तमान में चांचोड़ा से जुड़े नागर परिवार के सभी सदस्य प्रभु गोपाल जी एवं प्रभु सांवलिया जी की कृपा एवं बुजुर्गों के आशीर्वाद समृद्ध, सम्पन्न व शिक्षा के धन से परिपूर्ण है। वे चांचोड़ा के लिए कुछ रचनात्मक कदम उठावें चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, सामाजिक उत्थान सम्बन्धी गतिविधि हो। अपने बुजुर्गों की 'स्मृति' किसी भी दशा में 'विस्मृति' न हो जावे इस हेतु मेरा सुझाव था कि नागर परिवार जन द्वारा एक मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना की जावे और उसका नाम यदि 'मेहता पं. काशीराम जी नागर मेमोरियल' ट्रस्ट रखा जावेगा तो अति उत्तम होगा। इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य चांचोड़ा के उदीयमान, मेधावी छात्र-छात्रा जो आर्थिक अभावों की वजह से अपनी अगली पढ़ाई जारी नहीं रख सकते हैं, उनकी ट्रस्ट द्वारा सहायता की जावे ताकि अब कोई चाचोड़ा के दूसरे, घनश्याम को पढ़ाई में बाधा नहीं आवें। वास्तविक रूप में ये नागर परिवार द्वारा अपने पूर्वजों को आदरांजलि होगी व चाचोड़ा को कुछ सीमा तक वे कुछ न कुछ लौटा पाएंगे। अंत में नागर परिवार के बुजुर्गों एवं पूर्वजों के सम्मान में श्री मुनव्वर राणा का ये शेर पेश कर रहा हूं-

नये कमरों में अब चीजें पुरानी कौन रखता है,
परिन्दों के लिए कुन्डों में पानी कौन रखता है।
इक हम ही हैं जो दीवारों को थामे बैठे हैं,
वरना घर में बुजुर्गों की निशानी कौन रखता है।।

धन्यवाद। जय हाटकेश.....

- सुरेश दवे 'मामा' (शाजापुर)

सफलता में साथ-ईश्वर का हाथ!

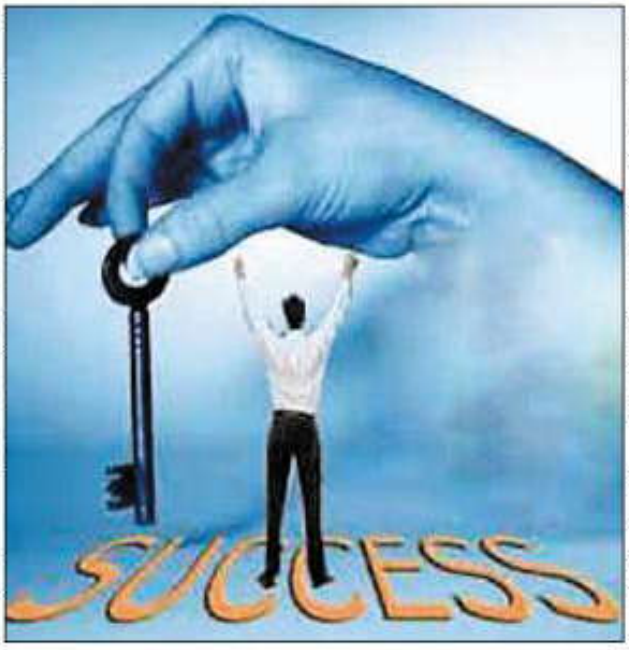

मनुष्य अपने जीवनकाल में अपनी योग्यता, पुरुषार्थ तथा परिश्रम द्वारा अनेक उपलब्धियां प्राप्त करता है चाहे वे उच्च शिक्षा द्वारा प्राप्त की गई हो या उच्चपदेन पद से प्राप्त हो अथवा व्यवसाय में अर्जित आर्थिक लाभ के कारण हो इन सबके कारण सामान्यतः मनुष्य में अहंकार का भाव आ जाता है। उसके अंतः करण में 'मैं' अथवा 'मैंने' शब्द घर कर लेता है। वह अक्सर 'मैंने' ऐसा किया। 'मैंने' वैसा किया, का भाव प्रदर्शित करता है। अपने पद, धन-दौलत, वैभव, बुद्धि एवं ज्ञान के मद में ऐसा डूब जाता है कि इन सब का श्रेयकर्ता वह स्वयं है ऐसा मान बैठता है। जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य का व्यक्तित्व, कृतित्व तथा अस्तित्व परमात्मा के कारण ही हैं। परमात्मा के बिना मनुष्य शून्य है। श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन के माध्यम से हमें यही संदेश दिया है 'नामनुस्मर युध्य च' (8/7) अर्थात मुझे स्मरण करते हुए युद्ध करो अर्थात कर्म करो।

हमारे आध्यात्मिक ग्रंथों- श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत, श्रीमद्भागवत में उल्लेखित कथानकों का समग्र रूप से चिंतन करने पर ज्ञात होता है कि मानव की इन उपलब्धियों के पीछे अदृश्य रूप से ईश्वर का हाथ होता है। अधोवर्णित तीन प्रसंग इस तथ्य की प्रामाणिकता को प्रतिपादित करते हैं।

कुरुक्षेत्र के रणक्षेत्र में जब धनुर्धर अर्जुन तथा महारथी कर्ण के मध्य युद्ध चल रहा था तब जैसे ही अर्जुन का बाण छूटता कर्ण का रथ बहुत दूर खिसक कर पीछे चला जाता यह दृश्य देख श्रीकृष्ण हर बार कर्ण के शौर्य की प्रशंसा में कहते कि कितना वीर है यह कर्ण जो इस रथ को सात कदम पीछे धकेल देता है। अर्जुन बड़े परेशान हुए असमंजस की स्थिति पूछ बैठे कि हे वासुदेव! यह पक्षपात क्यों! मेरे बाण से कर्ण का रथ कोसो दूर खिसक जाता है फिर भी आप उसकी ही प्रशंसा कर रहे हैं मेरी नहीं! आप बारम्बार उसकी ही वाहवाही कर रहे हैं। मुस्कुराते हुए श्रीकृष्ण बोले-अर्जुन! तुम जानते नहीं तुम्हारे रथ में महावीर हनुमान तथा स्वयं मैं वासुदेव कृष्ण विराजमान हैं यदि हम दोनों न होते तो तुम्हारे रथ का अभी अस्तित्व भी नहीं होता इस रथ को सात कदम पीछे हटा देना कर्ण के महाबली होने का परिचायक हैं। अर्जुन को यह सुन अपनी क्षुद्रता पर ग्लानि हुई।

कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य हुए युद्ध के दौरान प्रत्येक दिन युद्ध समाप्ति पश्चात श्रीकृष्ण अपना सारथी धर्म निभाते हुए पहले स्वयं रथ से उतरते तत्पश्चात अर्जुन को रथ से उतरने का कहते थे परन्तु युद्ध के अंतिम दिन अर्जुन के दिग्विजय होने पश्चात श्रीकृष्ण ने अर्जुन को पहले रथ से उतरने को कहते हुए उसे कुछ दूरी पर जाने को कहा। पश्यातवर्ती श्रीकृष्ण के रथ से उतरते ही सम्पूर्ण रथ अग्नि में समाहित हो, भस्म हो गया। आश्चर्यचकित अर्जुन ने इसका कारण जानना चाहा तब श्रीकृष्ण ने कहा कि युद्ध के दौरान अनेक महारथियों- भीष्म, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वस्थामा इत्यादि के बाणों का सामना इसलिये कर पाया कि मैं इस रथ में विराजित था अन्यथा इसका यह हश्र पहले ही हो गया होता।

युद्ध पश्चात कौरवों पर विजयश्री प्राप्त कर युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर आरूढ़ हो गये। कुछ समय पश्चात अर्जुन श्रीकृष्ण से मिलने द्वारिका गये। वहां जाने पर ज्ञात हुआ कि योगेश्वर श्रीकृष्ण सोमनाथ प्रस्थान कर वहां मानव शरीर त्याग कर निजधाम (निर्वाण) चले गये हैं तब अर्जुन अत्यन्त ही शोकमग्न होकर वापस हस्तिनापुर लौटने को उद्यत हुआ। रास्ते में अर्जुन को अकेला देख कबालियों ने लूट लिया।

समय-समय बलवान हैं, नहीं पुरूष बलवान।
काबे अर्जुन लुटियो, वही धनुष वही बाण।।

उपवर्णित घटनाओं से यह संदेश प्राप्त होता है कि मनुष्य को अपनी सफलताओं पर इतराना नहीं चाहिये। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर उसे अपनी योग्यता, यश, उच्च पद तथा अर्जित धन सम्पदा का उपयोग रचनात्मक कार्यों में कर आगे आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत बनना चाहिए।

संत कबीर ने भी कहा है-

अन्तर्यामी एक तुम, आत्मा के आधार।
जो तुम छोड़ो हाथ तो, कौन उतारे पार।।

- राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
बी-40, चन्द्रनगर (एम.आर.9)
इन्दौर

योग से थाइराइड ग्रंथी में लाभ

थाइराइड ग्रंथी जो कि गले में स्थित रहती है इसके दो लाभ होते हैं जो श्वास नली के दोनों ओर स्थित रहती हैं। थायराइड से तीन प्रकार के हार्मोन टी-3, टी-4 व केल्सीटोनीन निकलते हैं। थायराइड ग्रंथी के मुख्य कार्य आयोडीन को संग्रह करना, चयापचय (मेटाबालिज्म) की क्रिया में, शरीर में ऊर्जा के निर्माण में, शरीर की सामान्य वृद्धि में सहायक है।

जब शरीर में टी-3 व टी-4 का निर्माण अधिक होने लगता है तब इस स्थिति को थायरोटाक्सीकोसीस कहते हैं। जो कि महिलाओं के अपेक्षाकृत ज्यादा होता है। इसमें मरीज का वजन कम होता जाता है, हाथ गर्म, पसीना ज्यादा आना, थायराइड ग्रंथी का बढ़ जाना, हृदय की धड़कन बढ़ जाना कमजोरी महसूस होना, हाथ उंगुलियों में कंपन, बैचेनी, थकावट, आंखों का बाहर निकलना व महिलाओं में मासिक धर्म में अनियमितता आदि लक्षण पाये जाते हैं। इसका उपचार एन्टीथायराइड ड्रग द्वारा किया जाता है व सर्जरी द्वारा भी होता है।

और जब थायराइड ग्रंथी की कार्यक्षमता कम या टी-3 या टी-4 का निर्माण कम होने लगता है तब इस स्थिति को हायपोथायराइडिजम कहते हैं। इसमें मरीज की मानसिक व शारीरिक कार्यक्षमता कम हो जाती है, चमड़ी खुरदरी हो जाती है। कब्ज, वजन बढ़ना, मोटापा बढ़ना, कमजोरी, बदन दर्द, बालों का झड़ना, चेहरा सूजा हुआ फूला हुआ, पलकों में सूजन, हाथ व पैरों पर सूजन, होठ व जीभ का बड़ा होना या मोटापन (मंगोलियन अपीयरन्स) ठंड ज्यादा लगना, हृदय की धड़कन कम होना, महिलाओं में मासिक की अनियमितता आदि लक्षण पाये जाते हैं। हार्मोन थेरेपी द्वारा इसका उपचार होता है। ग्वाइटर या घेंघा रोग भी थायराइड के बढ़ने व आयोडीन की कमी से होती है।

योगाभ्यास के द्वारा थायराइड ग्रंथी की बीमारी के लिए निम्नलिखित योग क्रिया लाभदायक है :

1- **सूर्य नमस्कार** :- सूर्य नमस्कार का दूसरा प्रकार जिसमें गर्दन को पीछे करते हैं। सूर्य नमस्कार का चौथा प्रकार जिसमें गर्दन पीछे ले जाते हैं व गहरी लम्बी सांस लेते और छोड़ते हैं जिससे थायराइड ग्रंथी पर दबाव पड़ता है और आसपास की मसल्स (मांसपेशियां) गतिशील होती हैं।

2- **भुजंगासन** :- इसमें गर्दन उठाकर सांस लेना व छोड़ने की क्रिया करने से थायराइड ग्रंथी पर दबाव पड़ता है व इससे लाभ होता है।

3- **सर्पासन** :- सर्पासन में भी गर्दन उठाने से लम्बी गहरी सांस लेकर इस आसन के करने से इस ग्रंथी में लाभ होता है।

4- **मत्स्यासन** :- मत्स्यासन में पद्मासन में लेटकर गर्दन को जमीन पर लगाकर दीर्घ श्वास लेना व छोड़ना जिससे ग्रंथी पर लाभ होता है।

5- **मक्रासन** :- मक्रासन में गर्दन को स्ट्रेच करते हैं जिसमें लम्बी गहरी 10-12 तक सांस ली जाती हैं जिससे ग्रंथी में लाभ होता है।

6- **क्रोकोडाइल** :- क्रोकोडाइल 1 व 2 जिसमें गर्दन को दायें- बायें करते हैं, जिससे इस ग्रंथी में लाभ होता है।

7- **सेतुबंध आसन** :- सेतुबंध आसन में भी बीच में से कमर उठाकर गर्दन में स्ट्रेच (खींचकर) आना है जिससे थायराइड को ठीक होने में लाभ होता है। इसमें गर्दन स्ट्रेच (खींचकर) 10-12 लम्बी गहरी सांस ली जाती है। गोमुखासन सर्वांग आसन, हलासन, उष्ट्रासन, अर्द्ध हलासन भी लाभदायक हैं। ॐ का उच्चारण 20 बार योगेन्द्र (लोम अनुलोम)

8- **प्राणायाम** :- प्राणायाम 20 वक्त, पदमासन, अर्द्ध पदमासन या वज्रासन में सीधे बैठकर लम्बी गहरी सांस बांये नाक से लेना, फिर दाहिनी नाक से छोड़ना, दाहिनी नाक से लेना, फिर बांये से छोड़ना। 10 से 20 वक्त करना सुबह शाम दोनों वक्त करना चाहिए।

9- **उज्जयी प्राणायाम** :- पदमासन, अर्द्ध पदमासन, सुखासन या वज्रासन में बैठकर गले से छूती हुई लम्बी गहरी सांस लेना फिर धीरे-धीरे छोड़ना सांस लेते वक्त निंद्रा में सोते वक्त जैसी आवाज घर्राटे होती है वैसी आवाज होनी चाहिए। इससे इस ग्रंथी

की बीमारी में लाभ होता है। इसके अलावा भ्रामरी प्राणायाम, 5 वक्त सिंहासन भी लाभदायक है।

10- **ध्यान** :- पद्मासन, अर्द्धपद्मासन, सुखासन में बैठकर 3 से 10 मिनिट ध्यान करना, सांस पर ख्याल करना।

11. **शवासन** :- जमीन पर सीधा लेटकर पांव को लगभग एक फीट की दूरी पर रखकर, हथेली को चित रखना, शरीर को ढीला छोड़कर लेटकर धीरे-धीरे लम्बी गहरी सांस लेना व छोड़ना व शरीर व मन को शिथिल रखना। इसके अलावा योग निंद्रा भी लाभदायक है योग निंद्रा भी करना चाहिए शवासन 5 से 10 मिनट तक कर सकते हैं। दिन में एक वक्त जोर से हंसना भी जरूरी है। 2 से 3 कि.मी. पैदल तेज चलना। रात्रि का भोजन सोने के 2 घंटे पहले करना।

- ए.के. रावल
पत्रकार कॉलोनी,
इन्दौर
फोन- 0731-2565058

कम खायें-अधिक जीयें

कार्मल-विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. मैक्के ने 2500 सफेद चूहों पर परीक्षण किया। प्रयोग अवधि में उनमें से कुछ को भर पेट भोजन दिया गया, कुछ को अधिक तथा कुछ को कम। इन चूहों में अधिक भोजन वाले चूहे तो जल्दी मर गये, जिन्हें भर पेट खाना मिला था वे चूहों की वास्तविक आयु से कम समय तक जिन्दा रहे, परन्तु जिन्हें कम आहार दिया था वे पूर्ण आयु ही नहीं अधिक समय भी जिये।

प्राणी विज्ञान के अनुसार चूहों पर भोजन का प्रभाव मनुष्य शरीर की ही भांति होता है। प्रयोग में, उपयोग में लाए गए चूहों पर जिन्हें भूख से आधा भोजन मिला था वे अधिक समय तक जीवित रहे। यद्यपि भूखे रहने के कारण उनकी शारीरिक शक्ति अन्य चूहों की अपेक्षा क्षीण हो गयी थी, परन्तु इसके बदले उनकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ गयी, वे दुर्बल भी हो गए थे परन्तु साथ ही अन्य चूहों की अपेक्षा अधिक स्फूर्तिवान बन गये। उनके हृदय की धड़कन 400 के स्थान पर 300 ही रह गयी, उनका जीवन धीरे-धीरे चलता हुआ अपनी निर्धारित धड़कनों को पूरा करता था किन्तु मस्तिष्क की शक्ति में कई गुनी वृद्धि हो गयी।

इसी प्रकार रूस की एक प्रयोगशाला में 200 चूहों को 50-50 के चार समूहों में रखा गया और उन्हें पौष्टिक भोजन जिसमें शरीर के लिए सभी आवश्यक तत्व सम्मिलित थे कम मात्रा में दिया गया। ये चूहे प्रयोग के आरम्भ में ढलती आयु के थे और प्रयोग के दौरान इन्हें अलग-अलग प्रकार का भोजन दिया गया, जिनमें कुछ को तो पूरा पुष्ट आहार मिलता था। कुछ को फालतू चीजें भी दी जातीं। इन प्रयोगों द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया कि भूखे पेट रहने वाले चूहों में सभी खाद्य पदार्थों को हजम कर जाने की शक्ति और क्षमता आ गयी। रूस के वैज्ञानिक इन प्रयोगों द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि भूख से कम मात्रा में कम, पोषण की चीजें खाने पर दीर्घ समय तक जीवित रहा जा सकता है।

अधिक भोजन का लोभ लिप्सा के कारण के ही जन्म लेता है जो खाद्य पदार्थों में रसानुभूति के कारण ही पैदा होती है। इस मान्यता को जितनी जल्दी संशोधित किया जाए अच्छा है, जिसके अनुसार हम स्वाद और रस के लिए कुछ भी खाते रहते हैं और इसी कारण भोज्य पदार्थों की पौष्टिकता बड़ी निर्मर्मता से पकाकर, जलाकर, छील पीस और उबालकर समाप्त कर देते हैं। शरीर तो फिर भी अपनी आवश्यकतानुसार उचित प्रकार का ही भोजन मांगता है लेकिन हम उस मांग की अभिव्यक्ति-रुचि के अनुरूप भी खाद्य पदार्थों को स्वादिष्ट बनाने के लिए उसकी मूल विशेषता ही समाप्त कर देते हैं।

स्वाद लिप्सा का निराकरण कर देने पर निश्चित ही आवश्यक मात्रा में आहार ग्रहण कर लेने के बाद शरीर और पेट सन्तुष्ट हो जाता है, अमेरिकन डाक्टर मैक्के ने चूहों पर किए गए प्रयोगों के निष्कर्षों को साररूप में प्रस्तुत करते हुए कहा है कि - 'पहले वह भोजन खाओ जो खाना आवश्यक है फिर वह जो तुम्हें रुचता है- किन्तु अधिक कभी मत खाओ।'

मिताहार के पीछे यही सिद्धन्त काम करता है जिसके अनुसार-पाचन शक्ति लिए गए आहार को ठीक प्रकार से पचा सके। वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा इसी निष्कर्ष पर पहुंचा गया है कि स्वाद लिप्सा को त्यागकर, पौष्टिक और शरीर की मांग के अनुसार भोजन करना दीर्घायु जीवन का आधार बन सकता है।

- डॉ. आर.एन. नागर
कोटा

प्रार्थना का चमत्कार

जय हाटकेशवाणी में प्रार्थना पर बहुत सारे लेख आ चुके हैं। आम तौर पर लेख पढ़ते हैं, अच्छा भी लगता है पर वास्तव में जरूरत पड़ने पर क्या हम प्रार्थना कर पाते हैं? मैंने अपनी दिनचर्या में प्रार्थना को भी शामिल किया है। प्रार्थना क्या है? प्रार्थना एक प्रकार से ईश्वर से मदद की याचना है। जिस प्रकार द्रौपदी ने वस्त्र हरण के समय श्रीकृष्ण से मदद की याचना की और उसे मदद मिली, उसी प्रकार हम भी विपत्ति के समय, संकट के समय प्रार्थना के द्वारा ईश्वर से मदद मांग सकते हैं।

मैंने समय-समय पर प्रार्थना के बहुत चमत्कार देखे हैं। आइए, आपको एक विशेष घटना द्वारा 'प्रार्थना' के 'चमत्कार' का अनुभव कराएं।

कुछ समय पूर्व हमारे करीबी रिश्तेदार की शादी में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। हम लड़के वाले थे और लड़की वाले बाहर से आए हुए थे।

सब कुछ बहुत ही सुचारू और व्यवस्थित ढंग से चल रहा था, शादी सबेरे की थी जो अच्छी तरह से सम्पन्न हुई। शाम को रिसेप्शन था। रिसेप्शन एक खुले मैदान में था, जिसे 'वाटिका' कहा जाता है। वहां की साज-सज्जा और सुंदर सजावट को देख कर मन पुलकित हो गया। हम लोगों ने सूप, चाट वगैरह का आनंद लिया। एकाध घंटे बाद वातावरण में परिवर्तन आया, जोर से बारिश शुरू हो गई, सभी लोग यहां से वहां भागने लगे। एक छोटे से हाल में सबने शरण ली। सभी खाद्य सामग्री उस छोटे से हाल में लगा दी गई। दुल्हा-दुल्हन भी एक छोटे से कमरे में जाकर फोटो सेशन में व्यस्त हो गए। देखते ही देखते जहां पर सुंदर सजावट थी वहां अंधेरा छा गया।

ऐसे में मैं लोगों की प्रतिक्रिया देख रही थी। कोई ईश्वर को कोस रहा था, कोई दुख प्रकट कर रहा था, कुछ लोग ऐसे भी थे जो शांति से खड़े थे खास तौर पर दुल्हे के माता-पिता किसी तनाव में नहीं थे।

ऐसे में मैंने और मेरे पति ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया। करीब आधे घंटे बाद बारिश बिल्कुल बंद हो गई। वहां फिर से रौनक छा गई। खाद्य सामग्री को सजा दिया गया। दुल्हा-दुल्हन फिर से सजे हुए स्टेज पर आ गए। फिर से सुंदर सजावट का लोगों ने आनंद लिया।

यहां पर मुझे दो सबक सीखने को मिले। एक तो विपत्ति आने पर परेशान होने की जगह ईश्वर की शरण में जाना, उससे श्रद्धा और विश्वास के साथ याचना करना, मदद की पुकार करना, वो अवश्य सुनता है।

दूसरा सबक ये कि जिस कुशलता से केटरर्स ने खाद्य सामग्री पहले छोटे हाल के अंदर और बाद में बाहर लगाई ये देखकर मैं चकित रह गई। मैंने देखा कि भारी भरकम सामान उठाते हुए भी वे लोग तनावमुक्त थे। भीगने के बावजूद भी वे लोग आपस में बातचीत और हंसी मजाक कर रहे थे।

वे लोग पढ़े लिखे नहीं थे पर हम सभी को सबक दे गए कि संकट के समय सोचने के बदले समस्या का समाधान निकालकर काम में जुट जाना है। जब हम तनावमुक्त रहते हैं तो हमारा मन हमें मार्गदर्शन देता है और संकट भी टल जाता है।

अंत में **'प्रभु से मत कहो समस्या विकट है, समस्या से कहो प्रभु मेरे निकट है'।**

प्रार्थना करो तो ऐसे कि जैसे सब कुछ प्रभु पर निर्भर है, कर्म करो तो ऐसे कि जैसे सब कुछ स्वयं पर निर्भर है।

- उषा ठाकोर, मुंबई
9833181575

'मानस के कतिपय, चिंतनीय प्रसंग-2'

गतांक से आगे...

अयोध्याकांड से-प्रसंग पंचम- राम के राज तिलक प्रसंग में यह आशंका उठना स्वाभाविक है कि राजधानी के सबसे महत्वपूर्ण महोत्सव की ऐसी क्या जल्दी थी कि भरत-शत्रुघ्न दोनों लघु भ्राताओं को ननिहाल से बुलाये बिना ही अग्रज श्रीराम का राजतिलक कर दिए जाने की तैयारी हो गई। इतना ही नहीं चारों भाइयों के श्वसुर जनक जी महाराज तक को आमंत्रित न कर सके। वशिष्ठजी ने दूसरे या तीसरे दिन की तिथि, वार या नक्षत्रादि का मुहूर्त तो नहीं साधा था। उन्होंने तो बस इतना ही कहा था 'सुदिन, सुमंगल तबहि जब, राम होहिंजुबराज'। ऐसी स्थिति में मंथरा के इस कथन की पुष्टि होती है कि 'पठए भरत भूत ननिअउरे। राम मातु मत जानव रउरै' स्वाभाविक है कि यदि भरत को बुला लिया होता तो अयोध्या में रामवनवास एवं दशरथ मरण की जो विकट स्थिति बनी उसकी नौबत ही नहीं आती। दशरथजी की जल्दबाजी ने अंग्रेजी की यह कहावत चरितार्थ कर दी।

अरण्य कांड से- प्रसंग षष्टम- जटायु प्रसंग में जटायु श्रीराम की गोद में सिर रखकर सीता-हरण तथा रावण से अपने संघर्ष की कथा सुनाता है तो श्रीराम के नैत्र आंसुओं से डब-डबा गए। 'जल भरि नयन कह हिं रघुराई। तात कर्म निज ते गति पाई।।' लेकिन एक अश्रु बिंदु भी नीचे नहीं गिरा। यहां भक्त पाठक प्रश्न करते हैं कि जिस पक्षी ने श्रीराम की धर्मपत्नी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी, सारा शरीर रावण की चन्द्रहास तलवार के घावों से भरकर रक्त रंजित हो गया और अंततः प्राणांत भी हो गया। जटायु की ऐसी दुर्दशा देखकर श्रीराम की आंखें केवल भर आई, जबकि उन्हें तो धर-धर आंसू बहाना था। पाठकों की उक्त जिज्ञासा शांत करने के लिए यहां स्पष्ट किया जाता है कि जटायु के शरीर पर अनेकानेक घाव थे और उसका अर्धभाग श्रीराम की गोद में था। ऐसी स्थिति में यदि श्रीराम अश्रुपात करते तो वे अश्रुबिंदु जटायु के घावों पर पड़ते। पाठक जानते हैं कि आंसुओं में लवणांश होता है। अतः आंसुओं के घाव पर गिरने से जटायु की वेदना और बढ़ जाती अर्थात् 'घाव पर नमक छिड़कना' वाली उक्ती चरितार्थ हो जाती। इसलिए श्रीराम ने आंसुओं को आंखों में ही रखा, गिरने नहीं दिया।

किशकिंधा एवं सुंदरकांड से - प्रसंग सप्तम- पाठक जानना चाहते हैं कि जब हनुमान जी ने जामवंत से पूछा 'जामवंत मैं पूछ हुं तो ही। उचित सिखावन दीजहु मोही।। तब जामवंतजी ने कहा 'एतना करहु तात तुम जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई।' चौपाई अनुसार जामवंत ने स्पष्ट कहा था कि हनुमान तुम्हें लंका जाकर बस मात्र इतना करना है कि सीता की दशा (सुधि) देखकर और वापस आकर हमें बताना है। लेकिन हनुमानजी ने समुद्र वासिनी मायावी राक्षसी को मारकर लंका में प्रवेश करते ही लंकिनी को घूंसा जड़कर मूर्छित कर दिया। आगे देखिए संपाती नामक गिद्ध ने यह स्पष्ट बता दिया था कि 'गिरि त्रिकूट उपर बस लंका। तहँ रह रावन सहज असंका'। तहं अशोक उपवन जहां रहई। सीता बैठि सोच रत अहई।। तब फिर पवन पुत्र को जामवंत कीअवज्ञाकर लंका के घर-घर में जाकर सीता की खोज करने की आवश्यकता क्या थी। यथा मंदिर-मंदिर प्रति करिसोधा। देखे जँह तँह अगनित जोधा। इतना ही नहीं सीता से भेंट हो जाने के बाद उन्हें तुरंत लौट आना चाहिए था। लेकिन लंका में उन्होंने और भी कई उत्पात कर डाले। यथा हनुमान जी को सच्ची भूख लगी नहीं थी जैसे 'सुन हु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुन्दर फल रूखा।। अर्थात केवल सुन्दर-सुन्दर फलों को देखकर खाने की तीव्र इच्छा हो आई थी। यदि में गहराई से विचार करें तो वास्तव में हनुमानजी को न तो भूख लगी थी और न ही फलों को खाने की इच्छा थी। क्योंकि उन्होंने मैनाक से कहा था राम काज कीन्हें बिना। मोहि कहां विश्राम।। अर्थात जिसे विश्राम तक करने की इच्छा नहीं वह फलों को खाने में क्यों समय गंवाएगा। वास्तविकता तो यह है कि हनुमान जी येन-केन-प्रकारेण रावण की लंका की प्राकृतिक बनावट, रजनीतिक, प्रशासकीय तथा सैन्यशक्ति को भलीभांति देखना-परखना चाहते थे। पवन पुत्र यह जानते थे कि सीताजी इन सब के लिए कदापि आज्ञा नहीं देगी। इसलिए उन्होंने योजना बनाई और फल खाने के बहाने आज्ञा मांगी जो मिल भी गई। उपवन नष्ट करने की उद्दंडता का लक्ष्य भी यही था कि जब यह संदेश रावण तक पहुंचेगा तो वह मुझे निश्चित ही बंदी बनाएगा। इसीलिए हनुमानजी ने रावण-पुत्र अक्षय कुमार को भी स्वर्ग सिधार दिया और इस प्रकार पवन पुत्र की यह योजना सफल रही। लंका दहन का उद्देश्य भी लंका में आतंक फैलाकर राम के दूत की शक्ति एवं प्रभाव का प्रदर्शन करना मात्र था। (क्रमशः)

- हरिनारायण नागर
(पत्रकार)
देवास

सत्कर्मों से सुनहरे भाग्य का निर्माण

मानव जीवन में कई प्रकार की समस्याएं, चिंता, परेशानियां और बीमारियां है। तमाम परेशानियों से घिरे होने के बाद भी जब हम सत्संग में जाकर प्रवचन सुनते हैं या शास्त्रों को पढ़ते है तो उनमें यही बताया जाता है कि 'मानव जीवन दुर्लभ है' 84 लाख योनियों से गुजरने के बाद यह जन्म मिला है। साथ ही यह शिक्षा दी जाती है कि इस मनुष्य जन्म को सफल कर लो-अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जियो, नेक कर्म करो, सेवा का भाव रखो, सबका भला सोचो, नेकी करके दरिया में डालो। हम सब अनेक समस्याओं से घिरे हुए पूजा-पाठ करते हैं। सत्संग में जाते हैं, परन्तु उन बातों को जीवन में कहां उतार पाते हैं। अगले ही पल मैंने सोचा कि कोई रोग या बीमारी होते ही हम डॉक्टर की ओर दौड़ पड़ते हैं। मानव देह को बचाने के लिए चिंतित हो उठते हैं, परेशानियों से घबरा जाते हैं। यदि हम शास्त्रोक्त कथन और प्रवचन अपने जीवन में उतार पाते तो जीवन को निश्चित रूप से सफल बना सकते थे, क्योंकि जब भगवान होकर श्री राम-सीता ने 14 वर्ष का वनवास भोगा। जंगलों में रहकर राक्षसों से संघर्ष किया। वे तो भगवान थे, कुछ भी कर सकते थे। परन्तु उन्होंने मानवमात्र को अपनी लीलाओं के माध्यम से यह शिक्षा दी है कि विपत्ति से घबराए बगैर जनकल्याण के कार्य में लगे रहना चाहिए। विपत्तियां-परेशानियां तो आती रहेगी, मानव को उनका मुकाबला करते हुए अपना जीवन धन्य बनाने का यत्न करना पड़ेगा। यह समझना पड़ेगा कि 'होई है वही जो राम रचि राखा'। भगवान ने भाग्य में सुख-दु:ख दोनों लिखे हैं। बारिश के मौसम में खूब बरसात होगी तो उससे बचने के लिए छाता भी तो है। बीमारियां है तो दवा भी है। मैं यह सब बातें इसलिए बता रही हूं कि भगवान ने कष्टों से उबरने की व्यवस्था भी कर रखी है। मनुष्य के हाथ में है सत्कर्मों से अपना सुनहरा भाग्य निर्माण करे। अपने जीवन में आ रहे उतार-चढ़ाव का मुकाबला करे हिम्मत न हारें, दु:ख के बादल जरूर छटेंगे और जीवन में खुशियों की बहार आएगी।

'आने वाले कल का कोई विचार मत करो, क्योंकि कल अपना विचार खुद करवा लेगा। सिर्फ आज में जियो.. खुश रहो।

- श्रीमती निधि पुरुषार्थ पंड्या (नीलू)
सी 11/3, ऋषिनगर, उज्जैन
0734-2517824,
09824016626

आज तुम्हारा है...

मंजिल हमारे पास नहीं कि हाथ बढ़ाया और मिल जाए।
इसे पाने के लिए शायद बहुत कुछ खोना पड़ जाए।।
नजर नहीं आती मंजिल तो घबराने की क्या बात है,
किस्मत अपनी खुद बदलेंगे अपने हाथों की बात है।
जीवन हर बार नहीं मिलता एक बार ही तो जीना है,
अब कैसे इसको जीना है ये ही तो हमको सोचना है।
कठिनाई में ही तो होती है पहचान हर इंसान की,
डरा मुश्किलों से जो, खेली है उसने बाजी हार की।
छोड़ निराशा भर लो मन में आज नया उत्साह तुम,
आज तुम्हारा है जवानों जीत लो ये संसार तुम।

- मीनाक्षी नागर
आगरा

God's Gift so Priceless

My parents are the gift so priceless,
But without them I would be damn lifeless.
They will always keep me happy that's their guarantee,
I will never ever make them sad is my warranty.
When ever the evil non-existing ghost threatens my fear,
My daddy's holy hands are there to cheer.
Whenever my tears are not able to stop,
My mumma's softy hands are there to wipe them off
and put a full stop.
Whenever my stomach aches due to school fear,
Its my daddy who says "Dadaji ke ghar ya nanaji ke ghar".
Whenever I am traped in the exam fever,
Its my mumma who gives me her blessing river.
I thank you lord from the bottom of my heart,
for such a cute and sweet gift as my parents.
These lines will never be enough to explain them
because so lovely people cannot be explained by mere words.
Love you mumma & papa...

Priyal Alok Nagar, Ujjain
Mo.: 094259 45645

हमारे कुलदेवता समृद्धि के प्रतीक हैं...

आकाशे ताड़का लिंग, पाताले हाटकेश्वरम्।
मृत्युलोके महाकालं, सर्वलिंग नमोस्तुते।।

आकाश का ताड़का लिंग, पाताल के हाटकेश्वर और मृत्युलोक के महाकाल के साथ मैं सर्व लिंगों को नमस्कार करता हूं। भगवान शंकर के गले का नागराज ही हमारा जन्मदाता है। नागपंचमी भी हमारा विशेष उत्सव माना जाता है। नाग से ही नागर की उत्पत्ति हुई। अन्तर इतना है कि नागर में गर याने गरल या विष नहीं है। नागर अपनी सरल प्रकृति के लिए प्रसिद्ध हैं।

भगवान शंकर वैराग्य के देवता हैं। पर नागर जैसी समृद्ध कौम का इष्टदेव बैरागी नहीं है। यह हाटक (सोना) का ईश्वर हैं और समृद्धि का देवता है। समृद्धि में भी हम सादगी सरलता से जी सकें यही हाटकेश्वर का संदेश है। स्कंद पुराण के अनुसार शंकर पार्वती के विवाह के लिए नागर की उत्पत्ति की गई। नागरों ने उनके पार्थिव लिंग को हाटक का बना दिया, इसीलिए वे हाटकेश्वर कहलाए।

नागर समाज प्राचीन काल से ही अपनी ईमानदारी, प्रशासन कुशलता और समृद्धि के लिए विख्यात हैं। राजाओं ने उन्हें महत्वपूर्ण ओहदे देकर सम्मानित किया था।

कलम कड़छी और बरछी हमारे प्रतीक चिन्ह है। कलम से तात्पर्य श्रेष्ठ साहित्यकार, निर्भीक पत्रकार और कुशल प्रशासक है। कड़छी उनके स्वपाकी होने का प्रमाण है। कड़छी दूसरों को खिलाने में ही अपनी तृप्ति मानती है। कई विद्वान मानते हैं कि प्रतीक में कड़छी नहीं है सुआ है जो उनके यहां कर्मकाण्ड और ब्रह्माण्ड की साक्षी देता है पौराहित्य कर्म पर अधिकार होने के बावजूद भी दान दक्षिणा या जीवनवृत्ति में उसका उपयोग न करना दुर्लभ विशेषता है। बरछी युद्ध संचालन का प्रतीक है पर 1857 में अंग्रेजों ने यह बरछी हमसे छीन ली है।

अनार्तपुर (वड़नगर) का राजा कोढ़ से पीड़ित था। नागरों ने अपनी मंत्र शक्ति से उसे ठीक किया पर राजा से कोई भेंट स्वीकार नहीं की। राजा ने उस चमत्कारपुर में हाटकेश्वर का मंदिर बनाया। प्रति वर्ष चैत्र शुक्ल चतुर्दशी पर हम हाटकेश्वर दादा का वर घोड़ा निकाल कर उस दिन की महत्ता को स्वीकार करते हैं। एडी-1043 में विशालदेव ने अजमेर से आकर गुजरात जीता। उसने वहां के नागरों को पुजारी बनाया वे विषनगरा कहलाए। वड़नगर स्थित वड़नगरा नागर कहलाए। इसके अलावा चित्रकूट पति (चित्रोड़ा) प्रश्नीपुर (प्रश्नोरा) कृष्णोरदे (कृष्णोरा) शटपद के (साठोदरा) और दशपुर के (दशोरा) नागर कहलाए। औरंगजेब के दमन से कुछ नागरों ने अपना ब्राह्मणत्व खो दिया और वणिक वृत्ति स्वीकार की पर वे भी आज हाटकेश्वर के परम उपासक हैं। जो यहां छींछ ग्राम में निवास करते हैं। प्राचीन काल में इन सब में रोटी बेटी का व्यवहार नहीं था, लेकिन आज ये सभी नागर एकाकार होने लगे हैं। यह युग की आवश्यकता भी है।

एडी 347 में नागरों ने अपने पृथक से 48 संस्कार बनाए व नागर खण्ड में उतारे। इसमें शिव शक्ति की उपासना, सदाचार, न्याय आदि के नियम बनाए। अंतर्जातीय भोज और विवाह पर प्रतिबंध लगाए।

1805 में जब डुंगरपुर में फतेहसिंह का शासन था तब सदाशिव राव मराठा सरदार ने आक्रमण करके चौथ वसूलती चाही तब राजा ने एक रात में नागरों से दो लाख वसूल कर उसे सौंपे। इसी बात पर नागरों ने डूंगरपुर का बहिष्कार किया। जेषणा, लोहारिया, बेणेश्वर आदि गांवों से होते हुए बांसवाड़ा में मुकाम किया।

नागर समाज में शक्ति की उपासना के लिए अंबा माता मंदिर उपासना व गरबों का इतिहास साक्षी है। यहीं से गांव-गांव और घर-घर गरबों का प्रचलन बढ़ा है। चौबीस घंटे के अखंड गरबे यहां की विशेषता है। गरबी में दीपक रखकर गाना और नाचना सभी के आकर्षण का केन्द्र है। नागर समाज में लड़के-लड़की में कोई भेद नहीं किया जाता। बेटी और बहू में भी कोई अन्तर नहीं किया जाता। नागर नी कन्या उधाड़ी'' यहां लड़के-लड़की एक दूसरे को देखकर सगाई करते हैं। दहेज की कोई समस्या का निशान नहीं है। लड़के और जमाई में भी किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता। हर उपवास के पीछे पारणे (भोजन) का महत्व है। दान यहां और भोज के प्रति निष्ठा हमारी विशेष पहचान है। खेल में क्रिकेट के प्रति रुचि अनन्य है। स्पोर्टिंग क्लब लंबे समय से अच्छे खिलाड़ी तैयार कर रहा है। विवाह में पल्ले की प्रथा बहु के लिए दिया है। नागर की पहचान के लिए प्रसिद्ध है।

पाटला, पल्लू, पारणु, पीतांबर ने पान।
नागर नी आ संस्कृति, नागर नी पहिचान।।

- धनपतराय झां, बांसवाड़ा

सबका प्यारा मेरा भाई 'राकेश'

प्रथम पुण्यतिथि दि. 3 मार्च 2014 पर श्रद्धासुमन

'राकेश' हम भाई-बहनों में दूसरे नंबर पर था। वह बचपन से ही बहुत जुझारू प्रवृत्ति का था, साथ ही हर काम को मेहनत व लगन से करता था। चाहे काम छोटा हो या बड़ा। बहुत छोटी उम्र में उसने अपने पिताजी 'श्री महेन्द्र भाई त्रिवेदी' के देहान्त के बाद परिवार की बागडोर को कितनी कुशलता से संभाला, वो सबने देखा है।

राकेश गुजराती कॉलेज इंदौर में प्राचार्य के पद पर पदस्थ था। उसने अपने जीवनकाल में, कॉलेज के अलावा कई सामाजिक संस्थाओं के साथ भी काम किया। विशेषकर 'पर्यावरण' के क्षेत्र में अधिक काम किया। उसे अनेक संस्थाओं से कई पुरस्कार भी मिले। लेखक के रूप में भी वह कई वर्षों तक 'नईदुनिया' से जुड़ा रहा। इस सबके अतिरिक्त वह एक कलाकार भी था। कला के प्रति वह पूर्ण समर्पित था।

जब उसने 'नई दुनिया' छोड़ी, तो उसे कुछ वक्त मिलने लगा, अपने परिवार के लिए, साथ ही अपने शौक व इच्छाओं को पूरा करने के लिए। विशेषकर उसे संगीत बहुत प्रिय था, उसने अपना शाम का वक्त संगीत को ही समर्पित किया। वह एक बड़ा स्टेज कलाकार बनने के प्रयास में लगा था, और कुछ हद तक वह अपनी मंजिल पर पहुंच भी गया था व अपना जीवन बहुत अच्छी तरह जी रहा था।

लेकिन पता नहीं कहां से एक सैलाब आया, एक आंधी आई और एक हंसते खेलते परिवार को उजाड़ कर चली गई। सब कुछ तहस नहस हो गया।

मैं 'आई' के देहान्त के बाद किसी काम से इन्दौर गई थी, वह घर पर (रूपराम नगर) मेरा इंतजार कर रहा था, उसका फोन आया, उसने कहा घर नहीं आ रही हो

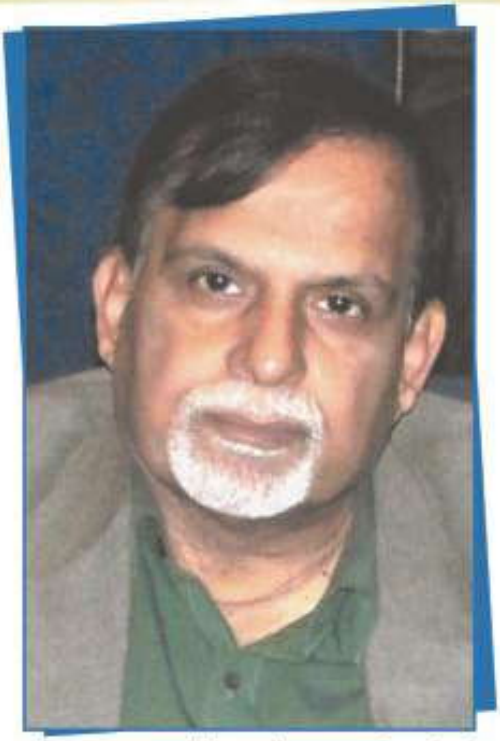

क्या? मैंने उससे कहा अभी अभी तो हम खूब साथ रहे हैं (मां के साथ) अभी मुझे जल्दी जाना है मैं होली पर आ तो रही हूं, तब मिलते हैं। यह मेरी उससे आखिरी बातचीत थी, होली पर मैं गई तो सही लेकिन वह मुझे नहीं मिला, मुझे नहीं पता था कि ऐसा होगा कि वह मुझे कभी मिलेगा ही नहीं। उससे न मिल पाने का गम मुझे जीवन पर्यन्त रहेगा।

मेरे कानों में 'राकेश' की आवाज और मेरे छोटे भाई 'असीम' की आवाज हर दम गूंजती रहती है, असीम ने मुझे फोन पर कहा था- 'जीजी' आ जाओ, अपने पास कुछ भी नहीं बचा है। यह आवाज मेरे दिल और दिमाग में हमेशा रहेगी।

राकेश के बारे में जितना लिखूं कम है।

बचपन के साथ-साथ पले-बढ़े, बहुत कुछ हुआ, बहुत सी बातें हैं, बहुत से सुन्दर और प्यारे लम्हे हैं, जो मैंने उसके साथ बिताये हैं। लेकिन अब न तो मेरी आंखों से आंसू रुकने का नाम ले रहे हैं और न ही ये कलम अब मेरा साथ दे रही है।

'इसलिये-बस-बस-बस'

'तुम न सही, आज जहां में, पर बात तुम्हारी जारी है,

लम्हा, लम्हा, हर साल गुजर जाएगा, पर याद तुम्हारी, हर लम्हे पर आनी है।

- रजनी नागर
55 शिवाजी पार्क, उज्जैन
9893411884

पुण्य स्मरण

श्री मनोहरलाल जी मेहता (इंदौर) 20 मार्च
कुमुद मेहता (इंदौर) 25 मार्च
इंदिरा शर्मा इंदू काकी (खंडवा) 14 मार्च
श्रद्धावनत्- गायत्री मेहता
इंदौर 9407138599

मुखिया श्री नरेन्द्र जी मेहता- शाजापुर

शाजापुर की प्रसिद्ध श्री गोवर्द्धननाथ जी की हवेली के मुखिया एवं डॉ. सुरेश मेहता, मुकेश मेहता, निकुंज मेहता, योगेश मेहता, बृजगोपाल मेहता, सुरेन्द्र मेहता के ज्येष्ठ भ्राता श्री नरेन्द्रजी मेहता का असामयिक निधन हो गया। श्री मेहता भारतीय स्टेट बैंक चौक शाखा के सेवानिवृत अधिकारी, अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवं लायन्स क्लब से जुड़े समाजसेवी थे। शांतिवन में आयोजित शोकसभा में नागर ब्राह्मण समाज, वैष्णव परिषद, लायन्स क्लब, नवीन शासकीय महाविद्यालय के स्टाफ ने उन्हें श्रद्धांजलि दी।

माँ जब भी ईश्वर से कुछ मांगती है तो, केवल अपनी संतान का सुख

अपने मुख से माँ शब्द का उच्चारण होते ही कितने ही अर्थ एवं भाव हमारे मस्तिष्क में अचानक उत्पन्न हो जाते हैं। माँ वह शख्सियत है जो कर्तव्यनिष्ठ, दयालू, परिश्रमी, त्यागमयी होती है। अपने परिवार व बच्चों के लिए पूर्णतः समर्पित रहती है। ऐसी ही मेरी माँ स्वर्गीय श्रीमती सावित्री झा का स्वर्गवास दिनांक 10 अप्रैल 2014 को गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। वे एकादशी के दिन ही मेरे पूज्य पिता श्री से बात करते-करते ही अचानक गिर गईं और स्वर्गलोक को सिधार गई।

मेरी माँ का जन्म ग्वालियर में पं. स्व. श्री सुखराम ठाकोर के यहां हुआ। उन्होंने स्नातकोत्तर परीक्षा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से ही उत्तीर्ण की तथा प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. श्री हरिशंकर जी झा के सुपुत्र श्री निरंजन शंकर झा के साथ ग्वालियर में इनका विवाह सम्पन्न हुआ और वे श्योपुर अपने ससुराल में आ गई, जहां उन्होंने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में व्याख्याता के पद पर कार्य किया और वहीं से सेवानिवृत्त हुई।

आज जो कुछ मैं व मेरा परिवार है वह मेरी पूज्य माताश्री के आशीर्वाद के परिणामस्वरूप ही है। जब कभी मैं किसी कार्य को लेकर उद्विग्न हो रही हूं तो मुझे मेरी माँ के द्वारा बताए गए बोल अक्सर याद आ जाते हैं तो मैं शान्त हो जाती हूं। उद्विग्नता समाप्त हो जाती है। मेरी मां अक्सर कहा करती थी कि उतावणे कभी आम्बा आक्या नथी ईमी समय पर ज पाके छे, माँ चिड़िया के घोंसले की तरह होती है जो अपने चूजों को घोंसले में पूर्णतः सुरक्षा प्रदान करती है। जब बालक माँ की गोद में जाता है तब वह अपने को पूर्णतः सुरक्षित समझने लगता है। माँ की प्रेरणा ही हमें विपरीत समय में संघर्ष की शक्ति, ऊर्जा एवं साहस प्रदान करती है। माँ अपने लिये कभी कुछ ईश्वर से कामना नहीं करती है व सदैव ही अपने बच्चों एवं पति की खुशहाली, पदोन्नति एवं सुखी जीवन की कामना करती है। हमें माँ शब्द की महिमा का हमेशा स्मरण रखना चाहिए 'जननी जन्मभूमिश्च् स्वर्गादपि गरीयसी' मेरी मां को कभी धन सम्पत्ति से लगाव नहीं रहा उन्होंने अपनी करोड़ों की सम्पतित अपने भौतिकतावादी एवं आधुनिकता से प्रेरित अपने बेटे को दे दी।

मां की महानता इसी बात से परिलक्षित होती है कि वह कभी अपने पुत्र एवं पुत्रियों में भेद नहीं करती है। बेटा सपूत हो अथवा कपूत, स्वस्थ हो अथवा विकलांग, कलेक्टर हो अथवा चपरासी, धनवान हो या गरीब, सभी से समान रूप से स्नेह रखती है। बेटा उसका सम्मान करे अथवा न करे माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करे अथवा नहीं करे वह हमेशा उसकी खुशहाली की ही कामना करती है। मैं किन शब्दों में मां शब्द का महात्म्य वर्णित करूं अथवा प्रशंसा करूं, मैं शब्द हीन हूं। मेरी मां मेरी गुरू भी थी। आज मेरी मां इस दुनिया में नहीं है, लेकिन उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन व शिक्षा मुझे दैनिक जीवन में काम आती है, उनके दिए गए मार्गदर्शन व शिक्षा के अनुसार ही मैं कार्य करती हूं।

मैं अपनी मां की प्रथम पुण्यतिथि पर उनके प्रति श्रद्धावनत होकर अपने परिवार सहित विनम्र एवं अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

- श्रीमती सलिला नागर
बी-3 शिवम परिसर, नानाखेड़ा, उज्जैन
9179472887, फोन- 2533059

श्रीमती सरलाजी व्यास, उज्जैन

उज्जैन निवासी डॉ. कृष्णकांत जी व्यास की धर्मपत्नी श्रीमती सरलाजी व्यास (77 वर्ष) का देहावसान हो गया। आप सांसद स्व. श्री राधेलालजी व्यास की पुत्रवधू, श्री किशोर भाई त्रिवेदी की सुपुत्री थीं। आपके तीन सुपुत्र-अजय व्यास, अभय व्यास, आनन्द व्यास हैं, तथा सुपुत्री- श्रीमती अनुपमा-अक्षय नागर हैं। आप म.प्र. नागर परिषद शाखा उज्जैन के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप व्यास की भाभी थीं।

श्रीमती प्रेमलताजी रावल-भोपाल

भोपाल निवासी श्रीमती प्रेमलता जी-(92 वर्ष) धर्मपत्नी- श्री भगवानदास जी रावल का देहावसान हो गया। श्री रावल खिलचीपुर के मूल निवासी थे।

15वां पुण्य स्मरण
स्व. श्री जानकीलाल जी-राधाकृष्ण जी जोशी
12 मार्च 2015
एक स्नेही, व्यवहारी, मिलनसार, सद्गुणी व्यक्तित्व
- समस्त जोशी परिवार, नागर, तिवारी, जाखव
- पी.आर. जोशी, इंदौर

सातवां पुण्य स्मरण
स्व. श्रीमती पुष्पलता भंवरलाल नागर
22 फरवरी 2015
(साक्षात 'मां' व्यक्तित्व की प्रतिमूर्ति)
श्रीमती जया नागर, श्री अपूर्व-श्रुति नागर, जोशी, जाखव, तिवारी (महू) परिवार
- पी.आर. जोशी, इंदौर

॥ श्री बालाजी ॥

किशोर टेन्ट हाऊस इलेक्ट्रीक डेकोरेशन व केटरिंग

प्रोप्रायटर : कैलाशचन्द्र रावल मो. 96179-02151, रवि रावल मो. 96696-08782, अर्जुन रावल मो. 90987-41508

109-बी, वैभव नगर, ग्राम बिसन खेड़ा, इन्दौर

प्रथम जन्मदिवस पर हार्दिक शुभकामनाएँ...

"रोशन है दुनिया तुम्हारे आने से, मिला है सुकून तुमको पाने से
सुने आँगन में खुशियाँ तुम लायी हो,
हमारे आँगन में चाँदनी बन कर छायी हो।
खिल-खिलाते रहना हमेशा इसी तरह,
यही है हम सब की कामना सदा" ॥

मिहिका

जन्म दिनांक 12 मार्च 2014

-- हार्दिक शुभकामनाऐं --

श्री मनोहर लाल जी शर्मा-श्रीमती सूर्यकांता शर्मा (दादा-दादी)
श्री प्रतीक शर्मा - श्रीमती वैशालिनी शर्मा (पापा-मम्मी)
फुफा-फुफी, चाचा-चाची, नाना-नानी, मामा, भाई-बहन,
समस्त मासी-मासाजी एवं समस्त मामा दादा--मामी दादी,
शर्मा एवं नागर परिवार की ओर से मिहिका को
जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं।

द्वितीय जन्मदिवस पर शुभाशीर्वाद

चि. राघव

सुपुत्र-वैभव-नेहा शर्मा

1 मार्च 2013

आशीर्वाद दाता:
परदादा-दादी : बाबुलाल-गोदावरीबाई शर्मा
बड़े दादाजी : दिनेश शर्मा
दादा-दादी : कृष्णकांत-संध्या शर्मा
परनाना-नानी : शंकरलालजी-बसन्तीबाई नागर, बाड़ोली
नानाजी : डॉ. एम.एल. शर्मा, सनावद, मामा-दुर्गेश शर्मा
बुआ-फुफाजी : प्रेमलता-प्रकाशजी दीक्षित (खण्डवा)
प्रभावती-श्यामबिहारीजी रावल (राजगढ़)
एवं समस्त शर्मा परिवार, देवास
मो. 94248 06807, 92294 44241

MPHIN/2007/19763 जय हाटकेश वाणी डाक पंजीयन RO/IDC/42/2013-15

द्वितीय पुण्य स्मरण

जन्म-
16 मार्च 1930

अवसान-
29 मार्च 2013

हमारे पूज्य एवं पद्मभूषण स्व.पं. भगवंतरावजी मंडलोई
(भूतपूर्व मुख्यमंत्री, म.प्र.) के सुपुत्र

श्री विनोदकुमारजी मंडलोई

(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

की पुण्य स्मृति पर

सादर श्रद्धांजलि

समस्त मण्डलोई परिवार, जोशी परिवार एवं समस्त नागर
समाज की ओर से पुण्य स्मरण

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा श्री दीपक प्रिंटर्स
20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यही से प्रकाशित
संपादक : सौ.संगीता शर्मा (56) मो. 99262-85002